Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक-7-8

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

4-11 शाबान 1445 हिज्री कमरी, 15-22 तब्लीग़ 1403 हिज्री शम्सी, 15-22 फ़रवरी 2024 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ
بِالۡہُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی
الدِّیۡنِ کُلِّہٖ ۙ وَلَوۡ کَرِہَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ

(तौबा : 33)

(अनुवाद) :

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीन के साथ भेजा ताकि वह उसे सभी धर्मों से श्रेष्ठ बना सकें, चाहे मुशरिक उसे कितना भी नापसंद करें।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

"तेरी बरकतों का प्रकाश पुनः प्रकट करने के लिए तुझ से ही और तेरी ही नस्ल में से एक व्यक्ति खड़ा किया जाएगा"

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकात का प्रकटन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश

ख़ुदा ने मुझे वादा दिया है कि तेरी बरकतों का प्रकाश पुनः प्रकट करने के लिए तुझ से ही और तेरी ही नस्ल में से एक व्यक्ति खड़ा किया जाएगा जिसमें मैं रूहुल क़ुदुस की बरकतें फूंकूंगा। वह पवित्र बातिन और ख़ुदा से अत्यन्त पवित्र संबंध रखने वाला होगा और مَظۡہَرُ الۡحَقِّ وَالۡعَلَاءِ होगा मानो ख़ुदा आकाश से उतरा।

(तोहफ़ा गोलड़वियः, रूहानी खाज़ायन भाग 17 पृष्ठ 181 उर्दू)

ख़ुदा तआला ने एक निश्चित और यक़ीनी भविष्यवाणी में मुझ पर प्रकट कर रखा है कि मेरी ही नस्ल से एक व्यक्ति पैदा होगा जिसकी कई बातों में मसीह से समरूपता होगी, वह आकाश से उतरेगा और पृथ्वी पर रहने वाले लोगों का मार्ग प्रशस्त कर देगा, वह बंदी बनाए गए लोगों को आज़ादी प्रदान करेगा तथा जो संदेहों की ज़ंज़ीरों में जकड़े हुए हैं उन्हें मुक्त कराएगा।

فرزند دلبند گرامی و ارجمند مظہر الحق والعلاء کانّ اللہ نزل من السماء

फ़र्ज़न्द दिलबन्दगिरामी अर्जुमन्द मज़्हरुलहक़्क़े वलअला कअन्नलाहा नज़ला मिनस्समाए
परन्तु यह विनीत एक विशेष भविष्यवाणी के अनुसार जो ख़ुदा तआला की पवित्र किताबों में पाई जाती है। मसीह मौऊद के नाम पर आया है।

(इज़ाला औहाम, रूहानी खाज़ायन भाग 3 पृष्ठ 180 उर्दू)

ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि मैं तेरी जमाअत के लिए तेरी ही सन्तान से एक व्यक्ति को क़ायम करूँगा और उसको अपनी निकटता एवं वाणी से विशिष्ट करूँगा तथा उसके माध्यम से हक़ (सच्चाई) उन्नति करेगा और बहुत से लोग सच्चाई को स्वीकार करेंगे। अतः उन दिनों की प्रतीक्षा करो और तुम्हें याद रहे कि हर एक की पहचान उसके समय पर होती है और समय से पूर्व सम्भव है कि वह उस साधारण व्यक्ति दिखाई दे या कुछ धोखा देने वाले विचारों के कारण आपत्तिजनक ठहरे जैसा कि समय से पूर्व एक कामिल (सम्पूर्ण) व्यक्ति बनने वाला भी गर्भ में मात्र एक वीर्य या लोथड़ा होता है।

(अल्-वसिय्यत, रूहानी खाज़ायन भाग 20 पृष्ठ 306 हाशिया उर्दू)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का महान स्थान और पद

सैय्यदना मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह तआला के महान और वैभवशाली भविष्यवाणी के अनुसार जन्म 12 जनवरी 1889 को समय के ईमाम मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलामहज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के घर में जन्म हुआ। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की खिलाफत के बारे में भविष्यवाणियाँ सदियों से होती आ रही हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में भविष्यवाणी की थी कि मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम का एक बेटे विशेष गुणों और महिमा से परिपूर्ण होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले और बाद के बुज़ुर्गों की भविष्यवाणियाँ भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में मिलती हैं। जब इन सभी भविष्यवाणियों को एक ही दृष्टिकोण से देखा जाता है, तो यह ज्ञात होता है कि मसीह मौऊद का वह बेटा निश्चित रूप से एक विशेष महानता और महिमा से परिपूर्ण होगा, लेकिन इस के विस्तार के ज्ञान का सही विवरण और मूल्यांकन सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उन भविष्यवाणियों से होता है जो अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को प्रदान फ़रमाई जो मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी के नमस से जमाअत में प्रसिद्ध है। मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी में 50 से अधिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है, लेकिन एक बात जो विशेष रूप से दिल और दिमाग को प्रभावित करती है वह है अल्लाह का यह कहना : "كَاَنَّ اللّٰہَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ" कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का आना एसा ही कि खुदा आकाश से नीचे आया हो यह सर्वशक्तिमान अल्लाह के महान समर्थन और सहायता का संकेत था। यह स्थिति रुकने और विचार करने योग्य है कि जिस व्यक्ति के आगमन को अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अपना आगमन घोषित किया वह किस गरिमा, प्रतिष्ठा और स्थिति का व्यक्ति होगा। निःसंदेह उनका अस्तित्व कोई साधारण प्राणी का अस्तित्व नहीं था,आप रज़ियल्लाहु अन्हो का वजूद कोई साधारण वजूद नहीं था। बल्कि आप उन विशेष लोगों में से थे जो सदियो में नहीं बल्कि हज़ारों वर्षों में कभी एक बार मानव पीढ़ियों में प्रकट होते हैं और जिन का प्रकाश केवल एक नस्ल को नहीं बल्कि बीसियों इंसानी पीढ़ियों को को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता रहता है।"

अल्लाह तआला की और से आप रज़ियल्लाहु अन्हो को كَاَنَّ اللّٰہَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ की श्रद्धांजलि इतनी महान है कि उससे अधिक उसे व्यक्त करना संभव नहीं है। यह सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से शीर्षक और संबोधन है, जिससे आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बहुत महान होने का पता चलता हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो बावन वर्षों तक ख़िलाफ़त के पद पर रहे, इस अवधि में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लाम अहमदियत की वह महान सेवा की और ऐसे उल्लेखनीय कार्य किए जो केवल एक पैगम्बर की ही विशेषता होते हैं। हालाँकि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपको पैग़म्बर नहीं कहा, लेकिन आप अल्लाह से उसने नबियों में से एक के रूप की तरह ही कार्य लिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो स्वयं फ़रमाते हैं कि मैं नबी नहीं हूँ, लेकिन मेरी आवाज़ सर्वशक्तिमान ख़ुदा की आवाज़ है और मेस्थान खिलाफत और नबी के बीच का स्थान है। 1936 ई. की शूरा के अवसर पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया :

"एक खिलाफ़त तो यह होती है कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा लोगों से एक ख़लीफ़ा चुनवाता है और फिर उसे स्वीकार कर लेता है, लेकिन यह उस तरह की ख़िलाफ़त नहीं। अर्थात, मैं इसलिए ख़लीफ़ा नहीं कि प्रथम ख़लीफ़ा के देहांत के दूसरे दिन अहमदिया समुदाय के लोगों ने इकट्ठे होकर मेरी खिलाफत पर सहमत हुए, बल्कि इसलिए भी कि मैं खलीफा हूं क्योंकि पहले खलीफ़ा की खिलाफ़त से पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सर्वशक्तिमान ख़ुदा के इल्हाम से फ़रमाया था कि मैं खलीफा बनूंगा। अतः मैं खलीफ़ा नहीं, बल्कि जिस का वादा किया गया था वह खलीफ़ा हूं। मैं नबी नहीं, लेकिन मेरी आवाज़ सर्वशक्तिमान ख़ुदा की आवाज़ है कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से इसके बारे में सूचित किया था। इसलिए इस खिलाफत का स्थान खिलाफ़त और नबी के बीच स्थान है और यह मौका ऐसा नहीं है कि अहमदिया समुदाय इसे व्यर्थ जाने दे और फिर सर्वशक्तिमान ख़ुदा के समक्ष भेंट पाने वाला हो जाए। जिस प्रकार यह सत्य है कि पैग़म्बर हर दिन नहीं आते उसी प्रकार यह भी सत्य है कि जिस का वादा किया हो वह खलीफ़ा भी प्रतिदिन नहीं आते। नीचे हम कुछ अन्य इरशाद प्रस्तुत करते हैं जिन से हम सैय्यदना हज़रत मुस्लेह रज़ियल्लाहु अन्हो के महान स्थिति और उनकी महान उपलब्धियों और उनके ज्ञान और अल्लाह के साथ संबंध का पता लगाता है, और जिससे यह पता चलेगा कि अल्लाह के शेर का बेटा भी आप अलैहिस्सलाम का मसील भी आप अलैहिस्सलाम की तरह इस्लाम का एक जरबदस्त पहलवान था जिसके सामने किसी को भी अपनी जीभ खोलने का साहस नहीं था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

मैं मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बाद पूरी दुनिया को चुनौती देता हूं कि अगर कोई व्यक्ति इस्लाम के खिलाफ अपने धर्म की सच्चाई पर विश्वास करता है, तो आओ और हमारे साथ मुकाबला करो। मेरे अनुभव से यह साबित हो चुका है कि इस्लाम एक जीवित धर्म है और कोई भी धर्म इसके समक्ष खड़ा नहीं हो सकता क्योंकि सर्वशक्तिमान ख़ुदा हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और स्वीकार करता है और स्थितियां बिल्कुल विपरीत होती हैं और यह इस्लाम के जीवित होने का बड़ा संकेत है। यदि किसी को संदेह हो तो आकर प्रयास करें। हाथ कंगन की आरसी क्या। यदि ऐसे लोग हैं जिन्हे विश्वास है कि हमारा धर्म जीवित है, तो आएं और उनके साथ ख़ुदा के संबंध और प्रेम का प्रमाण दें। यदि ख़ुदा को उनसे प्यार होगा, तो वह निश्चित रूप से प्रतियोगिता में उनकी मदद करेगा और उनका समर्थन करेगा... मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि वे प्रतियोगिता में आएं और साबित करें कि ख़ुदा किस की मदद करता है और किसकी प्रार्थना सुनता है। आप लोगों को इस प्रतियोगिता में अपनी तरफ से लोगों को खड़ा करना चाहिए लेकिन यह हर किसी के लिए नहीं है कि वे खड़े होकर कहें कि मैं मुकाबला करता हूं बल्कि प्रतियोगिता में उन्हें आना चाहिए जो किसी भी धर्म या संप्रदाय के प्रतिनिधि हों। उस समय दुनिया को पता चल जाएगा कि ख़ुदा किसकी प्रार्थना स्वीकार करता है। मैं दावे से कहता हूं हमारी दुआ कबूल होगी। दुःख की बात है कि विभिन्न धर्मों के बड़े-बड़े लोग इस प्रतियोगिता में आने से डरते हैं। अगर वे प्रतिस्पर्धा के लिए उतरेंगे तो उन्हें इस तरह हराया जाएगा कि उनमें प्रतिस्पर्धा करने की हिम्मत ही नहीं बचेगी।

(जिंदः मज़हब, अनवारुल ऊलूम भाग 3 पृष्ठ 612)

★ ★ ★

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	तेरी बरकतों का प्रकाश पुनः प्रकट करने के लिए तुझ से ही और तेरी ही नस्ल में से एक व्यक्ति खड़ा किया जाएगा	1
2	हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का महान स्थान और पद	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 जनवरी 2024 ई.	3
4	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 जनवरी 2024 ई.	9
5	मुस्लेह मौऊद का नाम फ़ज़्ल-ए-उम्र क्यों रखा गया?	15
6	हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की शान	17
7	क़ब्रों पर फूल चढ़ाना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का एक इरशाद और इस इरशाद की हिक्मत	18
8	अदालत की न्यायिक जांच में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु का बयान	19
9	मुसलेह मौऊद के विषय में भविष्यवाणी	24

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला के निकट क़ुर्बानी का मयार भावना और निसबत का है, मात्रा का नहीं

वक़्फ़-ए-जदीद के छयासठवें वर्ष के दौरान विशव्यापी जमाअत अहमदिया को एक करोड़ 29 लाख 41 हज़ार पाऊंड की माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। यह वसूली पिछले वर्ष के मुक़ाबले में 7 लाख 18 हज़ार से अधिक है

इस्लाम की शिक्षा को फैलाने के लिए क़लम का जिहाद और तब्लीग़ का जिहाद जारी है और इस जिहाद के जारी रखने के लिए भी जान, माल, वक़्त, इज़्ज़त की क़ुर्बानी की इसी प्रकार आवश्यकता है जिस तरह इस्लाम के आरंभ में क़ुर्बानियों की आवश्यकता थी

दीन के प्रचार के लिए क़ुर्बानियां ही अल्लाह तआला का सानिध्य पाने का माध्यम और सफ़ल तिजारत हैं

आजकल यह माली जिहाद ही है जो नफ़्स के जिहाद का भी माध्यम बनता है। इन्सान अपनी बहुत सी इच्छाओं को छोड़ कर दीन की तरक़्क़ी की ख़ातिर क़ुर्बानियां देता है तो यह आधा जिहाद है

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदी ही हैं जो दीन की ख़ातिर माली क़ुर्बानी करने की एहमियत को समझते हैं। ये शबनम की तरह थोड़ी-थोड़ी रकमें भी देते हैं तो अल्लाह तआला उनको बे-इंतिहा फल लगाता है

वे लोग जो पुराने बुज़ुर्गों की और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की औलाद हैं हमेशा इस बात को सामने रखें कि आज अगर उन पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल हैं तो उन लोगों की क़ुर्बानियों के कारण हैं

कभी यह बात किसी कमज़ोर अहमदी के दिल में भी नहीं आनी चाहिए कि अल्लाह तआला नेक नियती से की गई क़ुर्बानी को नवाज़ता नहीं। अल्लाह तआला के खज़ाने असीमित हैं। उसको हमारे कुछ पैसों की ज़रूरत नहीं है। यह क़ुर्बानियां जो अल्लाह तआला मांगता है यह तो वह हमें मज़ीद फ़ज़्लों का वारिस बनाने के लिए अवसर प्रदान फ़रमाता है

आग से बचोगे चाहे आधी खजूर ही ख़र्च करने की ताकत हो (अल्-हदीस)

कंजूसी से बचोगे यह कंजूसी ही है जिसने पहली क़ौमों को हलाक किया था (अल्-हदीस)

वक़्फ़-ए-जदीद के छयासठवें (66) वर्ष के दौरान अफ़राद-ए-जमाअत की तरफ़ से प्रस्तुत की जाने वाली माली क़ुर्बानियों का वर्णन और सतासठवें (67) वर्ष का ऐलान

विभिन्न देशों से संबंध रखने वाले मुख़लिस अहमदियों, विशेषता नौ-मुबाईन की माली क़ुर्बानियों के ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात का प्रभावी वर्णन

फिलिस्तीन के मासूम मुस्लमानों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 जनवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۱۱﴾ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾

अल्-सफ़् आयत : 11 से 13

इन आयात का अनुवाद है कि हे लोगो जो ईमान लाए हो क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत पर अवगत करूँ जो तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से निजात देगी? तुम जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाते हो और अल्लाह के रास्ते में अपने अम्वाल और अपनी जानों के साथ जिहाद करते हो, यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है अगर तुम इलम रखते हो। वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल कर देगा जिनके दामन में नहरें बेहती हैं और ऐसे पाकीज़ा घरों में भी जो हमेशा रहने वाली जन्नतों में हैं। यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जैसा कि एक जगह फ़रमाया कि मैं भी मसीह मौऊद के क़दम पर भेजा गया हूँ और जैसा कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम ने रहम और माफ़ी की तालीम दी थी मैं भी रहम और बख़्शिश और सुलह और आश्ती की इस्लामी तालीम के साथ मसीह मुहम्मदी के तौर पर भेजा गया हूँ और मज़हबी जंगों के ख़ातमा के लिए आया हूँ और यह ज़माना अब क़ुरआन-ए-करीम की तालीम की इशाअत का ज़माना है। (उद्धृत अर्बईन, रुहानी खज़ायन भाग 17 पृष्ठ 344)

तलवार के जिहाद का अब ज़माना नहीं है लेकिन इस्लामी तालीम को फैलाने के लिए क़लम का जिहाद और तब्लीग़ का जिहाद जारी है और इस जिहाद के जारी रखने के लिए भी जान, माल, वक़्त, इज़्ज़त की क़ुर्बानी की इसी तरह आवश्यकता है जिस तरह इस्लाम के इबतेदा में क़ुर्बानियों की आवश्यकता थी।

यह ज़माना जबकि मआशी बरतरी हासिल करने के लिए दुनिया में इंतेहाई कोशिश हो रही है। दीन को तो लोग भूल बैठे हैं, दुनिया की तरफ़ रग़बत ज़्यादा है। तिजारतों में बरतरी और दुनियावी आसाइशों के हुसूल के लिए दुनिया अपनी तवज्जा इंतेहा तक पहुंचाने की कोशिश कर रही ऐसे में दीन की इशाअत के लिए क़ुर्बानियां ही अल्लाह तआला का क़ुरब पाने का माध्यम और कामयाब तिजारत हैं।

जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया। यही उन आयात में अल्लाह तआला ने वर्णन फ़रमाया है जो मैंने तिलावत की हैं। अतः यह ज़माना जो मसीह मौऊद का ज़माना है इस ज़माने में खासतौर पर माली जिहाद एक अहम काम है और इस से फिर नफ़्स की क़ुर्बानी की भी तहरीस पैदा होती है और अल्लाह तआला की रज़ा और क़ुरब भी हासिल होता है।

अल्लाह तआला ने माली क़ुर्बानी की तरफ़ क़ुरआन-ए-करीम में कई जगह तवज्जा दिलाई है। एक जगह फ़रमाया कि :

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

(अल् हदीद :11)

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह तआला की राह में ख़र्च नहीं करते। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सब कुछ तो अल्लाह तआला की तरफ़ से आता है। वे तुम्हें देता है और फिर प्रतिफल के लिए तुम्हें यह कहता है कि इस के रास्ते में ख़र्च करो। अतः अगर ईमान है, अगर अल्लाह तआला पर यक़ीन है तो फिर उसका तक़ाज़ा यही है कि इस के रास्ते में क़ुर्बानियां करो।

फिर एक जगह सचेत फ़रमाते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है وَ اَنۡفِقُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَ لَا تُلۡقُوۡا بِاَیۡدِیۡکُمۡ اِلَی التَّہۡلُکَۃِ (अल् बकरः 196) और अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों से अपने आपको हलाकत में न डालो। अतः अल्लाह तआला की राह में इस के दिए हुए माल से ख़र्च न करने वाले अपने आपको हलाकत में डालते हैं।

आजकल यह माली जिहाद ही है जो नफ़्स के जिहाद का भी माध्यम बनता है। इन्सान अपनी बहुत सी इच्छाओं को पीछे डाल कर दीन की तरक़्क़ी की ख़ातिर क़ुर्बानियां देता है तो यह आधा जिहाद है।

जो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करते हुए उसे और उस की नसल को बेशुमार फ़ज़्लों का वारिस बना देता है। अल्लाह तआला किसी का उधार नहीं रखता। अल्लाह तआला ने ऐसी तिजारत की ख़बर दी है जो दुनिया और आख़िरत के फ़ायदों पर आधारित है और अज़ाब से बचाने वाली तिजारत है। दुनियावी तिजारतें तो सिर्फ दुनियावी लाभों के लिए हैं लेकिन अल्लाह तआला से की हुई तिजारत दुनिया-और-आख़िरत दोनों के इनामात का मुस्तहिक़ बनाती है। जैसा कि मैं ने कहा अल्लाह तआला किसी का उधार नहीं रखता। नेक नीयती से उस की राह में की गई क़ुर्बानी को वह कई गुना बढ़ा कर देता है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में एक जगह फ़रमाता है कि

وَ مَثَلُ الَّذِیۡنَ یُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَہُمُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰہِ وَ تَثۡبِیۡتًا مِّنۡ اَنۡفُسِہِمۡ کَمَثَلِ جَنَّۃٍۭ بِرَبۡوَۃٍ اَصَابَہَا وَابِلٌ فَاٰتَتۡ اُکُلَہَا ضِعۡفَیۡنِ ۚ فَاِنۡ لَّمۡ یُصِبۡہَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَ اللّٰہُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِیۡرٌ ۔

(अल् बकरः : 266) और उन लोगों की मिसाल जो अपने अम्वाल अल्लाह की रज़ा चाहते हुए और अपने नफ़ूस में से कुछ को मज़बूती देने के लिए ख़र्च करते हैं ऐसे बाग़ की सी है जो ऊंची जगह पर वाक़्य हो और उसे तेज़ बारिश पहुंचे तो वह बढ़ चढ़ कर अपना फल लाए, और अगर उसे तेज़ बारिश न पहुंचे तो शबनम ही बहुत है। और अल्लाह इस पर जो तुम करते हो गहरी नज़र रखने वाला है।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदी ही हैं जो दीन की ख़ातिर माली क़ुर्बानी करने की एहमियत को समझते हैं। यह शबनम की तरह थोड़ी-थोड़ी रकमें भी देते हैं तो अल्लाह तआला उनको बे-इंतिहा फल लगाता है।

जमाअती प्रगती इसकी गवाह हैं। ग़रीब लोग हैं जो मामूली सी क़ुर्बानी करते हैं और फिर अल्लाह तआला बे-इंतिहा फल लगाता है। उदाहरणतः देखा गया है कि खासतौर पर ग़रीब अहमदी और थोड़े माध्यम रखने वाले अहमदी ज़्यादा क़ुर्बानी करते हैं। इसकी बहुत सी मिसालें हैं। मैं समय समय पर वर्णन करता भी रहता हूँ। आज भी वर्णन करूँगा।

यए मिसालें ज़्यादा आसूदा हाल अहमदियों को इस तरफ़ तवज्जा दिलाने वाली होनी चाहिऐं कि वे देखें कि उनके मयार क्या हैं। ग़रीब अहमदी तो जब अपनी माली क़ुर्बानी करता है तो वह अपने नफ़्स का और अपनी जान का जिहाद कर रहा होता है।

अफ़्रीक़ा में क़ुर्बानी करने वाले बेशुमार ऐसे अहमदी हैं, पाकिस्तान में ऐसे हैं, भारत में भी ऐसे हैं जो अपनी रोटी क़ुर्बान कर के, भूखा रह कर माली क़ुर्बानी करते हैं। अपनी या अपने बच्चों की बीमारी की सूरत में दवाईयों पर ख़र्च करने की बजाय चंदे की अदायगी को तर्जीह देते हैं और फिर अल्लाह तआला उनकी इस क़ुर्बानी को बग़ैर नवाज़े नहीं छोड़ता बल्कि बसा-औक़ात वह इतनी जल्दी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बन जाते हैं कि हैरत होती है और यह बात उनके लिए ईमान में बढ़ोतरी का माध्यम बनती है। अतः कभी यह बात किसी कमज़ोर अहमदी के दिल में भी नहीं आनी चाहिए कि अल्लाह तआला नेक नीयती से की गई क़ुर्बानी को नवाज़ता नहीं। अल्लाह तआला के ख़ज़ाने असीमित हैं। इस को हमारे चंद पैसों की आवश्यकता नहीं है। यह क़ुर्बानियां जो अल्लाह तआला मांगता है यह तो वे हमें मज़ीद फ़ज़्लों का वारिस बनाने के लिए अवसर उपलब्ध फ़रमाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत में ये क़ुर्बानी की रूह ऐसी पैदा की है कि आप के ज़माने से लेकर आज तक ये नज़्ज़ारे हमें नज़र आते हैं कि अफ़राद-ए-जमाअत अपनी जरूरतों को पीछे डाल कर जमाती ज़रूरीयात के लिए अपनी क़ुर्बानियां पेश करते हैं और यही तरक़्क़ी करने वाली क़ौमों का तरीक़ा है और इसी से अल्लाह तआला फिर फ़ज़्ल भी फ़रमाता है। ये मानने वाले इस बात का इदराक रखने वाले हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि

आग से बचोगे ख़ाह आधी खजूर ही ख़र्च करने की इस्तिताअत हो।

(सही अल् बुख़ारी किताब الزكاة باب اتقوا النار ولو بشق تمرة हदीस : 1417)

निसन्देह आधी खजूर देने की ही तुम्हारी तौफ़ीक़ है तो दो जिस से आग से बचोगे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :

कंजूसी से बचोगे। यह कंजूसी ही है जिसने पहली क़ौमों को हलाक किया था।

(सुंन अबी दाऊद किताब الزكاة باب في الشح हदीस : 1698)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का तो यह हाल था कि कहते हैं कि जब भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की माली तहरीक होती थी हम बाज़ार जाते थे, मज़दूरी करते थे और थोड़ी सी भी कोई मज़दूरी मिलती थी तो वह कमाई ला कर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश कर थे।

(सही अल् बुख़ारी किताब الزكاة باب اتقوا النار ولو بشق تمرة हदीस : 1416)

ऐसी ही क़ुर्बानी करने वाले अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ को भी अता फ़रमाए हैं। उनकी बेशुमार मिसालें हैं। तारीख़ में ऐसे भाईयों का वर्णन मिलता है जिन्हों ने ऐसी क़ुर्बानियां कीं कि हैरत होती है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी उनका वर्णन फ़रमाया है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मैं अपनी जमाअत के मुहब्बत और इख़लास पर ताज्जुब करता हूँ कि उनमें से निहायत ही कम धन वाले जैसे मियां जमालुद्दीन और ख़ैरुद्दीनऔ र इमामुद्दीन कश्मीरी मेरे गांव से क़रीब रहने वाले हैं वे तीनों ग़रीब भाई भी जो शायद तीन आना या चार आना रोज़ मज़दूरी करते हैं सरगर्मी से माहवारी चंदा में शरीक हैं। उनके दोस्त मियां अब्दुल अज़ीज़ पटवारी के इख़लास से भी मुझे ताज्जुब है कि बावजूद कम धन के एक दिन सौ रुपया दे गया कि मैं चाहता हूँ कि ख़ुदा की राह में ख़र्च हो जाए। वे सौ रुपया शायद इस ग़रीब ने कई बरसों में जमा किया होगा परंतु लिल्लाहि जोश ने ख़ुदा की रज़ा काजोश दिलाया।"

(ज़मीमा रिसाला अंजाम-ए-आथम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 313-314 बक़ीया हाशिया)

अतः जमाअत की तारीख़ में इन क़ुर्बानी करने वालों के नाम महफ़ूज़ हैं। ये लोग जो ख़ुदा की रज़ा हासिल करने का एक ख़ास जोश रखते थे ख़ाह उन्होंने मामूली क़ुर्बानियां कीं या ज़्यादा, उनका नाम मसीह मौऊद के मिशन के मददगारों में शामिल हो गया, तारीख़ ने महफ़ूज़ कर लिया। एक और बुज़ुर्ग का भी वर्णन कर दूं। ये माज़ूर और ग़रीब थे उनका नाम हाफ़िज़ मुईनुद्दीन साहिब था। उनकी तबीयत में बड़ा जोश था कि वह सिल्सिला की ख़िदमत करें, उसके लिए क़ुर्बानी करें हालाँकि बड़ी तंगी में गुज़ारा करते थे और बाव्जाह माज़ूरी के उनका कोई काम भी नहीं था। लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पुराना ख़ादिम समझ कर कुछ तोहफ़ा दे दिया करते थे लेकिन हाफ़िज़ साहिब का यह उसूल था कि वह इस तरह की रक़म जो तोहफ़े के तौर पर उन्हें मिलती थी कभी अपनी ज़ाती ज़रूरियात पर ख़र्च नहीं करते थे बल्कि उसको सिल्सिला की ख़िदमत के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश कर दिया करते थे और कभी कोई ऐसी तहरीक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ से नहीं हुई जिसमें उन्होंने हिस्सा न लिया हो। चाहे वह एक पैसा डाल कर हिस्सा लेते लेकिन हिस्सा ज़रूर लेते। अब एक पैसा उस ज़माने में एक penny के बराबर आप समझ लें लेकिन बहरहाल हिस्सा लेते। उनके हालात के मुताबिक़ यह मामूली क़ुर्बानी भी ग़ैरमामूली क़ुर्बानी थी और कई दफ़ा यह भी होता था कि हाफ़िज़ साहिब भूखे रह कर भी यह ख़िदमत किया करते थे।

(उद्धृत अस्हाब-ए-अहमद भाग 13 पृष्ठ 293)

यह लोग थे जो ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने के लिए, सब कुछ क़ुर्बान करने के लिए हर समय तैयार रहते थे। इन लोगों की क़ुर्बानियों को भी अल्लाह तआला ने प्यार की नज़र से देखा और वे फल लगाए जो आज उनकी नसलें भी खा रही हैं। अतः वे लोग जो इन पुराने बुज़ुर्गों की और सहाबा की औलाद हैं हमेशा इस बात को सामने रखें कि आज अगर उन पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल हैं तो उन लोगों की क़ुर्बानियों की वजह से हैं।

जिनको अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई है उन्हें अपने जायज़े लेने चाहिऐं कि क्या सिलसिला की ख़िदमत के लिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए उनके क़ुर्बानियों के मयार इस सोच के साथ बढ़ रहे हैं जो उनके बुज़ुर्गों की सोचें थीं। आज भी जमात अहमदिया में ग़रीबों की अधिकता है जो क़ुर्बानियों के आला मयार क़ायम करती है। अतः जो जमाअत में कमाई के बुलंद मयार पर हैं उन्हें अपने जायज़े लेने चाहिऐं। अल्लाह तआला और उस का रसूल इख़लास से की गई क़ुर्बानी की क़दर करते जैसा कि एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। एक दिरहम एक लाख दिरहम के मुक़ाबले में आज सबक़त ले गया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्होने अर्ज़ किया कि किस तरह? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक शख़्स के पास दो दिरहम

थे, उसने एक दिरहम की क़ुर्बानी कर दी और एक दूसरे शख़्स के पास बेशुमार दौलत और जायदाद थी, इस में से उसने एक लाख दिरहम की की।

(सुंन अल् निसाई किताब الزكاة باب جهد المقل हदीस : 2528)

बज़ाहिर यह एक लाख दिरहम बहुत बड़ी रक़म है लेकिन इस ग़रीब की क़ुर्बानी के जज़्बे के मुक़ाबले में इस एक लाख दिरहम की अल्लाह तआला के निकट कोई एहमियत नहीं थी। अतः अल्लाह तआला के निकट क़ुर्बानी का मयार जज़्बे और निसबत का है, मिक़्दार का नहीं। जो लोग कहते हैं कि जमात ग़रीबों से चंदे लेती है। कुछ लोग मुझे कई दफ़ा ऐसे भी लिख देते हैं। यह सही नहीं है। ये लोग असल में दिल में भय रखते हैं। उनकी अपनी दुनियावी प्राथमिकता हैं और अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए दूसरों का नाम लेते हैं।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत की अक्सरियत आज ऐसी है कि क़ुर्बानी करने वाली है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ुर्बानियों को सामने रखते हुए ख़ुद भी क़ुर्बानी करना चाहते हैं और बग़ैर कहे करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने के मुख़्लेसीन की क़ुर्बानियों पर अमल करते हुए आज भी ऐसी मिसालें हैं जो हमें नज़र आती हैं। जैसा कि मैंने कहा रिपोर्टस में वर्णन होता है। मैं वर्णन करता भी रहता हूँ। हैरत-अंगेज़ तौर पर माली क़ुर्बानी करते हैं। अफ़्रीक़ा के दूर दराज़ देशों में रहने वाले मुख़्लेसीन जो दुनिया में इशाअत-ए-इस्लाम और दीन के ग़लबा के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मददगार और मुआविन बनना चाहते हैं। ये लोग हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इरशाद को अपने सामने रखकर क़ुर्बानियां करते हैं जिसमें आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि:

"तुम्हारे लिए मुम्किन नहीं है कि माल से भी मुहब्बत करो और ख़ुदा से भी। केवल एक से मुहब्बत कर सकते हो। अतः ख़ुश-क़िस्मत है वह शख़्स है कि ख़ुदा से मुहब्बत करे। और अगर कोई तुम में से ख़ुदा से मुहब्बत कर के उस की राह में माल ख़र्च करेगा तो मैं यक़ीन रखता हूँ कि उसके माल में भी दूसरों की निसबत ज़्यादा बरकत दी जाएगी क्योंकि माल ख़ुद बख़ुद नहीं आता बल्कि ख़ुदा के इरादा से आता है। अतः जो शख़्स ख़ुदा के लिए कुछ हिस्सा माल का छोड़ता है वह ज़रूर उसे पाएगा।"

(मजमूआ इश्तिहारात भाग 3 पृष्ठ 497)

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इरशाद है। आज भी हम उस के नज़्ज़ारे देखते हैं कि किस तरह लोगों ने ख़ुदा की राह में दिया और किस तरह फ़ौरी ख़ुदा ने उन्हें लौटा दिया। एक ही जगह, एक ही माहौल में काम करने वाले हैं लेकिन अहमदी के माल में अल्लाह तआला बरकत अता फ़रमाता है और दूसरे को वह बरकत नहीं मिलती और ये बातें फिर उनके ईमान में इज़ाफ़े का बायस बनती हैं। जैसा कि मैं ने कहा था इन मुख़्लेसीन की चंद मिसालें पेश करता हूँ।

रीपब्लिक सेंट्रल अफ़्रीका में वूदम बाला (Vdambala) एक जगह है। वहां एक नौ मुबाईन ईसा साहिब हैं। कहते हैं मैंने नौ महीने पहले बैअत की थी और 2016 ई. से मेरे पास एक प्लाट था जो मैंने घर बनाने के लिए ख़रीदा था लेकिन रक़म नहीं इकट्ठी हो रही थी कि घर बना सकूँ। जमाअत में मैं शामिल हुआ हूँ। चंदे की एहमियत और बरकात के बारे में सुनता रहा। जो भी ख़ुदा की राह में थोड़ी सी क़ुर्बानी कर सकता था करता था और यही सुनता था कि अल्लाह तआला इस से काम आसान करता है और अम्वाल-ओ-नफ़ूस में तरक़्क़ी भी देता है। बहरहाल कहते हैं मेरे दिल में ख़्याल आया कि जब हम ग़ैर अहमदी थे तो हम ने एक दफ़ा भी ख़ुदा की राह में चंदा नहीं दिया और न ही इस बारे में हमें किसी ने तहरीक की तो कहते हैं अब तहरीक हुई। नौ-मुबाईन से साधारणतः तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद के चंदों के बारे में कहा जाता है। मुझे कहा गया तो मैंने वक़्फ़-ए-जदीद में पंद्रह सौ सीफा अदा कर दिया और ख़ुदा तआला ने इस का अज्र इस तरह दिया कि एक दोस्त ने घर के लिए दस हज़ार ईंटें बनाने की पेशकश कर दी और फिर ईंटें बनवा भी दीं। वहां ख़ुद बनाई जाती हैं। सीमेंट से बलॉक बनाए जाते हैं। इस तरह घर की तामीर शुरू हो गई जिसका कई साल से इंतेज़ार था और फिर घर मुकम्मल भी हो गया। ये कहते हैं कि मुझे यक़ीन है अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हुआ है अन्यथा मेरे अंदर तो यह ताक़त नहीं थी और मेरे लिए संभव था।

कज़ाकिस्तान साबिक़ा रूसी देशों में से एक स्टेट है। वहां एक दोस्त दाइरीन साहिब कहते हैं। चंद दिन पूर्व मुझे मुअल्लिम साहिब का पैग़ाम मिला कि इस साल आपकी पत्नी का वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा बहुत कम है और लिस्ट के आख़िर में है। अगर संभव हो तो कम से कम पाँच हज़ार तंगे (Tenge) अदा कर दें। मैंने सोचा कि इस वक़्त मेरी पत्नी उम्मीद से है। इस का ऑप्रेशन भी होना है बेहतर है कि मैं पंद्रह हज़ार तंगे अदा कर दूं। जैसे ही मैंने रक़म भेजी। तक़रीबन बीस मिनट के बाद मुझे स्कूल की तरफ़ से सूचना मिली कि चूँकि में एक यतीम की कफ़ालत भी करता हूँ और मेरे बच्चे भी ज़्यादा हैं इसलिए वहां की हुकूमत ने मुझे एक लाख तंगे अदा किए जाने का फ़ैसला किया है। इस तरह मेरे लिए तो यह ईमान का माध्यम बना कि अल्लाह तआला ने फ़ौरी तौर पर मुझे लौटा दिया।

फिर किर्गीज़स्तान एक और स्टेट है। वहां के एक दोस्त अर्मित साहिब हैं। गोल्ड माइन में काम करते हैं और छः महीने के बाद चंदा अदा करते रहते थे। जब पिछले वर्ष उन्होंने दूसरी शुशमाही का चंदा अदा किया तो शरह से ज़ायद छः हज़ार किर्गीज़ सिम (Kyrgyzstani som) उनकी जो करंसी है वह इस में अदा कर दी। पूछने पर कहने लगे कि चूँकि पूरी दुनियामें महंगाई हुई है जिसकी वजह से जमाअती अख़राजात में भी ज़्यादती हुई होगी इसलिए मैं शरह से बढ़ा कर अपना चंदा अदा कर रहा हूँ। इस साल भी उन्होंने जब पहली शुशमाही का चंदा अदा किया तो मज़ीद छः हज़ार सुम बढ़ा कर चंदा अदा किया। इस तरह तक़रीबन उन्होंने चालीस फ़ीसद से ज़ायद चंदा अदा कर दिया। अब यह अल्लाह तआला की मर्ज़ी और इस की रज़ा चाहने की मिसालें हैं। किसी ने उनको तहरीक नहीं की लेकिन जरूरतों के पेश-ए-नज़र ख़ुद ही उन्होंने कोशिश की कि मैं बढ़ चढ़ कर अदा करूँ।

लोग कहते हैं क्यों मांगते हो? हम नहीं मांगते हम तो अल्लाह तआला का पैग़ाम आगे पहुंचाते हैं कि अल्लाह की राह में क़ुर्बानियां करो। फ़िलपाइन एक और मुल्क, दूर दराज़ का इलाक़ा, वहां के मुबल्लिग कहते हैं कि ख़ुद्दामुल अहमदिया के सदर ने वर्णन किया कि मैंने वादा के मुताबिक़ वक़्फ़-ए-जदीद की अदायगी तो कर दी थी लेकिन माली साल ख़त्म हो रहा था। दिल में ख़ाहिश पैदा हुई कि वादे से बढ़कर अदायगी करनी चाहिए। इसलिए मैंने अपने मरहूम वालिद, वालिदा और सुसर के नाम पर भी एक हज़ार पेसू (peso) चंदा वक़्फ़ जदीद की अदायगी कर दी। इन दिनों में मुक़ामी म्यूंसिपल्टी के दफ़्तर में रिस्क रैड किशन मैनेजर (risk reduction manager) के तौर पर कॉन्ट्रैक्ट पर काम कर रहा था। नए साल की छुट्टियों के बाद जैसे ही काम पर गया तो स्थानिय मेयर ने मेरी नौकरी पक्की कर दी और मेरी तनख़्वाह भी दुगुनी कर दी जबकि में पिछले चार साल से कंट्रैक्ट पर काम कर रहा था और बार-बार दरख़ास्त के बावजूद भी मेरी नौकरी पक्की नहीं होती थी। अब कहते हैं मुझे यही यक़ीन है कि यह जो क़ुर्बानी मैंने की है उसी का समर है और यक़ीनन ख़ुदा तआला हमारे वहम-ओ-गुमान से भी बढ़कर देने वाला है।

कैमरो अफ़्रीक़ा का एक देश है। वहां के मुरब्बी कहते हैं कि एक नौजवान यूसुफ़ साहिब हैं। उन्होंने अहमदियत क़बूल की है। ग़रीब आदमी हैं। मोटर साईकल पर सवारियां उठाते हैं। मुहम्मद यूसुफ़ साहिब कहते हैं कि जब से मैंने अहमदियत क़बूल की है और मुरब्बी के कहने पर थोड़ा बहुत चंदा देना शुरू किया है मेरे हालात बदलने शुरू हो गए हैं। मेरा दिल बहुत संतुष्ट है और मेरी ज़िंदगी में चीज़ें आसान हो गई हैं।

असल चीज़ दिल का संतोष है कहते हैं कुछ दिनों से मेरा दिल भी संतुष्ट है। मैंने अब इरादा किया है कि सिर्फ वक़्फ़-ए-जदीद नहीं बल्कि समस्त ज़रूरी चंदों में हिस्सा लूँगा क्योंकि इस में मेरे लिए और मेरी फ़ैमिली के लिए बरकत है। यह इमाम महदी अलैहिस्सलाम की बरकत है कि मुझे रुहानी सुकून मिला है और मैं बहुत ख़ुश और संतुष्ट हूँ। इस तरह अल्लाह तआला मददगार पैदा करता है

तनज़ानिया मशरिक़ी अफ़्रीक़ा का एक मुलक है। (Ruvuma) रीजन के एक नौजवान मिलावे साहिब हैं। कहते हैं मेरी उम्र सत्ताईस वर्ष है। मैंने चंदे की बहुत बरकात देखी हैं। खेती बाड़ी करता हूँ। कहते हैं इस वर्ष वक़्फ़ जदीद के चंदे की अदायगी करने की नीयत से मैंने अपनी फ़सल मुताल्लिक़ा इदारे में जल्दी जमा करा दी और जो फ़सल हुई उसको हुकूमत को बेच दिया। कहते हैं अगर मैं कुछ दिन और इंतेज़ार करता तो मुम्किन था कि मेरी फ़सल की ज़्यादा क़ीमत मिल जाती लेकिन मैं चंदा न अदा कर सकता। वक़्त गुज़र जाना था। बहरहाल कहते हैं कि मैंने जब इदारे से राबिता किया तो इन दिनों किसानों को जो फ़सल की क़ीमत मिल रही थी इस से मुझे ज़्यादा क़ीमत मिल गई जिससे मैंने चंदा वक़्फ़ जदीद अदा कर दिया। इस इदारे ने कहा कि लोग अपनी फ़सल रोक लेते हैं ताकि उन्हें ज़्यादा क़ीमत मिले। तुम्हारी ईमानदारी का इनाम मिला है। कहते हैं कि मैं समझता हूँ कि अल्लाह तआला ने मेरी नीयत का फल दिया है ताकि मैं बाआसानी उसकी राह में क़ुर्बानी कर सकूँ।

किर्गीज़स्तान से एक दोस्त हैं (Rozamamat) साहिब। चंदा वक़्फ़-ए-जदीद के बारे में ही कहते हैं कि यह बहुत एहमियत का हामिल है और इस से मेरा परिचय भी बहुत दिलचस्प है। मुझे याद है कि जब मैं जमाअत-ए-अहमदिया से परिचित हुआ तो मैंने मुबल्लिग़ से पूछा कि जमाअत के सारे अख़राजात कौन अदा करता है? उन्होंने मुझे तफ़सील बताई कि जमाअत के क्या काम हैं। ख़िलाफ़त का निज़ाम है। फिर मुख़्तलिफ़ तहरीकात हैं। वक़्फ़-ए-जदीद और दूसरी माली क़ुर्बानियां हैं। उनके बारे में बताया। तो कहते हैं इस से पहले मैंने इस किस्म के माली निज़ाम के बारे में न कभी

देखा था न सुना था। मैंने पहली बार निज़ाम की ये बातें सुनी थीं। फिर मैं ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के दौर में बैअत करने के बाद हर महीने चंदा देना शुरू कर दिया और सारी ज़िंदगी चंदे की बे-इंतिहा बरकात देखें। जमात में शामिल होने से पहले में अपनी फ़ैमिली के साथ किराए के फ़्लैट में रहता था। हम बड़ी मुश्किल की ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। मुख़्तलिफ़ जगहों पर काम किया। कसमपुर्सी की हालत थी। न जायदाद थी न मुस्तक़िल आमद थी। चंदे की बरकात से अल्हम्दुलिल्ला अब मैंने एक पूरा घर तामीर कर लिया है। इस वक़्त मेरा रोज़गार मुस्तक़िल नौईयत का है। काम भी मुश्किल नहीं और तनख़्वाह भी अच्छी है। ये सब चंदे की बदौलत अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया है।

टोगो मग़ारिबी अफ़्रीक़ा का एक मुलक है। वहां के मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं कि एक अहमदी महिला के पास चंदा वक़्फ़-ए-जदीद की रक़म मौजूद नहीं थी। उन्होंने अपने घर के इस्तिमाल के लिए सब्ज़ी उगाई हुई थी। इसलिए वह सब्ज़ी बाज़ार में बेच कर अपना ख़ुदा से किया हुआ वादा पूरा किया और वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा अदा कर दिया। बड़ी मामूली सी चीज़ थी। ये वही मिसालें हैं जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो बाज़ार में जा के काम करते थे या हाफ़िज़ साहिब जो भी तोहफ़ा मिलता वह दे दिया करते थे।

इसी तरह एक मैंबर हम्ज़ा साहिब के पास वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा देने के लिए पैसे नहीं थे। उनके पास अपनी मुर्ग़ियां थीं। उन्होंने नौ मुर्ग़ियां बैच के चंदा अदा कर दिया। ये ग़रीब लोग हैं जो अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर क़ुर्बानी करते हैं और यही लोग हैं जो पुराने बुज़ुर्गों की याद भी ताज़ा करते हैं।

इंडोनेशिया के एक दोस्त ईमान हिदायत साहिब हैं। कहते हैं मैं जन्म अहमदी हूँ। पहले तो मैं केवल एक मैंबर के तौर पर ही चंदा अदा किया करता था। एक आदत पड़ गई थी कि अहमदी हूँ, चंदा देना है। तहरीक-ए-जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद की क़ुर्बानियों में हिस्सा नहीं लेता था। इस पर मेरे समस्त भाईयों ने दोनों तहरीकात के हवाले से मुझे तवज्जा दिलाई कि केवल जमाअत-ए-अहमदिया का मैंबर होने की वजह से चंदा नहीं देते बल्कि हम अल्लाह तआला का क़ुरब पाने के लिए माली क़ुर्बानी में हिस्सा लेते हैं। कहते हैं इसलिए मेरे अंदर भी तहरीक-ए-जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद में हिस्सा लेने में दिलचस्पी पैदा हुई और मैंने दोनों तहरीकात में माली क़ुर्बानी शुरू कर दी और उनमें हिस्सा लेने के बाद मैंने अपनी ज़िंदगी में बहुत बड़ी तबदीली महसूस की। मैं ख़ुद को अल्लाह तआला के क़रीब महसूस करता हूँ। मुझे जमाअती ज़िम्मेदारी भी दे दी गई है। इसी तरह रिज़्क़ के मुआमले में भी अल्लाह तआला ने अपनी मुहब्बत का इज़हार किया। सबसे बढ़कर अल्लाह तआला का कथन कि अगर तुम चल कर मेरे क़रीब आओगे तो मैं तुम्हारे पास दौड़ के आऊँगा उसको मैंने चंदे की बरकत से पूरा होते देखा।

मेलबर्न आस्ट्रेलिया से एक दोस्त अपना वाक़िया लिखते हैं कि वक़्फ़-ए-जदीद के माली साल के अंत से चंद हफ़्ते पूर्व तहरीक की गई कि जो लोग माली तौर पर मुस्तहकम हैं वे वक़्फ़-ए-जदीद में कम से कम पाँच हज़ार डालर की अदायगी करें। कहते हैं मैंने वक़्फ़-ए-जदीद के लिए चार हज़ार डालर अदा किए थे। मेरे पास पाँच हज़ार डालर नहीं थे लेकिन मेरे दिल में शदीद ख़्वाहिश पैदा हुई कि मुझे वक़्फ़-ए-जदीद के लिए पाँच हज़ार डालर की क़ुर्बानी पेश करनी चाहिए। इसलिए जुमा से वापसी पर मैंने दुआ करनी शुरू की। अब यह अच्छी हालात में थे लेकिन फिर भी अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में था। एक लगन थी, ख़्वाहिश थी। उनको दुआ की तरफ़ तहरीक पैदा हुई तो कहते हैं मैंने दुआ की। मैं बिज़नस करता हूँ। छोटा मोटा बिज़नस है। एक रोज़ में ऑफ़िस में थोड़ी देर के ब्रेक के लिए बाहर निकला और यह दुआ भी करता रहा कि में इस चंदे मैं किस तरह हिस्सा डालूं? अल्लाह तआला मुझे तौफ़ीक़ दे। कहते हैं जब मैं दफ़्तर में वापस आया तो मेरा बिज़नस पार्टनर जो कि ईसाई है मेरे दफ़्तर में आया और दरवाज़ा बंद कर दिया और बड़ी ख़ुशी से हाथ मिलाया और कहा कि एक बड़ी ख़बर है। मज़ीद तफ़सील बताते हुए कहने लगा कि एक नए कारोबार के लिए एक गाहक ने सेट अप का निवेदन किया है और इस की फ़ीस तीस हज़ार है जिसमें से पंद्रह पंद्रह हज़ार हम दोनों के हिस्सा में आएँगे। कहते हैं मैंने फ़ौरन समझ लिया कि मेरी दुआ क़बूल हो गई है। मैंने अपने बिज़नस पार्टनर को बताया कि मैं क्या दुआ कर रहा था और किस तरह अल्लाह तआला ने हमारी मदद की और मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआ का जवाब दिया है। इस पर वह पार्टनर भी कहने लगा कि चैरिटी के लिए पाँच हज़ार डालर की रक़म बहुत ज़्यादा है। फिर कहने लगा तुम्हारी दुआ की वजह से मुझे भी यह फ़ायदा हुआ है इसलिए मैं भी हिस्सा डालूँगा। यह रक़म तो तुमने अदा करनी है इस में से आधी रक़म में अदा करूँगा। लेकिन मैंने उसे कहा कि और भी कई ख़ैराती काम हैं जिन में वे हिस्सा डाल सकता है। ये पाँच हज़ार तो वक़्फ़-ए-जदीद का है। यह तो मैंने ख़ुद ही देना है। बहरहाल अल्लाह तआला ने मेरी दुआ और ख़्वाहिश को क़बूल करते हुए मुझ पर रहम फ़रमाया।

फिजी भी एक दौर दराज़ का इलाक़ा है। वहां नौ-मुबाईन ज़ैनुल बेग साहिब हैं। दो तीन साल क़बल उन्होंने बैअत की है। इबतेदाई तौर पर जब उनको तहरीकात में शामिल किया गया तो मामूली रक़म का वादा था। फिर कुछ अरसा बाद चंदा आम में भी शामिल किया गया और निज़ाम की एहमियत का भी उनको पता लगा लेकिन इस साल मेरे ख़ुतबात सुन के उन्होंने अज़ ख़ुद ही अपने वादे जो हैं तहरीक जदीद वक़्फ़-ए-जदीद में बढ़ा दिए और दस गुना इज़ाफ़ा कर दिया और अदायगी भी कर दी। फिर चंदा आम के हवाले से उन्होंने बताया कि हफ़्ता-वार इन्कम पर चंदा आम की भी 16/1 की शरह के मुताबिक़ अदायगी का वादा किया और बाक़ायदगी से हर हफ़्ता अपनी तनख़्वाह से तमाम चंदाजात की अदायगी आ के कर जाते थे। ये नौ-मुबाईन वर्णन करते हैं कि जब से मैंने चंदा में इज़ाफ़ा किया है मुझे मुलाज़मत में तरक़्क़ी मिली है और कहते हैं जनवरी 2024 ई. से तनख़्वाह में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाएगा इंशा-ए-अल्लाह। कहते हैं कि अगर किसी ने चंदे की बरकत जाननी है तो वह मुझ से पूछे।

माईक्रो नेश्या के मुबल्लिग़ हैंसर्जील साहिब। कहते हैं यहां एक नौ मुबाईन साइमन साहिब हैं माली क़ुर्बानी के हवाले से उनको तवज्जा दिलाई गई और बताया गया कि ये चंदा हम ख़ुदा तआला की मुहब्बत के हुसूल के लिए देते हैं। कोई टैक्स नहीं है और ख़ुदा तआला ने इस को एक क़र्ज़ा हसना क़रार दिया है। इस पर उन्हों ने हर हफ़्ता चंदा देना शुरू कर दिया। कुछ अरसा बाद कहने लगे कि पहले जब मैं गिरजा में जाता और पैसे देता तो ज़िंदगी में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा लेकिन जब से मैंने जमाअत में आ के अल्लाह तआला की राह में माली क़ुर्बानी शुरू की है तो अल्लाह तआला ऐसे माध्यम से मेरी ज़रूरियात पूरी कर देता है कि मैं हैरान रह जाता हूँ। बाज़-औक़ात पैसों की आवश्यकता होती है और अचानक कोई आ जाता है और पैसे पकड़ा देता है। कभी खाने की कमी होती है तो घर बैठे ही अल्लाह तआला किसी के माध्यम से आवश्यकता पूरी कर देता है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से साइमन साहिब अपनी ताकत से बढ़कर माली क़ुर्बानी करते हैं।

तन्ज़ानिया के अमीर साहिब कहते हैं कि एक दोस्त बशीर साहिब ने वक़्फ़-ए-जदीद में अपना और अपनी फ़ैमिली का चालीस हज़ार शलंग चंदा अदा किया। उनकी पत्नी ने दरयाफ़त किया कि घर के हालात इतने अच्छे नहीं हैं फिर भी इतनी बड़ी रक़म चंदे में क्यों दे दी है? उन्होंने उत्तर दिया कि फ़िक्र न करो। अल्लाह तआला अपनी राह में माली क़ुर्बानी करने वाले को कभी ज़ाए नहीं करता। वह ज़रूर उसे बढ़ा कर लौटाएगा। इसलिए चंद दिन में ही उन्हें दो तीन मुख़्तलिफ़ ज़राए से ऐसा काम मिल गया कि न केवल चंदे में अदा की गई रक़म वापस आ गई बल्कि इससे ज़्यादा आमद हुई। कहते हैं कि मुझे तो इस से पहले भी इदराक था लेकिन मेरी पत्नी ने भी अब अपनी आँखों के सामने चंदे की बरकात मुशाहिदा कर लीं और इस का भी ईमान बढ़ा।

जर्मनी के नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-जदीद कहते हैं। जमात माइनज़ (Mainz) के एक तालिब-इल्म ने हुकूमती इदारे को वज़ीफ़ा की दरख़ास्त दी। पढ़ाई के लिए कुछ रक़म चाहिए थी और बताया कि मेरा समिस्टर शुरू होने वाला है और रक़म कम है। दूसरी तरफ़ वक़्फ़-ए-जदीद का साल भी ख़त्म हो रहा था और अपने और फ़ैमिली के वाअदा जात की अदायगी करनी थी। उनको उम्मीद थी कि जिसकी दरख़ास्त दी हुई थी वहां से वज़ीफ़ा की रक़म मिल जाएगी। लेकिन बहरहाल मुझे वहां हुकूमती इदारे की तरफ़ से इंकार हो गया। जो रक़म पास थी वह उन्होंने अल्लाह पर तवक्कुल करते हुए चंदे में दे दी। इस के बाद समस्टर मुकम्मल किया। अच्छे नंबरों से अल्लाह तआला ने उनको कामयाब फ़रमाया और मुताल्लिक़ा इदारे की तरफ़ से भी पहले तो इंकार हुआ था और फिर अचानक एक रक़म चार हज़ार यूरो के बराबर उनके एकाऊंट में आ गई। फिर ये कहते हैं मेरा तो यही ईमान है कि ये क़ुर्बानी की है।

इंडिया की एक जगह सावंत वाड़ी है। वहां के एक अहमदी सिराज साहिब हैं। उन्होंने कहा कि मैंने माली क़ुर्बानी की बरकात को अपनी आँखों से देखा है। वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे कोविड की बीमारी की वजह से बक़ाया रह गए थे। दो तीन साल से उन के बाग़ात की लकड़ियाँ बारिश के पानी से ज़ाए हो रही थीं। जिस ख़रीदार ने लेने का वादा किया था और जो रक़म तै हुई थी उसकी अदायगी नहीं कर रहा था। बहरहाल मौसूफ़ ख़रीदार ढूंडते रहे, कोई नहीं मिल रहा था। मौसूफ़ कहते हैं कि जब इन्सपैक्टर वक़्फ़-ए-जदीद आए और वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे का मुतालिबा किया तो मौसूफ़ ने दो हज़ार रुपय फ़ौरी निकाल के अदा कर दिए। कहते हैं कि दो दिन के अंदर अंदर जो ख़रीदार क़ीमत तै करने के बावजूद सामान नहीं ले रहा था अचानक आकर बीस हज़ार

रुपय देकर सारा माल ले गया और ये कहते हैं मेरा तो यही ईमान है कि चंदे की बरकत से अल्लाह तआला ने दो हज़ार को बढ़ा कर बीस हज़ार मुझे वापस लौटा दिया अन्यथा जो सामान बरसों से ज़ाए हो रहा था वे आगे भी ज़ाए हो सकता था।

कैनेडा की एक लजना मैंबर हैं। कहती हैं कि जनवरी के पहले हफ़्ते में जब मैंने वक़्फ़-ए-जदीद के साल का ऐलान किया तो उनको भी ख़ाहिश पैदा हुई कि अपना और अपने बच्चों का चंदा अदा करें। जब बैंक की सूरत-ए-हाल देखी तो वहां तो कुछ भी नहीं था। बहरहाल कहती हैं मैंने दुआ की कि अल्लाह तआला ग़ैब से मेरे लिए भी ऐसे सामान पैदा कर दे कि चंदा अदा कर सकूँ। फिर चंद दिन के बाद बैंक एकाऊंट में देखा तो इस में तीन सौ डालर के बराबर रक़म थी और वही थी जो मैं अपने और अपने मरहूमीन की तरफ़ से चंदे में देना चाहती थी और मैंने फ़ौरी तौर पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए चंदे में अदायगी कर दी।

फिर एक और महिला हैं यह भी कैनेडा की हैं। उन्होंने अपना वादा बढ़ा कर सारी अदायगी कर दी तो अगले दिन ही उनको टैक्स डिपार्टमैंट से, रीवैन्यू डिपार्टमैंट से ज़ायद रक़म का चैक वापस आ गया और वे सात सौ पचास डालर की रक़म थी। कहती हैं यह उतनी ही रक़म थी जो मैं ने अदा की थी

तनज़ानिया की एक नौ-मुबाईन महिला आमना साहिबा हैं। वह कहती हैं कि अहमदियत क़बूल की तो मैंने अहमदियत में एक अलग निज़ाम देखा जो दूसरे मुस्लमानों से मुख़्तलिफ़ था। माली निज़ाम में हर चंदे की रसीद दी जाती है और जगह कहीं नहीं मिलती। कहती हैं कि नवंबर में मुअल्लिम साहिब ने ख़ुतबा जुमा दिया और चंदा वक़्फ़-ए-जदीद के बारे में तहरीक की। मेरे पास जितने पैसे थे मैंने चंदे में दे दिए। मेरे घर के हालात बेहतर नहीं थे। बेटी उम्मीद से थी, हस्पताल ले के जाने की आवश्यकता पड़ सकती थी। घर पहुंची तो रात इशा के बाद मुझे एक शख़्स का फ़ोन आया। उसने मुझसे दो साल से कुछ रक़म क़र्ज़ ली हुई थी और संपर्क नहीं कर रहा था और मैं भूल चुकी थी कि अब यह वापस नहीं होगी। तो बहरहाल उसने फ़ोन किया, माफ़ी मांगी और वजूहात बता के दो हज़ार की रक़म वापस कर दी। कहती हैं कि मैंने जो माली क़ुर्बानी अपनी ज़रूरियात को पीछे डाल के की थी तो अल्लाह तआला ने वहां मेरी वो मदद फ़रमाई और इस के बाद फिर उनको फ़ौरी तौर पर बेटी को भी हस्पताल ले जाने की आवश्यकता पड़ी और अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया। इस तरह उस का ईलाज भी हो गया।

अल्लाह तआला नए आने वालों में भी ये सोच पैदा फ़र्मा रहा है कि माल अल्लाह तआला की तरफ़ से आता है और यह सोच सिर्फ एक अहमदी में ही पाई जाती है।

नाईजेरिया एक और मुल्क है। आजकल वहां हालात भी काफ़ी ख़राब हैं। मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि हमने मादरी रीजन के एक गांव का दौरा किया। चंदे की तहरीक की। लोगों ने हसब-ए-इस्तिताअत वक़्फ़-ए-जदीद में हिस्सा लिया। एक ग़ैर अहमदी वहां कहने लगा कि आप हमारे गांव के ग़रीब लोगों से रक़म वसूल कर रहे हैं जबकि आपको बख़ूबी इलम है कि देश के मआशी हालात इंतेहाई ख़राब हैं और अन्य इस्लामी तंज़ीमें तो लोगों के लिए कुछ न कुछ लेकर आ रही हैं और आप उनसे मांग रहे हैं। मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि इस से क़बल कि मैं कुछ जवाब देता इस गांव के एक अहमदी खड़े हो गए। बड़े जोश से कहने लगे कि दीगर इस्लामी जमाअतें आती हैं। ठीक है कोई फ़लाही मदद कर देती होंगी लेकिन क्या किसी इस्लामी तंज़ीम ने हमें इस्लाम के बारे में कुछ सिखाया है? वह फ़लाही काम तो शायद कर के चले जाते हैं लेकिन जमात अहमदिया हमें दीन सिखाती है और यहां ये मुअल्लिम साहिब हमारे से रक़म वसूल करने नहीं आए बल्कि हमें माली क़ुर्बानी के इस भावना की तरग़ीब दिलाने आए हैं जो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने पेश की है जिसके माध्यम से हम दुनिया ही नहीं बल्कि आख़िरत में भी अज्र हासिल कर सकेंगे। तो यह इदराक उनमें क़बूल अहमदियत के बाद अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए क़ुर्बानी ज़रूरी है और फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल भी बहुत होते हैं। बहरहाल यह सुन कर वे ग़ैर अहमदी दोस्त ख़ामोश हो गए।

अतः कैसे-कैसे ख़ूबसूरत मुख़लेसीन दुनिया के हर कोने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अता फ़रमाए हैं। यह एक लंबी फ़हरिस्त है। मेरे लिए मुश्किल था कि किस का वर्णन आज छोड़ूँ और किस का करूँ? बेशुमार ऐसे वाक़ियात थे। बहरहाल वक़्त के मुताबिक़ मैं नहीं ले सका लेकिन जो भी मैंने छोड़े हैं उनके भी इख़्लास-ओ-वफ़ा में कोई कमी नहीं। इन लोगों ने अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए ये क़ुर्बानियां दी हैं लेकिन अल्लाह तआला भी क़र्ज़ नहीं रखता बल्कि उनकी क़ुर्बानियों को क़बूल फ़र्मा कर उसे उनके ईमान में इज़ाफ़ा का माध्यम बनाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मेरे प्यारे दोस्तो मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि मुझे ख़ुदा ए तआला ने सच्चा जोश आप लोगों की हमदर्दी के लिए बख़्शा है और एक सच्ची मार्फ़त आप साहिबों की ईमान-ओ-इर्फ़ान में बढ़ोतरी के लिए मुझे अता की गई है। इस मार्फ़त की आपको और आपकी नस्ल को निहायत आवश्यकता है। अतः मैं इस लिए मुस्तइद खड़ा हूँ कि आप लोग अपने अम्वाल-ए-तय्यबा से अपने दीनी मुहिम्मात के लिए मदद दें और हर-यक शख़्स जहां तक ख़ुदाए तआला ने उसको वुसअत-ओ-ताक़त-ओ-मुक़द्दरत दी है इस राह में दरेग़ न करे और अल्लाह और रसूल से अपने अम्वाल को मुक़द्दम न समझे और फिर मैं जहां तक मेरे इमकान में है तालीफ़ात के माध्यम से उन उलूम और बरकात को एशिया और यूरोप के मुल्कों में फैलाऊँ जो ख़ुदा तआला की पाक रूह ने मुझे दी हैं।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 516)

अतः उन माली क़ुर्बानियों के माध्यम से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से इशाअत-ए-इस्लाम का जो काम होना था वह हो रहा है। अफ़्रीक़ा के रहने वाले ग़रीब और कम वसायल रखने वाले अहमदी बावजूद अपनी क़ुर्बानियों के आला मयार क़ायम करने के इस बात के मुतहम्मिल नहीं हो सकते कि तब्लीग़-ए-इस्लाम और इशाअत-ए-इस्लाम के काम को अपने मुल्कों में भी आला रंग में सरअंजाम दे सकें। इसलिए यूरोप और अमरीका इत्यादि देशों जो अमीर देश हैं उनके चंदा वक़्फ़-ए-जदीद की रक़म का बेशतर हिस्सा उन ग़रीब देशों में सिलसिला की तरक़्क़ी के कामों में ख़र्च होता है। अल्लाह तआला इन सब लोगों के ईमान और यक़ीन और अम्वाल-ओ-नफ़ूस में बरकत डाले जो किसी भी रंग में जमाअत के लिए क़ुर्बानी करते हैं और हर वक़्त उसके लिए तैयार रहते हैं।

इस वक़्त वक़्फ़-ए-जदीद के नए साल के ऐलान के साथ में दुनिया के देशों की क़ुर्बानियों के कुछ जायज़े भी पेश करूँगा

जो उमूमन रिवायत है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वक़्फ़-ए-जदीद का छयासठवां (66वां) वर्ष ख़त्म हुआ और स्तासठवां (67वां) वर्ष शुरू हो गया है

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से विश्वव्यापी जमात अहमदिया ने दौरान साल एक करोड़ 29 लाख 41 हज़ार पाऊंडज़ की माली क़ुर्बानी पेश की है अर्थात तक़रीबन तेराह मिलियन पाऊंड। यह वसूली पिछले वर्ष से सात लाख अठारह हज़ार पाऊंडज़ है।

बर्तानिया की इस साल मजमूई वसूली के लिहाज़ से पहली पोज़ीशन है।

फिर कैनेडा है। कैनेडा ने भी अच्छा इज़ाफ़ा किया है और उन्होंने शामिल होने वालों में इज़ाफ़ा ज़्यादा किया है। यह उनकी इस साल बहुत बड़ी ख़ूबी है। फिर जर्मनी है नंबर तीन। फिर नंबर चार अमरीका, पाकिस्तान, भारत, आस्ट्रेलिया, मिडल ईस्ट की एक जमात है, इंडोनेशिया है, मिडल ईस्ट की फिर जमात है। बेल्जियम है।

अफ़्रीक़ा की जमाअतों में नंबर एक पर मारीशस है। फिर घाना है। बुर्कीना फासो है। बुर्कीना फासो के हालाँकि हालात भी काफ़ी ख़राब हैं लेकिन बावजूद इस के फिर भी अफ़्रीक़ा में तीसरी पोज़ीशन है। तनज़ानिया है। नाईजीरिया है। लाइबेरिया। फिर गेम्बया। माली। योगंडा। सिरालियोन शामिल होने वालों की संख्या अल्लाह के फ़ज़्ल से इस वर्ष 44 हज़ार नए मख़लेसीन शामिल हुए हैं। और 15 लाख 50 हज़ार उनकी संख्या है।

शामिल होने वालों में इस इज़ाफ़े के लिए जो कोशिश की है इस में कैनेडा नंबर एक पर है। फिर तनज़ानिया। फिर कैमरोन। फिर गेम्बया। नाईजेरिया। गिनी बसाऊ और कोंगो किंशासा।

वसूली के लिहाज़ से बर्तानिया की जो दस बड़ी जमाअतें हैं उनमें फ़ारनहम (Farnham) नंबर एक पर है। फिर वोस्टर पार्क (Worcester Park) फिर वालसाल (Walsall) फिर आलडर शॉट साउथ (Aldershot South) फिर इस्लामाबाद। ग गलिंग़घम(Gillingham) ईश (Ash) चीम साउथ (Cheam South) (इयूल Ewell) और हंसलो साउथ रीजनज़

जो हैं उन में बैतुल फ़तह पहले नंबर एक पर। फिर इस्लामाबाद रीजन। फिर मिडलैंडज़ (Midlands) मस्जिद फ़ज़्ल फिर बैतुल अहसान

दफ़्तर अतफ़ाल के लिहाज़ से पहली दस जमाअतें हैं आलडर साउथ(Aldershot South) फ़ारनहम (Farnham) फिर आलडर शॉट नॉर्थ (Aldershot North) ईश Ash) इस्लामाबाद। रोहैंपटन वेल (Roehampton Vale) साउथ चीम। मानचैसटर नॉर्थ। बर्मिंघम वैस्ट। ब्रैडफोर्ड साउथ।

और छोटी जमातों में सपन वैली। कैथली। नॉर्थ वेल्ज़। नॉर्थ हैंपटन। सवानज़ी कैनेडा की इमारतें जो हैं उनमें नंबर एक पर वान। फिर कैलगरी (Calgary) फिर

पीस विलेज (Peace Village) फिर वेनकोवर (Vancouver) फिर ब्रैम्पटन वैस्ट (Brampton West) और फिर टोरांटो उनकी दस बड़ी जमातें हैं ।

मिल्टन ईस्ट (Milton East) मिल्टन वैस्ट (Milton West) हमिल्टन। ऐड मनटुन वैस्ट। डरहम वैस्ट (Durham West)आटवा वैस्ट (Ottawa West) रजायना (Regina) इंसफ़ल (Innisfil) ऐबटस फ़ोर्ड (Abbotsford) न्यू फाउंड लैंड (New found land) हैं।

दफ़्तर इतफ़ाल में जो इमारतें हैं वान (Vaughan) नंबर एक पर। फिर पीस विलेज (Peace Village) टोह रिंटू वैस्ट (Toronto West) वेनकोवर (Vancouver) कैलगरी (Calgary) और मिसिस सागा (Mississauga)

दफ़्तर अत्फ़ाल में डरहम वैस्ट (Durham West) जमाअतों में पहले नंबर पर है। फिर मिल्टन वैस्ट (Milton-West) हदीक़ा अहमद। मोण्ट्रियाल वैस्ट (Montreal West) हमिल्टन माऔंटेन (Hamilton Mountain)

जर्मनी की इमारतें जो हैं उनमें हैमबर्ग (Hamburg) नंबर एक पर। फिर फ्रैंकफ़र्ट (Frankfurt) वेज़ बादिन (Wiesbaden)ग्रोस गैराओ (Gross Gerau) राइड स्टैन्ड (Riedstadt)

और उनकी जो पहली दस जमातें हैं उनमें रवीडरमारक (Rödermark) रोडगाओ (Rodgau) ननिदा (Nidda) फ्रेड बर्ग (Friedberg) फ्लोर्स हाइम (Florsheim) नवयस् (Neuss) माइनज़ (Mainz) महदी आबाद। ओसना ब्रूक। बर्लिन और कोबलनज़ (Koblenz)

दफ़्तर इत्फ़ाल मैं मन हाइम नंबर एक पर। फिर डेटसन बाख। ह्यसन् साउथ वैस्ट (Hessen South West)रावन लैंड फ़ालिज़ (Rheinland -Pfalz) वैस्ट फालन।

अमरीका की दस जमाअतें ये हैं। नंबर एक पे लास ऐंजलिस (Los Angeles) फिर मेरी लैंड (Maryland) नॉर्थ वर्जीनिया। सेइटल (Seattle) सेलेकोन वैली (Silicon Valley) बोस्टन (Boston) ऑस्टन (Aston)अवश् कोष। मेनेसोटा (Minnesota) और पोर्ट लैंड।

दफ़्तर अत्फ़ाल में सेइटल (Seattle) लास ऐंजलिस (Los Angeles) मेरी लैंड (Maryland) साउथ वर्जीनिया। क्लीवलैंड (Cleveland) ऑस्टन (Aston) सिलीकोन वैली (Silicon Valley) अवश् कोष। इंडियाना (Indiana) ज़ायन (Zion)

पाकिस्तान में जो पहली पोज़ीशन है उनमें अव्वल लाहौर। दोम रब्वाह। सोम कराची।

और जो अज़ला की पोज़ीशन बालिग़ान में है। इस्लामाबाद यह मैं ने पहले जमाअतों में शहरों के हिसाब से बताया था और अज़ला के लिहाज़ से भी इस्लामाबाद नंबर एक पर है। फिर फैसलाबाद। गुजरांवाला। गुजरात। सरगोधा। उमरकोट। मुल्तान। हैदराबाद। मीरपुरख़ास। डेराख़ान।

दफ़्तर अत्फ़ाल की तीन बड़ी जमाअतें जो हैं वे लाहौर नंबर एक पर। रब्वाह नंबर दो पर। कराची नंबर तीन पर।

दफ़्तरा अत्फ़ाल में अज़ला की पोज़ीशन है इस्लामाबाद नंबर एक। फिर फैसलाबाद। नारोवाल। सरगोधा। उमरकोट। गुजरांवाला। मीरपुर ख़ास। गुजरात। हैदराबाद। शेख़ूपुरा।

पाकिस्तान में बावजूद करंसी की क़ीमत बहुत ज़्यादा गिरने के अल्लाह के फ़ज़ल से उन्होंने बहुत ज़्यादा इज़ाफ़ा किया है और बड़ी क़ुर्बानी की है।

भारत के दस राज्य जो हैं उनमें नंबर एक पर केराला। फिर तामिल नाडू। जम्मू कश्मीर। तिलंगाना। कर्नाटका। उडिशा। पंजाब। वैस्ट बंगाल। दिल्ली। महाराष्ट्रा।

और वसूली के लिहाज़ से दस जमाते जो हैं उनमें हैदराबाद नंबर एक। कोयमबाटूर। क़ादियान। कालीकट। मंजीरी। बैंगलौर। मलया पुलियम (Melapalayam) कोलकता। कैरोलाई और केरनग।

आस्ट्रेलिया में बालिग़ान की जमाअतें जो हैं उनमें मेलबर्न लाँगवार्न (Melbourne Langwarrin) कासल हिल (Castle Hill) मारसिडन पार्क (Marsden Park) लोगन ईस्ट (Logan East) मैलबोर्न बैरक (Melbourne Berwick) पैनर्थ Penrith) प्रथ (Perth) मैलबोर्न कलाईड (Melbourne Clyde) पैरा माटा (Parramatta) एडीलेड वैस्ट (Adelaide West)

अल्लाह तआला इन सब के अम्वाल-ओ-नफ़ूस में बे-इंतेहा बरकत अता फ़रमाए।

फिलिस्तीन के लिए तो मैं दुआ की तहरीक करता ही रहता हूँ। आप भी उनको याद रखें।

अपने अपने हल्क़ा-ए-अहबाब में उनके हक़ में आवाज़ भी उठाते रहें। लोगों को बताते भी रहें विशेषता सियासतदानों को। पहले भी मैंने कहा था। इज़राइल की हुकूमत तो अपने ज़ुल्मों से बाज़ आने वाली नहीं लगती बल्कि अब तो उन्होंने फ़ौजीयों को यह संदेश दिया है कि 2024 ई. का साल भी जंग का साल है।

अल्लाह तआला फ़लस्तीनियों पर रहम फ़रमाए। इस से अब यह भी कहा जाने लग गया है कि रीजन में भी जंग फैलने का ख़तरा है और फिर विश्वव्यापी जंग भी हो सकती है।

बेरूत के इर्द-गिर्द भी उन्होंने बमबारी शुरू कर दी है। अब ये बढ़ते ही चले जा रहे हैं। गो बज़ाहिर अमरीका की हुकूमत उनको यही कह रही है कि अपनी जंग को सीमित करो लेकिन यह केवल शब्द ही लगते हैं। दबी हुई उनकी आवाज़ें हैं। असल मन्सूबा तो उनका यही लगता है कि ग़ज़ा से फ़लस्तीनियों को बेदख़ल कर दिया जाए और इस ज़मीन पर फिर क़बज़ा कर लें।

अल्लाह तआला फ़लस्तीनियों पर रहम फ़रमाए और मुस्लमानों पर भी रहम फ़रमाए। उनको भी अक़ल और समझ दे और यह इस तरफ़ भी ग़ौर करें कि ज़माने के इमाम की आवाज़ को भी सुनें और उस को मानें।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअात की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमअात इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

संस्थान

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj

ख़ुत्बः जुमअः

"लड़ाई में सबसे बहादुर वह समझा जाता था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास होता था क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बड़े ख़तरनाक मुक़ाम में होते थे। सुब्हानल्लाह क्या शान है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऊहद के दिन अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमाअत से मौत पर बैअत ली। जब बज़ाहिर मुस्लमानों को पीछे हटना पड़ा तो वे साबित-क़दम रहे और अपनी जान पर खेल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बचाव करने लगे यहां तक कि उनमें से कुछ शहीद हो गए

इब्न-ए-इसहाक़ ने लिखा है कि जब कुफ़्फ़ार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को घेर लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया مَنۡ رَجُلٌ یَشۡرِیۡ لَنَا نَفۡسَہٗ? कौन शख़्स है जो हमारे लिए ख़ुद को बेच देगा तो ज़याद बिन सकन रज़ियल्लाहु अन्हो पाँच अंसारी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ खड़े हुए और कुछ लोग कहते हैं कि वह अम्मारा बिन यज़ीद सकन रज़ियल्लाहु अन्हो थे

शदीद ज़ख़्मी ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हो ने बड़ी कोशिश के साथ अपना सिर उठाया और अपना मुँह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दमों पर रख दिया और इसी हालत में जान दे दी।

जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट जमा थे उन्होंने जो कुर्बानिया दिखाईं तारीख़ उनकी उदाहरण लाने मे असमर्थ है। ये लोग परवानों की तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द घूमते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ातिर अपनी जान पर खेल रहे थे। जो वार भी पड़ता था सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो अपने ऊपर लेते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बचाते थे और साथ ही दुश्मन पर भी वार करते जाते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही दुनिया की जंगी तारीख़ में बेहतरीन सिपहसालार और हिकमत से परिपूर्ण तुरंत निर्णय करने के मालिक स्वीकार किए जाते हैं।

जंग-ए-उहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी का वर्णन तथा फ़िलिस्तीनी मज़लूमीन की न्याय की मांग और विश्वव्यापी जंग से बचने के लिए की गई प्रस्तावना

इज़राइल अब लुबनान की सीमा के साथ भी हिज़्बुल्लाह के ख़िलाफ़ महाज़ खोल रहा है और जिससे हालात और ख़राब होंगे। इसी तरह अमरीका और बर्तानिया ने होसी यमनी क़बायल के ख़िलाफ़ जो महाज़ खोला है ये सब चीज़ें जो हैं ये जंग को और बड़ा कर रही हैं, फैला रही हैं और अब तो बहुत सारे लिखने वालों ने लिख दिया है लिख रहे हैं कि विश्वव्यापी जंग के आसार बड़े क़रीब नज़र आ रहे हैं। अतः दुआओं की बहुत आवश्यकता है। अल्लाह तआला इन्सानियत को अक़ल और समझ प्रदान करे।

श्रीमान अबुल् हलमी मुहम्मद उकाशा साहिब आफ़ फ़िलिस्तीन, श्रीमती अमतुल नसीर ज़फ़र साहिबा पत्नी श्रीमान हैदर अली ज़फ़र साहिब, श्रीमती नसीम अख़तर साहिबा पत्नी हबीबुल्लाह काहलों साहिब और श्रीमती मुबारका बेग़म साहिबा पत्नी रशीद अहमद ज़मीर साहिब की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 जनवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-उहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की सीरत के हवाला से वर्णन हो रहा था। इस हवाला से मज़ीद तफ़सील इस तरह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों में दुश्मन से सबसे ज़्यादा क़रीब थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ पंद्रह अफ़राद साबित-क़दम रहे। आठ मुहाजेरीन में से जो थे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो, अबुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो, अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो और सात अंसार में से हज़रत हुबाब बिन मंज़र रज़ियल्लाहु अन्हो, अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो, आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो, सहल बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो और साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो। और कुछ ने यह कहा है कि साद बिन उबादः रज़ियल्लाहु अन्हो थे। और मुहम्मद बिन मसलम रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। कुछ ने यह कहा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने तीस अफ़राद साबित-क़दम रहे और सारे यही कहते थे कि मेरा चेहरा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरे के सामने रहे और मेरी जान आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जान के सामने और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर सलामती हो।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 196-197 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर सलामती हो और मेरी जान क़ुर्बान हो।

एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ग्यारह लोग और तल्हा बिन उबैद उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो रह गए। एक रिवायत में है कि जब मुशरेकीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को घेर लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सात अंसारी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो और एक क़ुरैशी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो के दरमयान थे। इसी तरह एक और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नौ लोगों में अकेले रह गए। सात अंसार में से और दो क़ुरैश में से और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दस्वें थे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 202-203 प्रकाशन दारुल कुतुब

इल्मिया बेरूत)

मुख़्तलिफ़ रिवायात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ साबित-क़दम रहने वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की संख्या मुख़्तलिफ़ वर्णन की गई है। रिसर्च सेल ने जो अपना नोट दिया है इस में वे यह कहते हैं कि तीस का वर्णन मिलता है। इस की एक न्याय यह भी हो सकती है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की संख्या उस वक़्त के लिहाज़ से बदलती रही होगी। जिसने पंद्रह देखे उसने पंद्रह बता दिए जिसने जितने देखे वे बयान कर दिए। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आते-जाते रहे होंगे जिसकी वजह से संख्या में फ़र्क़ रहा।

बहरहाल यही सही लगता है क्योंकि यह तफ़सील में है जो पिछले ख़ुतबात में पहले वर्णन हो चुकी है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्होआप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द आते थे और फिर दुश्मन के हमले से हलक़ा टूट जाता था, बिखर जाते थे फिर इकट्ठे होते थे।

बहरहाल बात यही है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो साबित क़दमी का उदाहरण दिखाते रहे और किसी को किसी किस्म का यह ख़ौफ़ नहीं था कि मौत आएगी। यह भी वर्णन है कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उहद के दिन अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमाअत से मौत पर बैअत ली। जब बज़ाहिर मुस्लमानों को पीछे हटना पड़ा तो वे साबित-क़दम रहे और अपनी जान पर खेल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दिफ़ा करने लगे यहां तक कि उनमें से कुछ शहीद हो गए।

उस रोज़ आठ लोगों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दस्त-ए-अक़्दस पर मौत की बैअत की। इन बैअत करने वाले ख़ुश-नसीबों के जो अस्मा रिवायात में वर्णन हुए हैं वे हैं : हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सहल बिन हुनैफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू दुजान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हारिस बिन समा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हुबाब बन मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो। उन में से कोई भी शहीद नहीं हुआ

(असाबा भाग 3 पृष्ठ 431 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 198 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

अल्लामा ज़िमख़्शरी की किताब ख़सायस अशरा में है कि उहद के दिन हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ बड़ी साबित क़दमी के साथ रहे और उन्होंने इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मौत की बैअत की थी। अर्थात यह अह्द किया था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त में जान दे देंगे परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का साथ नहीं छोड़ेंगे।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 321 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की साबित क़दमी और जाँनिसारी के बारे में लिखा है कि "जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गिर्द जमा थे उन्होंने जो जान नसारियां दिखाई तारीख़ उनकी नज़ीर लाने से आजिज़ है। ये लोग परवानों की तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द घूमते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ातिर अपनी जान पर खेल रहे थे। जो वार भी पड़ता था सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो अपने ऊपर लेते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बचाते थे और साथ ही दुश्मन पर भी वार करते थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ : 495)

आप रज़ियल्लाहु अन्हो मज़ीद लिखते हैं कि "ये चंद गिनती के जान-निसार इस सेलाब-ए-अज़ीम के सामने कब तक ठहर सकते थे जो हर लहज़ा प्रेमी मौजों की तरह चारों तरफ़ से बढ़ता चला आता था। दुश्मन के हर हमला की हर लहर मुस्लमानों को कहीं का कहीं बहा कर ले जाती थी परंतु जब ज़रा ज़ोर थमता था मुस्लमान बेचारे लड़ते भिड़ते फिर अपने महबूब आक़ा के गर्द जमा हो जाते थे। बाज़-औक़ात तो ऐसा ख़तरनाक हमला होता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अमलन अकेले रह जाते थे। इसलिए एक वक़्त ऐसा आया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द गिर्द सिर्फ 12 आदमी रह गए और एक वक़्त ऐसा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ दो आदमी ही रह गए। इन जान निसारों में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, अली रज़ियल्लाहु अन्हो, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो, साद बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो, अबू दुजाना अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो, साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और तल्हा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम ख़ास तौर पर वर्णित हैं।" (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 495-496) इस हवाले से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गर्द सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की जो संख्या मुख़्तलिफ़ हवालों में आती है इस की वज़ाहत हो जाती है जैसा कि मैंने कहा था हमले की वजह से कभी कम होते थे कभी ज़्यादा होते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, ईसाइयों के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर एक आरोप का उत्तर देते हुए फ़रमाते हैं। ईसाइयों ने ये इल्ज़ाम लगाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने झूठ बोलना या ग़लतबयानी करना जायज़ क़रार दिया।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारे सय्यद-ओ-मौला जनाब मुक़द्दस नबी की तालीम का एक आला उदाहरण उस जगह साबित होता है और वह यह कि जिस तौरिया को आपका यसू माँ के दूध की भांति समस्त आयु प्रयोग करता रहा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जहां तक संभव हो इस से बचने का हुक्म दिया। तौरिया के शब्दकोश के अनुसार अर्थ तो ये हैं कि ज़बान पर कुछ कहना और दिल में कुछ होना अर्थात ऐसी बात करना जो दो अर्थ भी रखती हो। इस की वज़ाहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तौरिया के शब्द को मज़ीद तफ़सील से वर्णन किया है। लुगवी अर्थ तो मैंने वर्णन किए। वज़ाहत इस तरह फ़रमाई कि फ़ित्ना के वक़्त ख़ौफ़ से एक बात को छिपाने के लिए किसी और उद्देश्य से या किसी और मस्लिहत पर एक राज़ की बात गुप्त रखने के उद्देश्य से ऐसी उदाहरणों और पैरायों में वर्णन किया जाए कि अक़्लमंद इन बातों को समझ जाए और नादान की समझ में न आए। अर्थात हिक्मत से इस तरह बात करना कि झूठ भी न हो और इस के अर्थ जो अक़्लमंद है वह समझ जाए कि असल हक़ीक़त क्या है और बेवक़ूफ़ आदमी न समझ सके। उस का ख़्याल दूसरी तरफ़ चला जाए। लेकिन आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह आला दर्जा के तक़्वा के ख़िलाफ़ है। यह हदीसों से साबित है कि यह आला दर्जा के तक़्वा के ख़िलाफ़ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस पर खुल के वर्णन फ़रमाया। अतः यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से तो कभी साबित नहीं किया जा सकता लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं। इस का ख़ुलासा यह है कि :

ईसाइयों के मुताबिक़ जिस शख़्स को वह ख़ुदा कहते हैं उसका तो यह हाल है कि ज़रा-ज़रा सी बात पर ग़लत बयानी की है

बहरहाल इसकी तफ़सील वर्णन करते हुए आप अलैहिस्सलाम कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जहां तक संभव हो इस से बचते रहने का हुक्म किया है ताकि मफ़हूम कलाम का अपनी ज़ाहिरी सूरत में भी किज़्ब से मुशाबेह न हो परंतु क्या कहें और क्या लिखें कि आपके यसू साहिब इस क़दर इल्तिज़ाम सच्चाई का न कर सके। जो शख़्स ख़ुदाई का दावा करे वह तो शेर-ए-बब्बर की तरह दुनिया में आना चाहिए था न कि सारी आयु तौरिया इख़्तेयार करके और समस्त बातें किज़्ब के एक रंग कि कर यह साबित कर देवे कि वह इन अफ़राद कामला में से नहीं है जो मरने से लापरवाह हो कर दुश्मनों के मुक़ाबिल पर अपने तईं ज़ाहिर करते हैं और ख़ुदा तआला पर भरोसा रखते हैं। (जिसको तुम ख़ुदा कहते हो वे तो सारी उम्र तौरिया से काम लेता रहा है। जो ख़ुदा है बल्कि ख़ुदा के नबी भी करते।) फ़रमाया और जो अल्लाह पर तवक्कुल करने वाले होते हैं किसी मुक़ाम मैं बुज़दिली नहीं दिखलाते। मुझे तो इन बातों को याद करके रोना आता है कि अगर कोई ऐसे ज़ईफ़-उल-क़लब यसू की इस कमज़ोर हालत और तौरिया पर जो एक प्रकार का झूठ है एतराज़ करे तो हम क्या जवाब दें। जब मैं देखता हूँ कि जनाब सय्यद मुरसेलीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जंग-ए-उहद में अकेले होने की हालत में नंगी तलवारों के सामने कह रहे थे कि मैं मुहम्मद हूँ, मैं अल्लाह का नबी हूँ। मैं इब्ने अब्दुल मुतलिब हूँ और फिर दूसरी तरफ़ देखता हूँ

कि आपका यसू काँप-काँप कर अपने शागिर्दों को ये ख़िलाफ़ वाक़िया तालीम देता है कि किसी से न कहना कि मैं यसू मसीह हूँ हालाँकि इस कलमा से कोई उस को क़तल नहीं करता तो मैं हैरत के दरिया में डूब जाता हूँ। फ़रमाते हैं कि मैं हैरत के दरिया में डूब जाता हूँ कि या इलाही यह शख़्स भी नबी ही कहलाता है जिसकी शुजाअत का ख़ुदा की राह में यह हाल है।

(उद्धृत नूरुल क़ुरआन नम्बर 2 रुहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 405 से 407)

(उद्धृत उर्दू दायरा मआरिफ़ भाग 6 पृष्ठ 737 "तौरिया" शब्द के अंतर्गत)

यह हैरत का इज़हार हज़रत-ए-ईसा के लिए आप ने इल्ज़ामी जवाब के तौर पर किया है। यह नहीं कि आप समझते थे कि वह नबी नहीं है और न आप का यह अर्थ था कि हज़रत-ए-ईसा नबी नहीं हैं बल्कि कहते हैं जिस नबी को तुम पेश करते हो और फिर उसको ख़ुदा का बेटा कहते हो उसका तो तुम्हारी किताबों के मुताबिक़ यह हाल है। फिर तुम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर एतराज़ करते हो कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने झूठ बोलना या बुज़दिली दिखाना जायज़ क़रार दिया है।

इब्ने इसहाक़ ने लिखा है कि जब कुफ़्फ़ार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को घेर लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया مَنْ رَجُلٌ يَشْرِيْ لَنَا نَفْسَهٗ؟ ? कौन शख़्स है जो हमारे लिए ख़ुद को बेच देगा तो ज़ियाद बिन स्कन रज़ियल्लाहु अन्हो पाँच अंसारी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ खड़े हुए और कुछ लोग कहते हैं कि वह अमारा बिन ज़्याद बिन सकन रज़ियल्लाहु अन्हो थे।

तो यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने दाद-ए-शुजाअत देते-देते एक-एक कर के शहीद होते रहे यहाँ तक कि उनमें से आख़िरी ज़्याद या अम्मारा थे ये लड़ते रहे यहां तक कि उनको कई ज़ख़्म लगे। फिर मुस्लमानों की एक जमात लौट आई और मुशरेकीन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से धकेल दिया। तो उस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ज़्याद बिन सकन को मेरे पास लाओ। उन्हें लाया गया तो वे अपनी आख़िरी साँसें ले रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उस को मेरे और क़रीब करो तो सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना क़दम मुबारक उनकी तरफ़ किया उन्होंने अपना चेहरा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दम मुबारक पर रख दिया और हज़रत ज़्याद रज़ियल्लाहु अन्हो की मौत इस हालत में हुई कि उनका रुख़्सार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दम-ए-मुबारक पर था और उनके जिस्म पर चौदह ज़ख़्म आए थे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 203 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि "एक वक़्त जब क़ुरैश के हमला की एक ग़ैरमामूली लहर उठी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया" कौन है जो उस वक़्त अपनी जान ख़ुदा के रस्ते में निसार कर दे? "एक अंसारी के कानों में यह आवाज़ पड़ी तो वह और छः और अंसारी सहाबी दीवानों की तरह आगे बढ़े और उन में से एक-एक ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्दगिर्द लड़ते हुए जान दे दी। इस पार्टी के रईस ज़्याद बिन सकन थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस धावे के बाद दिया।" वह कुफ़्फ़ार का एक ज़बरदस्त हमला था जब वह ज़रा कम हुआ और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आ गए और जगह ज़रा साफ़ हो गई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया" कि ज़्याद रज़ियल्लाहु अन्हो को उठा कर मेरे पास लाओ'। ज़ख़्मी थे" लोग उठा कर लाए और उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने डाल दिया। उस वक़्त ज़्याद रज़ियल्लाहु अन्हो में कुछ-कुछ जान थी परंतु वह दम तोड़ रहे थे।

इस हालत में उन्होंने बड़ी कोशिश के साथ अपना सिर उठाया और अपना मुँह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दमों पर रख दिया और इसी हालत में जान दे दी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए. पृष्ठ : 496)

हज़रत मसअब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का भी वाक़िया लिखा है कि हज़रत मुसाब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आगे लड़ रहे थे और लड़ते लड़ते शहीद हो गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को इब्ने कय्यमा ने शहीद किया।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 529 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

तारीख़ में आता है कि ग़ज़्व-ए-उहद के झण्डा उठाने वाला हज़रत मसअब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने झंडे की हिफ़ाज़त का हक़ ख़ूब अदा किया। ग़ज़्व-ए-अहुद के रोज़ हज़रत मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो झंडा उठाए हुए थे कि इब्न-ए-कय्यमा ने जो घोड़े पर सवार था हमला-आवर हो कर हज़रत मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो के दाएं बाज़ू पर जिस से आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने झंडा थाम रखा था तलवार से वार किया और उसे काट दिया। इस पर उन्होंने झंडा बाएं हाथ से थाम लिया। इब्ने कय्यमा ने बाएं हाथ पर वार कर के उसे भी काट डाला तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने दोनों बाज़ुओं से इस्लामी झंडे को अपने सीने से लगा लिया। इस के बाद इब्ने कय्यमा ने तीसरी मर्तबा नेज़े से हमला किया और हज़रत मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो के सीने में गाड़ दिया। नेज़ा टूट गया, हज़रत मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो गिर पड़े इस पर बनू अब्दुल दार में से दो आदमी सोवेत् बिन साद बिन हरमला रज़ियल्लाहु अन्हो और अबू रूम बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो आगे बढ़े और झंडे को अबू रुम बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो ने थाम लिया और वह उन्ही के हाथ में रहा यहां तक कि मुस्लमान वापस हुए और मदीना में दाख़िल हो गए।

(अल्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 89 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

यह तारीख़ की एक किताब ने लिखा है लेकिन कुछ दूसरी रिवायात के मुताबिक़ उसके बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया। इस वाक़िया का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं लिखा है कि "क़ुरैश के लश्कर ने क़रीबन चारों तरफ़ घेरा डाल रखा था और अपने एक के बाद एक हमलों से हर समय दबाता चला आता था। इस पर भी मुस्लमान शायद थोड़ी देर बाद सँभल जाते परंतु ग़ज़ब यह हुआ कि क़ुरैश के एक बहादुर सिपाही अब्दुल्लाह बिन कय्यमा ने मुस्लमानों के झण्डा उठाने वाले मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला किया और अपनी तलवार के वार से उनका दायाँ हाथ काट गिराया। मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौरन दूसरे हाथ में झंडा थाम लिया और इब्ने कय्यमा के मुक़ाबला के लिए आगे बढ़े परंतु उस ने दूसरे वार में उनका दूसरा हाथ भी काट दिया। इस पर मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने दोनों कटे हुए हाथों को जोड़ कर गिरते हुए इस्लामी झंडे को सँभालने की कोशिश की और उसे छाती से चिमटा लिया। जिस पर इब्ने कय्यमा ने उन पर तीसरा वार किया और अब की दफ़ा मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो कर गिर गए। झंडा तो किसी दूसरे मुस्लमान ने फ़ौरन आगे बढ़कर थाम लिया मगर चूँकि मसअब् रज़ियल्लाहु अन्हो का डीलडौल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलता था इब्ने कय्यमा ने समझा कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मार लिया है। या यह भी मुम्किन है कि इस की तरफ़ से यह तजवीज़ केवल शरारत और धोखादेही के ख़्याल से हो। बहरहाल उसने मसअब के शहीद हो कर गिरने पर शोर मचा दिया कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को मार लिया है। इस ख़बर से मुस्लमानों के रहे सहे औसान भी जाते रहे और उनकी जमईयत बिल्कुल मुंतशिर हो गई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ : 493)

जैसा कि वर्णन हो है कि मैदान-ए-उहद में चंद लमहात की लापरवाही ने इस्लामी लश्कर की फ़तह को वक़्ती पसपाई में बदल दिया परंतु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही दुनिया की जंगी तारीख़ में बेहतरीन सिपहसालार और पुरहिकमत फ़ौरी फ़ैसलों के मालिक तस्लीम किए जाते हैं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जंग की बदलती हुई सूरत-ए-हाल पर गहरी नज़र रखी। चार गुना बड़े लश्कर के सामने से अपने मुंतशिर और कमज़ोर लश्कर को इस अंदाज़ में महफ़ूज़ किया कि दुश्मन इस्लामी लश्कर को पूरी तरह कुचल देने के बद इरादे पर अमल न कर सका। हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस्लामी लश्कर का झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को अता किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लामी लश्कर का इल्म हाथ में लिया और फ़तह के नशे में चूर दुश्मनों के सामने डट गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तलवार ज़रब पर ज़रब लगा रही थी। मुंतशिर इस्लामी लश्कर के हौसले बहाल कर रही थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गर्द जमा चंद नफ़ूस पर मुश्तमिल इस्लामी लश्कर की छोटी सी जमात के साथ

मिलकर ऐसी जंग लड़ी कि मुशरेकीन के नर्ग़े से निकलने का रास्ता बन गया। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ियादत में इस मुख़्तसर जमात ने रास्ता बनाया और मैदान-ए-जंग में मौजूद मुंतशिर इस्लामी लश्कर की तरफ़ बढ़े जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर सुन कर हौसले हारते जा रहे थे। इसलिए मुशरेकीन-ए-मक्का ने भी इस्लामी लश्कर की वापसी को नाकाम बनाने के लिए ताबड़तोड़ हमले शुरू कर दिए परंतु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे हटने की हिक्मत-ए-अमली भी ऐसी कामयाब थी कि मुठ्ठी भर आधी संख्या दायरे की शक्ल में कंधे से कंधा मिलाए दुश्मन के हमलों को नाकाम बनाते हुए ग़ैर महसूस अंदाज़ में घाटी की तरफ़ खिसक रही थी। दुश्मन ने घेरा डालने के लिए भरपूर ताक़त का प्रयोग किया परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन हमलावरों का हुजूम चीर कर रास्ता बिना ही लिया।

(ग़ज़वात-ओ-सराया पृष्ठ 199-201प्रकाशन फ़रीदिया प्रिंटिंग प्रैस साहीवाल)

जंग उहद के अवसर पर नींद और ग़नूदगी के तारी होने का भी वर्णन मिलता है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो जो जंग लड़ रहे थे उन पर नींद की कैफ़ीयत तारी हो गई। अल्लाह तआला ने कोई ऐसी सूरत पैदा कर दी कि ऊँघ उनको आ गई। इस की तफ़सील इस तरह है।

हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब जंग-ए-उहद का रुख पल्टा तो मैंने अपने आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब पाया।

जब हम सब बदहवास और ख़ौफ़ज़दा थे और हम पर नींद नाज़िल कर दी गई। ऐसी हालत थी कि लगता था कि ऊँघ की हालत हम पर तारी हो गई। इसलिए हम में से कोई शख़्स ऐसा नहीं था जिसकी ठोढ़ी उसके सीने पर न हो अर्थात नींद और ग़नूदगी की हालत में सिर नीचे ढलक गए थे। कहते हैं कि अल्लाह की क़सम मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मुअत्तिबीन कुशेर की आवाज़ ख़ाब में सुनाई दे रही है। वे कह रहा था कि अगर हमें फ़ैसला का इख़्तेयार होता तो हम कभी यहां इस तरह क़तल न किए जाते। मुअत्तिबीन कुशेर अंसारी सहाबी थे और बैअत उक़्बा, ग़ज़्व-ए-बदर और उहद में शामिल हुए थे। मैंने जब इस तरह ख़ाब की हालत में देखा तो उनके इस जुमला को याद कर लिया। इस अवसर के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ

(आले इमरान : 155) कि फिर उसने तुम पर ग़म के बाद तसकीन बख़्शने की ख़ातिर ऊँघ उतारी जो तुम में से एक गिरोह को ढाँप रही थी जबकि एक वह गिरोह था कि जिन्हें उनकी जानों ने फ़िक्रमंद कर रखा था। वह अल्लाह के बारे में जाहिलियत के गुमानों की तरह नाहक़ गुमान कर रहे थे। वह कह रहे थे क्या अहम फ़ैसलों में हमारा भी कोई अमल दख़्ल है? तू कह दे कि यक़ीनन फ़ैसले का इख़्तेयार पूर्णतः अल्लाह ही को है।

हज़रत काब बिन अम्र अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया है कि ग़ज़्व-ए-उहद के दिन एक अवसर पर में अपनी क़ौम के 14 आदमियों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास था इस पर हम पर ऊँघ तारी हुई जो बतौर अमन के थी अर्थात बड़ी सुकून वाली ऊँघ थी। जंगी हालत थी लेकिन वह ऐसी ऊँघ थी जो हमें सुकून दे रही थी। कोई शख़्स ऐसा नहीं था जिसके सीने से धूँकनी की तरह ख़र्राटों की आवाज़ न निकल रही हो। कहते हैं कि मैंने देखा कि बिशर बिन बरा बिन मारूर के हाथ से तलवार छूट कर गिर गई और उन्हें तलवार गिरने का एहसास भी न हुआ हालाँकि मुशरेकीन हम पर चढ़े आ रहे थे।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 310 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(ओसोदुल गाबा भाग 5 पृष्ठ 216 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस आयत की तफ़्सीर वर्णन करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने यह लिखा है कि बहरहाल यह हो सकता है कि उनको यह महसूस हुआ हो कि तलवार गिर गई क्योंकि उस वक़्त ऐसी हालत में नींद तो थी लेकिन उनके हाथों में जो हथियार थे मज़बूती से क़ायम होते थे। ये गिरने लगते थे तो झटका लगता था। बहरहाल यहां शब्द نُعَاس नुआस प्रयोग हुआ है। इस की तफ़सीर इस तरह है कि اَمَنَةً نُّعَاسًا अलग अलग पहलूओं से इसके जो अनुवादक हैं उनका ख़ुलासा यह है। संक्षिप्त में ये अर्थ बनेगा कि ग़म के बाद तुम पर ऐसा सुकून नाज़िल फ़रमाया जिसे नींद कह सकते हैं या ऐसी ऊँघ अता की जो अमन की हामिल थी या वह अमन दिया जो नींद का सा असर रखता था या नींद में शामिल था। اَمَنَةً نُّعَاسًا का यह मतलब है कि ऊँघ। वक़्ती तौर पर यूं सिर झुका कर ग़ोता खा जाने को भी कहते हैं लेकिन यहां नुआस का अर्थ इस किस्म की ऊँघ नहीं है बल्कि वह अवस्था है जो बेदारी और नींद के मध्य की अवस्था होती है। सोने से पहले एक बीच की ऐसी मंज़िल आती है जहां समस्त आसाब को एक सुकून मिल जाता है और वही गहरा सकून है। अगर वह सकून इसी तरह जारी रहे तो फिर नींद में तबदील हो जाता है। ऐसी हालत में इन्सान अगर चल रहा है तो गिरेगा नहीं। गिरने से पहले उसे झटका लग जाता है और वह जान लेता है कि मैं किस अवस्था में था लेकिन अगर नींद आ जाए तो फिर अपने आसाब पर, अपने आज़ा पर कोई इख़्तेयार नहीं रहता। बहरहाल हो सकता है कि بِشْر بِن بَرَاء को इस हालत में इस तरह की गहरी नींद भी आ गई हो लेकिन बावजूद जंग की हालत के वह थी सुकून की अवस्था और इन्सान गिर जाता है और अगर उसको सही भी माना जाए तो इसी वजह से उस के हाथ ज़रा ढीले हुए तो तलवार गिर गई। बहरहाल यह हालत ऐसी होती है जिस में फ़ौरी एहसास भी हो जाता है कि मैं गहरी नींद में जा रहा हूँ और फिर इन्सान झटके से जाग जाता है। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने तुम्हें एक ऐसी सुकून की हालत अता की जो नींद से समानता थी परंतु नींद की तरह इतनी गहरी नहीं थी कि तुम्हें अपने ऊपर, अपने अंगों पर कोई इख़्तेयार नहीं रहे। वे सकेंत तो बख़्श रही थी परंतु तुम्हें बेकार नहीं कर रही थी।

इसी तरह हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं और यह बुख़ारी की हदीस में है कि उहद के दिन ठीक जंग में हमको ऊँघ ने आ दबाया और यह वह ऊँघ है जिसका वर्णन पहले हो चुका है। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि तलवार मेरे हाथ से गिरने को होती थी। मैं थाम लेता था। अतः यह हदीस बता रही है कि ऐसी नींद की अवस्था नहीं थी कि हाथों से चीज़ें नीचे जा पड़ें या चलते-चलते हम गिर जाएं। तसकीन थी, सकेंत थे मगर फिर भी एक हद तक हमें अपने आज़ा पर इख़्तेयार हासिल था। फिर गिरने को होती थी तो फिर थाम लेते थे। अर्थात यह ऊँघ का एक हिस्सा कोई अचानक यूंही नहीं आया बल्कि यह एक अवस्था थी जो उन लोगों पर कुछ अरसा रही।

तिरमेज़ी अबवाब अल्तफ़सीर में हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि ग़ज़्व-ए-उहद के दिन मैं सिर उठा कर देखने लगा तो हर आदमी ऊँघते-ऊँघते अपनी ढाल के नीचे झुक रहा था। जागने की वजह से या थकावट की वजह से उन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की बहुत बुरी हालत हो गई थी और ऐसी हालत में अल्लाह तआला की तरफ़ से यह सुकून की अवस्था मिल रही थी। कहते हैं कि अर्थात ऐसा ही नज़ारा हुआ कि जो आम था। कोई संयोगवंश एक थके हुए मुजाहिद के ऊपर इतलाक़ पाने वाली अवस्था नहीं थी बल्कि समस्त मुजाहेदीन जो हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ जंग में दुश्मन के ख़िलाफ़ बरसर-ए-पैकार थे इन सब पर अचानक गोया आसमान से एक चीज़ उत्तरी है और इस हालत ने उनको ढाँप लिया। इस वक़्त उनको उस चीज़ की, सुकून की, अपने आसाब को रिफ़्रेश करने की, उनको ताज़ा-दम करने की शदीद आवश्यकता थी और यह सोने का वक़्त नहीं था और जब ऐसी हालत हो, जब ऐसी थकावट की हालत हो तो ऐसी हालत इन्सानों पर तारी हो जाती है। बहरहाल सारी क़ौम एक साथ एक ऐसी नींद की हालत में चली जाए जबकि लड़ाई हो रही हो और दुश्मन से सख़्त ख़तरा भी दरपेश हो यह एजाज़ है। एक मोजिज़ा है। यह कोई संयोगवंश हादसा नहीं है। कुछ लोगों के साथ हो जाता है लेकिन यह कोई इत्तिफ़ाक़ी हादिसा नहीं। यह एक मोजिज़ा है और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से एक ख़ास सुकून की अवस्था उनको उस वक़्त अता की गई थी।

(उद्धृत दरसुल क़ुरआन वर्णन फ़र्मूदा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे 6 रमज़ानुल मुबारक, 17 फ़रवरी 1994 ई.)

अल्लामा अब्दुर्रज़ाक ने ज़ुहरी से रिवायत करते हुए वर्णन किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रुख-ए-अनवर पर उहद के दिन तलवार से सत्तर वार किए गए। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इन तमाम के उपद्रव से बचाया। इब्ने हिज्र अस्कालनी वर्णन करते हैं कि यह भी एहतेमाल है कि ज़ुहरी ने सत्तर से हक़ीक़तन सत्तर ही मुराद लिए हों या उस कसरत में मुबालग़ा मुराद हो सकता है।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 198 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "लड़ाई में सबसे बहादुर वह समझा जाता था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास होता था क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बड़े ख़तरनाक मुक़ाम में होते थे। सुब्हानल्लाह क्या शान है।

उहद में देखो कि तलवारें पर तलवारें पड़ती हैं। ऐसी घमसान की जंग हो रही है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो बरदाश्त नहीं कर सकते परंतु ये मर्द-ए-मैदान सीना-सामने कर के लड़ रहा है। इस में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का क़सूर नहीं था। अल्लाह तआला ने उनको बख़्श दिया। बल्कि इस में भेद यह था कि ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शुजाअत का नमूना दिखाया जाए।" आप फ़रमाते हैं कि "एक अवसर पर तलवार पर तलवार पड़ती थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नबुव्वत का दावा करते थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह मैं हूँ। कहते हैं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम " के माथे पर सत्तर घाव लगे परंतु घाव हल्के थे। यह ख़ुल्क़-ए-'अज़ीम (आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उदाहरण) था।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 115, ऐडीशन 2022 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गढ़े में गिरने की अवस्था के बारे में रिवायत इस तरह वर्णन हुई है कि अबू आमिर फ़ासिक़ ने मैदान उहद में बहुत से गढ़े जगह-जगह खोद दिए थे ताकि मुस्लमान बे-ख़बरी में उनमें गिरते रहें और नुक़्सान उठाते रहें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी बेख़बरी में उनमें से एक गढ़े में गिर पड़े। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बेहोशी हो गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दोनों घुटने ज़ख़्मी हो गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने जल्दी से बढ़कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हाथों में लिया और हज़रत तल्हा बिन उबैद उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ऊपर उठा कर बाहर निकाला। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गिरने का कारण अत्याचारी इब्ने कय्यमा था क्योंकि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हमला कर के तलवार का वार किया था। तलवार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गर्दन पर पड़ी। जबकि तलवार ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कोई असर नहीं किया परंतु उस की चोट से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गर्दन मुबारक में इतना सख़्त झटका आया कि इस के बाद एक महीने या इस से अधिक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गर्दन में तकलीफ़ रही। साथ ही उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर पत्थर चलाने शुरू किए जिनमें से एक पत्थर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पहलू में लगा। उधर उत्बा बिन अबैय बिन वक़्क़ास ने जो हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो का भाई था उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर एक पत्थर खींच मारा जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह पर लगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निचला रुबाई दाँत अर्थात सामने वाले दो दाँतों और नोकीले दाँत के दरमयान वाला दाँत टूट गया। साथ ही इस से निचला होंट फट गया। इमाम इब्ने हिज्र अस्कलानी वर्णन करते हैं कि दाँत का एक टुकड़ा टूटा था जड़ से नहीं उखड़ा था। हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो जो इसी उत्बा के भाई थे उन्हें जब इलम हुआ कि नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हमला करने वाला उनका यह भाई था तो वह जोश-ए-इंतेक़ाम में इसका पीछा करते हुए लश्कर के अंदर घुस गए। वे वर्णन करते हैं कि इस वक़्त जितनी हिर्स मुझे उसे क़तल करने की थी शायद ही दुनिया में किसी और चीज़ की कभी इतनी हुई हो लेकिन उत्बा उन्हें चकमा देकर निकल गया। वह वापिस पलट कर एक-बार फिर उस की तलाश में गए लेकिन वह हर बार चक्मा देता रहा। और जब तीसरी मर्तबा जाने लगे तो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया हे ख़ुदा के बंदे! क्या तेरा जान देने का इरादा है? हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि यूं नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मना फ़रमाने से मैं रुक गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उत्बा बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़ यह दुआ की कि اَللّٰھُمَّ لَا یَحُوْلُ عَلَیْہِ الْحَوْلُ حَتّٰی یَمُوْتَ کَافِرًا۔ हे अल्लाह इस पर एक साल न गुज़रे कि वे काफ़िर होने की हालत में मर जाए। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह दुआ इस तरह क़बूल फ़रमाई कि इसी दिन हज़रत हातिब बिन अबी बल्ता रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस को क़तल कर दिया। हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि जब मैंने उत्बा बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो की शर्मनाक बहादुरी देखी तो मैंने तुरंत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा कि उत्ब किधर गया है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस सिम्त इशारा किया जिस तरफ़ वह गया था। मैं फ़ौरन उसके पीछा करने में रवाना हुआ यहां तक कि एक जगह मैं इस को पाने में कामयाब हो गया। मैंने फ़ौरन ही इस पर तलवार का वार किया जिससे उसकी गर्दन कट कर दूर जा गिरी। मैंने बढ़कर उस की तलवार और घोड़े पर क़बज़ा किया और उसे लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह ख़बर सुनकर दो मर्तबा यह फ़रमाया। رَضِیَ اللّٰہُ عَنْکَ۔ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْکَ۔ अर्थात अल्लाह तुमसे राज़ी हो गया। अल्लाह तुमसे राज़ी हो गया।

इस हमले में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर पर जो कवच था वह भी टूट गया तथा दुश्मन के मुसल्सल हमलों में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र मुख भी ज़ख़्मी हो गया और जल्द फट गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख पर वार करने वाला एक हमला-आवर अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ोहरी था जिसने बाद में इस्लाम क़बूल कर लिया।

(सीरतुल हल्बिया बहग 2 पृष्ठ 317 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(फ़तह अल्बारी भाग 7 पृष्ठ 464 हदीस 4070 क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची)

यह तफ़सील मज़ीद चल रही है। इन शा अल्लाह आइन्दा आगे वर्णन होगी।

इस वक़्त मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन भी करना चाहता हूँ। पहला वर्णन श्रीमान अबुल हल्मी मुहम्मद उकाशा आफ़ फ़लस्तीन

का है। शरीफ़ ओदा साहिब उनके बारे में लिखते हैं कि चंद दिन पूर्व ग़ज़ा के इलाक़े के हमारे अहमदी भाई मुहम्मद उकाशा साहिब को निहायत संगदिली से शहीद कर दिया गया है। उनकी लाश उनके घर से कुछ फ़ासले पर मिली है।इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूम निहायत मुख़्लिस अहमदी थे। उम्र पछत्तर वर्ष थी। अपने असली गांव से हिज्रत कर के ग़ज़ा के इलाक़ा जबालिया में पनाह गज़ीनों के कैंप में रहते थे। उनके सात बेटे और पाँच बेटियां और तेंतीस पौते पौतिया और नवासे नवासियाँ हैं। उनके पौते बताते हैं कि कई हफ़्तों से उनसे संपर्क टूटा हुआ था। आरिज़ी जंग बंदी के दौरान उन्हें ढूँढने गया तो उन्हें घर में नहीं पाया। फिर उनके घर से सौ मीटर दूर बिखरी हुई लाशों में उनकी लाश मिली। उन्हें सिर में गोलीमार कर शहीद किया गया था।

ग़ज़ा के एक अहमदी यासिर शाहीन साहिब कहते हैं कि मरहूम ने दस वर्ष पूर्व डिश लगवाई तो मुझे कहा कि एम.टी.ए चैनल ढूंढ़ने में मेरी मदद करो। इस अवसर पर उनके माध्यम से मुझे अहमदियत का पता चला। कुछ अरसा बाद उन्होंने जमात के बारे में मुझे मज़ीद परिचय करवाया और कुछ कुतुब प्रदान कीं। फिर कुछ समय तक हमारे मध्य बेहस चलती रही। इस के बाद मैंने इस्तख़ारा किया और अपनी पत्नी के साथ बैअत की तौफ़ीक़ मिली। मेरी बैअत पर मुहम्मद उकाशा साहिब बहुत ख़ुश थे। इस के बाद हमारे ताल्लुक़ात मज़बूत होते गए। वह कई-कई घंटों तक मुझे मुख़्तलिफ़ क़ुरआन की आयात की तफ़सीर बताते। तफ़सीर-ए-कबीर से इक़्टेबासात सुनाते और नासिख़ मंसूख़ जैसे मसायल समझाते। उनका अनुभव वर्णन निहायत पसंदीदा था। एक अरसा से एक किताब लिख रहे थे और मुझे बुला कर किताब सुनाते और उसे बेहतर करते और मुख़्तलिफ़ विषयों पर बहस करते। उनका इरादा था कि अपने घर को बड़ा करके इस में एक लाइब्रेरी बनाएँ जिसमें जमाअती कुतुब की फ़ोटो कापियां बनाएँ परंतु उनका ख़ानदान अहमदियत की वजह से उन पर ज़ुलम करता था इसलिए उनका यह इरादा पूरा न हो सका। इन्ही के माध्यम से ग़ज़ा जमात के साथ मेरा परिचय हुआ। हम सब उनकी बैठक में उनसे मुलाक़ातें करते। आख़िरी सालों में ख़राबी सेहत के बायस अक्सर घर में ही रहते थे और बमुश्किल हरकत करते थे।

ग़ज़ा के एक और अहमदी हैं ईवज़ साहिब। कहते हैं मरहूम का क़द ऊंचा, शरीर पतला और दाढ़ी सफ़ैद थी। उनकी नेकी और तक़्वा का असर फ़ौरन ही बात करने वाले पर हो जाता था। हमेशा अल्लाह के जिकर और जमाअती कुतुब पढ़ने में व्यस्त रहते थे। उनकी बड़ी ख़ाहिश थी कि उनके घर के पास जमाअत की एक मस्जिद बने। 2014 ई. की जंग के बाद उन्होंने अपने हाथ से एक मज़मून लिखा जिसमें लिखा कि एक दिन आने वाला है जब क़ब्रों पर बमबारी होगी और उनके कुतबे और पत्थर इधर-उधर बिखर जाएंगे। फिर वास्तव में इसी तरह हुआ। बावजूद मुश्किलात में घिरे हुए होने के हर मिलने वाले से हमेशा मुस्कुरा कर मिलते थे। बहुत सख़ी, ज़हीन और दूसरों की सोच को बहुत जल्द पढ़ लेने वाले थे।

एक डाक्टर यूसुफ़ साहिब हैं। कहते हैं कि भाई अबू हल्मी बहुत मुख़्लिस और सच्चे अहमदी थे। अहमदी होने से पहले ही उनकी सोच और मुआमलात अहमदियों वाले थे। इसलिए जमाअत का इलम होते ही आपने फ़ौरन बैअत कर ली। बैअत के बाद मशाइख़ और इर्द-गिर्द के लोगों से जमाअत के बारे में बात चीत करते रहते थे जिसकी वजह से उन्हें अपने क़रीबियों की तरफ़ से भी बहुत मुख़ालेफ़त और तकलीफ़ का सामना करना पड़ा। आख़िरी आयु में बैसाखियों के सहारे चल कर जुमा और इज्लासात में सबसे पहले हाज़िर होते थे हालाँकि उन्हें बहुत तकलीफ़ और रास्ते में मुख़ालेफ़ीन की वजह से ख़तरात का सामना भी होता था। चंदे भी दूसरों से पहले अदा करते हालाँकि तंगदस्त थे। उनकी तमन्ना थी कि जमाअत और इस के अफ़्क़ार सारी दुनिया में ग़ालिब आ जाएं क्योंकि इसी में इन्सानियत की सारी मुश्किलात का हल है। उनका इरादा था कि अपना घर और ज़मीन का एक टुकड़ा जमाअत को दे दें ताकि वहां मस्जिद और जमाअती मर्कज़ बने परंतु मुख़ालेफ़त रिश्तेदार इस में रोक बन गए। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी दुआओं का वारिस बनाए। उनके बच्चे और रिश्तेदार अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम को समझने वाले हों और फिर अमन और सलामती देखने वाले हों। अल्लाह तआला उनके इलाक़ों में अमन क़ायम फ़रमाए। ज़ालिम के हाथ रोके और ज़ुलम का अंत फ़रमाए।

इज़राइल अब लुबनान की सरहद के साथ भी हिज़्बुल्लाह के ख़िलाफ़ महाज़ खोल रहा है और जिससे हालात मज़ीद ख़राब होंगे। इसी तरह अमरीका और बर्तानिया ने होसी यमनी क़बायल के ख़िलाफ़ जो महाज़ खोला है ये सब चीज़ें जो हैं ये जंग को मज़ीद वसीअ कर रही हैं, फैला रही हैं और अब तो बहुत सारे लिखने वालों ने लिख दिया है और लिख रहे हैं कि विश्वव्यापी जंग के आसार बड़े क़रीब नज़र आ रहे हैं। अतः दुआओं की बहुत आवश्यकता है अल्लाह तआला इन्सानियत को अक़्ल और समझ अता फ़रमाए।

एक और वर्णन है।

अमतुल नसीर ज़फ़र साहिबा जो हैदर अली ज़फ़र साहिब मुरब्बी सिलसिला जर्मनी की पत्नी मरहूमा हैं।

पिछले दिनों वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। उनके पीछे रहने वालों में उनके ख़ावंद के इलावा दो बेटे और एक बेटी शामिल हैं। उनके नाना हज़रत चौधरी अमानुउल्लाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। हैदर अली ज़फ़र साहिब लिखते हैं कि मैं मुरब्बी था, फ़ील्ड में रहा हूँ तो मुख़्तलिफ़ औक़ात में तक़रीबन बारह साल ये मुझ से अलैहदा रही हैं लेकिन कभी कोई शिकवा नहीं किया और एक दफ़ा किसी बात पर कभी कुछ डिस्टर्ब रही हैं। जब मैंने पूछा पहले क्यों नहीं बताया तो उन्होंने कहा इसलिए नहीं बताया कि आपको वहां अपने मैदान-ए-अमल में किसी किस्म की डिस्टरबंस न हो। फ़्रैंकफ़र्ट के हल्क़ा बैतुल सुबूह की सदर भी रहीं। ख़िलाफ़त जुबली के वर्ष में उनको बतौर सदर लजना फ़्रैंकफ़र्ट में ख़िदमत करने का अवसर मिला। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से नमाज़, रोज़ा की बहुत पाबंद थीं। तहज्जुद गुज़ार थीं। क़ुरआन-ए-करीम की बाक़ायदा तिलावत करने वाली, बहुत सदक़ा ख़ैरात करने वाली और चंदों की समय पर अदायगी करने वाली थीं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन है नसीम अख़्तर साहिबा पत्नी हबीबुल्लाह काहलों साहिब घटियालियाँ का है। पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। वसीयत का समस्त हिसाब वफ़ात तक बिल्कुल मुकम्मल था। हिस्सा जायदाद अपनी ज़िंदगी में अदा कर दिया था। पीछे रहने वालों में पति के इलावा छः बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। एक बेटी आपकी ज़िंदगी में वफ़ात पा गई थी। इस के बच्चों को भी बड़ी मुहब्बत से रखा है, तालीम दिलवाई। बेटों में से चार वाकफ़ीन ज़िंदगी हैं। उनके एक बेटे नवीद आदिल साहिब मुरब्बी सिलसिला लाइबेरिया के मिशनरी इंचार्ज हैं और मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपनी वालिदा के जनाज़े पर शामिल नहीं हुए। यह कहते हैं कि आपके ख़ानदान में अहमदियत आपके वालिद मौला बख़्श साहिब के माध्यम से आई जिन्हों ने ख़िलाफ़त सानिया के दौर में बैअत की थी। उनका दीनी इलम अच्छा था। बाज़-औक़ात मिलने वाले आपसे पूछा करते थे कि आपकी तालीम कितनी है लेकिन दुनियावी तालीम भी बहुत मामूली थी। दीनी इलम के शौक़ के बारे में अक्सर बताया करती थीं कि यह उनके वालिद मुहतरम की वजह से है क्योंकि वह जो भी दरस इत्यादि मस्जिद में सुनकर आते थे, हमें घर आकर ज़रूर बताते थे। अगर घर में इस तरह डिस्कशन हो रही हो तो वालदैन का बड़ा असर होता है। जमात और ख़िलाफ़त से बेपनाह मुहब्बत थी। बहुत निडर और दीनी ग़ैरत रखने वाली थीं। जमात और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ किसी किस्म की बात बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं। नमाज़ों की बहुत पाबंद, तहज्जुद गुज़ार, एतेकाफ़ भी बाक़ायदा बैठा करती थीं सिवाए आख़िरी चंद सालों के। रमज़ान के दिनों में क़ुरआन-ए-करीम के भी तीन चार दौर मुकम्मल किया करती थीं। चलते फिरते दुरूद शरीफ़ और वर्णन इलाही किया करती थीं। एक दफ़ा अचानक गिरने की वजह से उनकी टांग टूट गई। यह लिखने वाले उनके बेटे आदिल साहिब जो मुरब्बी हैं कहते हैं कि इस वक़्त उनके छोटे भाई वहां गए हुए थे और ऐन उस वक़्त जब उनकी वापसी थी तो इस दिन यह गिरी हैं और टांग टूट गई तो उन्हों ने उनको कहा कि तुम अपनी डयूटी पर जाओ। और साथ वाले दूसरे गांव से अपने दामाद को बुलाया। उस के साथ हस्पताल गईं और अपने बेटे को कहा कि तुम्हारा काम यह है कि तुम्हें दीन की ख़िदमत के लिए फ़ौरी तौर पर जाना चाहिए।

नवीद आदिल साहिब ही कहते हैं कि सात साल बाद छुट्टी पर गया। उनसे मुलाक़ात हुई तो उस वक़्त उन्होंने नसीहत की कि ज़िंदगी मौत अल्लाह के हाथ में है। कोई पता नहीं किसी का कि कब वक़्त आजाए। इसलिए अगर ऐसा वक़्त आता है तो तुमने डियूटी छोड़ के नहीं आना। वहीं रहना है जहां तुम हो। इसलिए यह अपने सैंटर में थे और यह वालिदा के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके।

अगला वर्णन श्रीमती मुबारका बेगम साहिबा पत्नी रशीद अहमद ज़मीर साहिब बशीराबाद स्टेट का है। यह भी पिछले दिनों वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ आपके वालिद मुहतरम बहावल हक़ साहिब के माध्यम हुआ जिन्हों ने 1948 ई. में हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत की थी। इंतेहाई ख़ूबियों की मालिक थीं। पांचों वक्त की नमाज़ों की पाबंद, तहज्जुद की पाबंद, बेलौस जमाअती ख़िदमत करने वाली, नेक पाक-बाज़ महिला थीं। कई जमाअती ओहदों पर फ़ायज़ रहीं। उनको ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ मिली। लजना की सदर भी रहीं। तक़रीबन सारी ज़िंदगी ही जमाअती ख़िदमत में गुज़ारी है। सैंकड़ों बच्चों और बच्चियों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाया। पर्दे का बहुत ख़्याल करती थीं। बच्चियों को भी पर्दे की तलक़ीन करती थीं। ख़िदमत-ए-ख़लक़ के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेतीं। ग़रीबों और बेवगान की आवश्यकता का ख़्याल रखतीं। कई ग़रीब और यतीम बच्चियों की शादियों में उनकी मदद की। कई बच्चियों को सिलाई कढ़ाई सिखाई। हर जुमा के रोज़ जुमा के वक़्त से दो घंटे क़बल मस्जिद चली जाती थीं और औरतों वाले हिस्सा की सफ़ाई ख़ुद करतीं और इस के बाद नवाफ़िल अदा करतीं। निहायत ईमानदार थीं। कई महिलाएं अपना ज़ेवर और नक़दी उनकी ईमानदारी की वजह से उनके पास अमानत के तौर पे रखवा देती थीं। कभी उन्होंने किसी से लड़ाई नहीं की। सख़्ती नहीं की। बदतमीज़ी नहीं की। निहायत आला अख़लाक़ की मालिक थीं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। जब अपनी वसीयत की है तो साथ ही बेटियों की वसीयत करवाई। इसी तरह गांव में कई महिलाओं को भी निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल करवाया। पीछे रहने वालों में उनके शौहर के इलावा एक बेटा और पाँच बेटियां हैं। श्रीमान उसमान अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला रकीम प्रैस सीरालियून और श्रीमान सआदत अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला बुर्कीना फासो की सास थीं और उनकी दोनों बेटियां जो हैं मुरब्बियान से ब्याही हुई हैं। यह अपनी माँ के आख़िरी वक़्त में वहां मौजूद नहीं थीं। अपनी अपनी ख़िदमत की जगह पर थीं। उनकी बेटी आसिफ़ा साहिबा कहती हैं कि मैं अपने शौहर उसमान अहमद साहिब के साथ सीरालियून में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रही हूँ। मैदान-ए-अमल में होने की वजह से मैं वालिदा के जनाज़े और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सकी। इसी तरह मेरी छोटी बहन मर्यम बुशरा भी बुर्कीना फासो में है और वह भी शामिल नहीं हो सकी। अल्लाह तआला उनको सब्र और हौसला अता फ़रमाए और मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी दुआएं उनकी औलाद के हक़ में कबूल फ़रमाए आमीन।

★ ★ ★

मुस्लेह मौऊद का नाम फ़ज़ल-ए-उम्र क्यों रखा गया?

(हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की एक पहचान हज़रत मसीह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाई है कि इल्हाम के द्वारा मुझ पर उस का एक नाम फ़ज़ल-ए-उम्र भी ज़ाहिर किया गया है। अर्थात उसकी पहचान इन फ़ज़ीलातों की मौजूदगी से हो सकेगी जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो (बिन ख़त्ताब) में पाई जाती हैं और उनमें एक फ़ज़ीलत तो ऐसी है कि वह सिवाए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के दुनिया के किसी और इंसान में पाई ही नहीं जा सकती अर्थात

(1) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरी आमद के ज़माना में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो का दूसरा ख़लीफ़ा होना जैसा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो (बिन ख़त्ताब) प्रथम आमद के समय हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूसरे ख़लीफ़ा थे। यह फ़ज़ल या फ़ज़ीलत ऐसी मज़बूत और ऐसी निष्पक्ष है कि हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र से न तो पहले कोई ऐसा शख़्स हुआ है जिसे हज़रत मसीह मौऊद का दूसरा ख़लीफ़ा होने का गर्व प्राप्त हो न आगे कोई ऐसा व्यक्ति पैदा हो सकता है जो इस पद पर सरफ़राज़ हो सके। तीसरा चौथा पांचवां बीसवां उद्देश्य हर नंबर का ख़लीफ़ा इस सिलसिला में आ सकता है परंतु नहीं आ सकता तो दुसरा। रहे ग़ैर-मुबाईन (खिलाफ़त के हाथ पर बैत नहीं करने वाले लाहोरी जमाअत के लोग) सो वे तो सिरे से ख़िलाफ़त ही के क़ायल नहीं और जो कुछ और लोग मुस्लेह मौऊद होने के दावा करने वाले हैं इन सब में से किसी एक को भी जमाअत अहमदिया की ख़िलाफ़त बहैसीयत दूसरे ख़लीफ़ा मसीह मौऊद होने के हासिल नहीं और न उन्होंने कभी ऐसा दावा किया। अतः यह एक ऐसा मज़बूत निर्धारित निशान मुस्लेह मौऊद के लिए वर्णन किया गया है जिस में संदेह का दख़ल ही नहीं रहा। और सिवाए एक इन्सान के कोई इस ओहदे का मुद्दई ही नहीं हो सकता। और इस सिफ़ाती नाम से ही पता लग जाता है कि मुस्लेह मौऊद कौन है? और अगर ग़ौर किया जाए तो ऐसी मुहकम अलामात हैं। (1) आपका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बीच गोत्र और नसल से होना (2) आपका नौ वर्ष की सीमा के अंदर पैदा होना (3) आपका बशीर अव्वल के तुरंत बाद जन्म होना (4) और आपका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात का दूसरा ख़लीफ़ा होना।

(2) इस विशेष फ़ज़ल के सिवा कुछ और फ़ज़ीलतें भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो (बिन ख़त्ताब) की हैं जो हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र में पाई जाती हैं। इसलिए जिस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में फ़ुतूहात बहुत बड़ी हो गई थीं और इस्लाम ने बहुत तरक़्क़ी की थी और अक्सर सभ्य प्रगति वाले देशों में इस्लामी फ़ौज और मुबल्लेग़ीन-ए-इस्लाम जा पहुंचे थे, इसी तरह हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र के ज़माना में भी अहमदियत और इस्लाम के मुबल्लिग दुनिया के अक्सर देशों और ज़मीन के अक्सर इलाकों और किनारों तक पहुंच चुके हैं और सिलसिले की किताबें, हालात और अख़बारात अक्सर बैरूनी और अजनबी देशों में नफ़ुज़ कर चुके हैं। और अहमदियत की फ़ुतूहात, रौब, वुसअत और ग़नीमत मुहताज वर्णन नहीं है। तथा हुज़ूर के उलूम ने लोगों को निहायत दर्जा सेराब कर दिया है। इसी तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक ख़ाब है कि मैंने देखा कि एक कुँआं है जिस पर डोल रखा है। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक दो डोल नातवानी के साथ कुँवें में से निकाले। फिर वे डोल एक चर्सा बन गया और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस से इतना पानी निकाला कि आदमी और ऊंट सब सेराब हो गए। अतः यह दूसरी समानता है हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र की हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ।

(3) इसी तरह एक दफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि मैंने दूध पिया यहां तक कि मेरे नाख़ुनों तक उसकी तरी पहुंच गई। फिर मैंने अपना बचा हुआ दूध उमर बिन ख़त्ताब को दे दिया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि इस की ताबीर क्या है? फ़रमाया इस से मुराद इलम है। अतः जिस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को नबुव्वत के इलम में से हिस्सा मिला था इसी तरह हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र को भी हिस्सा मिला और दोस्त दुश्मन उस करामत के गवाह हैं ज़्यादा विस्तार की आवश्यकता नहीं। केवल यह याद रखना काफ़ी होगा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के काम करने की ताक़त और आप जनाब का इलम जिनका हमने नंबर 2 और नंबर 3 में वर्णन किया है ऐसा ही हाल हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र का भी है कि जस्मानी काम की क़ुव्वत और इलमी क़ुव्वत दोनों को मुज़ाहरा क़रीबन हर क़ादियान में रहने वाले अहमदी के सामने होता रहता है और इसी की तरफ़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इस इलहाम में इशारा है कि एक फ़र्ज़ंद तुम्हें अता किया जाएगा जो क़वीउल् ताकतेन होगा और यह कि वह उलूम ज़ाहिरी और बातेनी से पुर किया जाएगा।

(4) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी इस बात पर भी गर्व किया करते थे कि मैंने बाअज़ बातें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ कीं तो मेरे निवेदन के बाद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ क़ुरआन कीआयतें भी नाज़िल हो गईं। कुल मिलाकर उनके एक आयत हिजाब भी है। हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र की उम्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में इतनी तो न थी कि वह हुज़ूर को कोई मश्वरा दिया करते लेकिन एक रंग इल्हाम के वारिद होने का यहां भी पाया जाता है। इस की मिसाल वह स्वप्न हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र का है जिसमें आपने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को إِنِّي مَعَ الْأَفْوَاجِ آتِيكَ بَغْتَةً वाला इल्हाम हुआ है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से दरयाफ़त किया गया तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हाँ आज रात वाक़ई मुझे यह इल्हाम हुआ है। अतः जिस तरह हज़रत उम्र का इल्हाम रब्बानी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह्यी की सूरत में ज़ाहिर हुआ इसी तरह हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र का स्वप्न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वह्यी की सूरत में अवतरित हुआ। यह चौथी समानता थी।

(5) पांचवीं समानता यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी दुनिया में उनके जन्नती होने की खुशखबरी दे दी थी। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र को अपनी औलाद में होने की वजह से जन्नत की खुशख़बरी इसी दुनिया में दे दी। जब आप अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया कि मक़बरा बहिश्ती में दाख़िल होने के लिए मेरे विषय में और मेरे परिवार वालों की निसबत ख़ुदा ने इस्तिस्ना रखा है .. और शिकायत करने वाला मुनाफ़िक़ होगा। अर्थात मेरी औलाद और मेरी बीवी को ख़ुदा तआला ने जन्नती बनाया है। और मुझे उनके बहिश्ती होने की इत्तिला उस की तरफ़ से मिल चुकी है। इसके अतिरिक्त विशेष तौर पर भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम को जन्नती होने की बिशारत हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र के तव्वुलुद होने से पहले ही ईलहामन बता दी गई थी। जैसे कि फ़रमाया "तब अपने नफ़्सी नुक़्ता आसमान की तरफ़ उठाया जाएगा" यानी मौलवी के मिस्री कथन के खिलाफ़ के मौऊद के बेटे का अंजाम अच्छा होगा और उसकी रूह का रफ़ा आसमान की तरफ़ होगा।

(इस अवसर पर एक ज़िमनी बात वर्णन करनी ज़रूरी है कि पैग़ामी कहा करते हैं कि औरों के लिए तो यह मक़बरा बहिश्ती था मगर मसीह मौऊद के परिवार वालों के लिए यह ख़ानदानी मक़बरा है क्योंकि उनकी तरफ़ से कोई वसीयत की रक़म दाख़िल नहीं की गई। इसके उत्तर में याद रखना चाहिए कि हुज़ूर अनवर ने मक़बरा की बुनियाद रखने के वक़्त अपनी जायदाद में से उस वक़्त के हिसाब से एक हज़ार रुपया की ज़मीन चंदा में अर्थात वसीयत

में दी थी। हुज़ूर को तो ख़ुद वसीयत की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि आपको तो फ़रीक़ैन सर्व सहमति से जन्नती मानते हैं । एक हज़ार रुपय की ज़मीन हुज़ूर ने दरअसल अपने परिवार वालों ही की तरफ़ से दी थी

(6) छट्ठी समानता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ज़्ल-ए-उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के मिज़ाजों की मुमासिलत है। हज़रत उम्र की ग़ैरत दीनी और जलाल कौन है जो नहीं जानता और यहां हज़रत फ़ज़्ल-ए-उम्र के बारे में यह इल्हाम है "जिसका नुज़ूल बहुत मुबारक और जलाल-ए-इलाही का मोजिब होगा " । तथा ख़ुदा की रहमत और गय्यूरी ने उसे कलमा-ए-तमजीद से भेजा है।"

सब जमात के लोग जानते हैं कि दीनी मुआमला में ग़ैरत और जलाल हज़रत फ़ज़्ल-ए-उम्र की एक नुमायां ख़ुसूसियत है जिस तरह कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की थी।

(7) सातवीं समानता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हज़रत फ़ज़्ल उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की यह है कि आप भी मुहद्दिस हैं अर्थात मुल्हम और हुज़ूर के हक़ में ख़ुदा ने फ़रमाया है कि हम इस में अपनी रूह डालेंगे (यानी कलाम)।

इसी तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पहली उम्मतों के मुहद्दिसों की तरह उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी एक मुहद्दिस और मुलहम है। इसलिए कई आयतों के मज़ामीन पहले हज़रत उम्र के दिल-ए-पर नाज़िल हुए फिर क़ुरआन में वह्यी की सूरत में आ गई। और कुछआपके रोया और कशूफ़ भी मशहूर हैं। इसी वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि अगर मेरे बाद फ़ौरन ही किसी नबी ने आना होता तो वह उम्र होता या यह कि मैं न अवतरित होता तो उम्र अवतरित होता। ये सब बातें नूर-ए-नबुव्वत और इल्हामी फ़ित्रत और वह्यी की बर्दाश्त की ताक़त पर दलालत करती हैं। और उन ही बातों को अहमदिया जमात के लोग हज़रत फ़ज़्ल-ए-उम्र में भी हमेशा से देख रहे हैं। एक दफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक शख़्स अपनी गाय लिए जाता थाकि थकान के मारे ख़ुद उस गाय पर सवार हो गया। गाय ने उस से कहा कि हम तो काशतकारी के लिए पैदा की गई हैं न कि सवारी के लिए। सहाबा ने अर्ज़ किया सुब्हानल्लाह क्या गाय बैल भी बोला करते हैं। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं तो इस बात को मानता हूँ बल्कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी मानते हैं हालाँकि वे दोनों इस मज्लिस में मौजूद न थे। इस हदीस से मालूम हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इलम में हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों साहिब कशफ़ थे क्योंकि सब मुआमला इस गाय की तक़रीर का कशफ़ी है। रहा उसका सबूत तो यह है कि एक दफ़ा अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जुमा का ख़ुतबा पढ़ते पढ़ते "ياسارية الجبل ياسارية الجبل" पुकार कर फ़रमाया। हाजेरीन ख़ुतबा हैरान हुए और बाद नमाज़-ए-जुमा इसके विषय में आपसे सवाल किया। आपने फ़रमाया कि मैंने इस्लामी लश्कर को मैदान-ए-जंग में सख़्त मुसीबत में देखा और साथ ही यह नज़ारा देखा कि अगर वह पहाड़ की तरफ़ पनाह ले लें तो बच सकते हैं। इस लिए मैंने सरदार लश्कर सारिया को आवाज़ दी कि पहाड़ की पनाह लो, पहाड़ की पनाह लो। कुछ मुद्दत के बाद जब इस लश्कर के लोग मदीना आए तो उन्होंने वर्णन किया कि हम दुश्मन के नर्ग़े में आगए थे लेकिन एक आवाज़ आई कि ई सारिया पहाड़ की पनाह लो। अतः हम इधर चले गए और तबाही से महफ़ूज़ हो गए। अतः यह मशहूर कशफ़ है जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का साहिब-ए-कशफ़ होना साबित करता है। इसी तरह अज़ान के कलिमात भी आपकी मार्फ़त ही हम मुस्लमानों को मिले हैं। अतः चूँकि वह ख़ुद मुहद्दिस, मुल्हम और साहिब-ए-कशफ़ थे इसलिए उनके लिए यह मानना क्या मुश्किल था कि बैल कलाम करता है या भेडिया बोलता है। हाँ आम लोगों के लिए यह बात वाक़ई काबिल-ए-फ़हम थी

इसी तरह हमारे फ़ज़्ल-ए-उम्र बचपन से साहिब-ए-कशफ़-ओ-रोया-ओ-इलहाम हैं और उनका सिर्फ़ एक يمزقهم वाला इलहाम ही 1914 ई. से आज तक हथौड़े की तरह अहले पैग़ाम को तोड़-तोड़ कर और परागंदा कर-कर के दाइमी हुज्जत उन लोगों पर पूरी कर रहा है और जब से यह दूसरी जंग-ए-अज़ीम शुरू हुई है तब से तो यह सिलसिला बहुत नुमायां और कसरत से हो गया है। यह सातवीं समानता हुई।

(8) आठवीं समानता हज़रत फ़ज़्ल-ए-उम्र की हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि إِنَّ اللهَ وَضَعَ الْحَقَّ عَلٰى لِسَانِ عُمَرَ अर्थात अल्लाह तआला ने हक़ को उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़बान पर रखा है। और एक जगह रिवायत है कि ख़ुदा ने हक़ को उम्र की ज़बान और दिल दोनों पर जारी किया है। अतः ऐसे ही अल्फ़ाज़ हज़रत फ़ज़्ल-ए-उम्र के हक़ में इल्हाम-ए-इलाही ने फ़रमाए हैं जहां आपको مَظْهَرُ الْحَقِّ وَالْعَلَاءِ कहा गया है और आपके आने को جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ फ़रमाया गया है فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلَال । अतः यह आठवीं मुमासेलत हुई।

(9) नौवीं मुमासिलत दीन के विषय में यह है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्वप्न देखा कि लोग मेरे सामने पेश किए जा रहे हैं और वह क़मीसें पहने हुए हैं। किसी की क़मीस छाती तक है किसी की इस से भी कम। इतने में उम्र आपके सामने लाए गए। इस हाल में कि उनकी क़मीज़ इतनी लंबी थी कि ज़मीन पर घिसटती जाती थी। और वे उसे खींचते थे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हुज़ूर इस ख़्वाब की क्या ताबीर है आपने फ़रमाया दीन। अतः यहां भी यही हाल है कि इस क़दर दीन और क़ुरआन के हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ हज़रत फ़ज़्ल-ए-उम्र को दिए गए हैं कि हर जलसा पर आने वाला, हर मज्लिस में हाज़िर होने वाला, हर ख़ुत्बे का सुनने वाला और हर वह शख़्स जो आपकी किताबों और तफ़सीर का मुताला करता है इस यक़ीन से भर जाता है कि वाक़ई सिर से पैर तक यह शख़्स दीन और कलामुल्लाह के मआरिफ़ से इस तरह भरा हुआ है जिस तरह बलाटिंग पेपर अगर पानी में डाला जाये तो पानी से भर जाता है और उसके हर बुन मूअ से दीन ही दीन फूट फूटकर निकल रहा है। और हमारे लिए तो यही काफ़ी है कि नबुव्वत जैसे अज़ीमुश्शान दीनी मसला की हक़ीक़त हुज़ूर की वजह से ही जमाअत में हुई।

(10) दसवीं मुशाबेहत यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में दुआ फ़रमाया करते थे कि या इलाही इस्लाम को मुअज़्ज़िज़ और ग़ालिब कर दे या तो अबुजहल को मुस्लमान कर के या उम्र इब्ने ख़त्ताब को मुस्लमान करके। अतः हज़रत उम्र को ख़ुदा ने मुस्लमान कर दिया और उनकी वजह से इस्लाम की नुसरत, इज़्ज़त और ग़लबा कुछ तो फ़ौरन ज़ाहिर हो गया। लेकिन आगे चल कर आपकी ख़िलाफ़त के ज़माना में तो इस क़दर ग़लबा और नुसरत इस्लाम को हासिल हुई कि वर्णन की हद से बाहर है। बिल्कुल इसी तरह हज़रत फ़ज़्ल-ए-उम्र भी हज़रत मसीह मौऊद आ की चालीस रात और दिन की दुआओं के नतीजा में पैदा हुए और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मेरी औलाद के माध्यम से ख़ुदा ने तरक़्क़ी-ओ-नुसरत इस्लाम की बुनियाद डालने का वादा किया है। वह वाअदा भी हमने इस मुस्लेह मौऊद के ज़माना में बशिद्दत पूरा होता देख लिया। فالحمد لله على ذالك

(11) ऊपर वर्णित बातों के अतिरिक्त निज़ाम-ए-सिलसिला का क़ियाम और हर क़ौमी महकमा का अलग-अलग चयन, मजलिस-ए-शूरा का क़ियाम करना, सन् हिज्री शम्सी की तरवीज, मुख़्तलिफ़ किस्म की जमाती जनगणना का आरंभ, कविताओं का शौक़, क़ुव्वत तक़रीर, अमीरुल मौमेनीन का नाम इख़्तेयार करना, सियासत-ओ-तदबीर, औरतों के हुक़ूक़ और तालीम का इंतेज़ाम दीन के लिए वाकफ़ीन का सिलसिला चलाना। उद्देश्य यह और ऐसी बहुत सी और बातें हैं जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरह इस ज़माना में आपकी इमतेयाज़ी विशेषताओं में से हैं।

(प्रकाशन अल्फ़ज़्ल 20 फ़रवरी 1944 ई.)

★ ★ ★

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की शान

(हज़रत मौलवी शेर अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो)

मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ की क़बूलियत का एक महान निशान है। आपके कुछ और भी निशान हैं जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम की दुआ के माध्यम से ज़ाहिर हुए। उदाहरणतः लेखराम का निशान। बे-शक यह निशान भी अपनी जगह पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का ज़बरदस्त सबूत है, लेकिन निशान ज़हूर मुस्लेह मौऊद और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ की क़बूलियत के दूसरे निशानों में बहुत भारी फ़र्क़ है। इस निशान के विषय में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ख़ास एहतिमाम किया कि चालीस दिन तक अपने शहर से बाहर एक बाहर कर स्थान में एकांत के कोना में समस्त दुनिया से कट कर हुज़ूर अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुज़ूर में दर्द और पीढ़ा से दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही में व्यस्त रहे, जिसके नतीजा में ख़ुदा तआला ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम को यह रहमत का निशान अता फ़रमाया। दुआ की क़बूलियत के नतीजा में जो दूसरे निशान ज़ाहिर हुए निसन्देह वे भी शानदार निशान थे लेकिन इस निशान के परिणाम ऐसे बड़े हैं कि उनका अंदाज़ा लगाना असंभव है।

इस किस्म के निशान तारीख़ दुनिया में दुआ के नतीजा में तीन मर्तबा ज़ाहिर हुए।

(1) पहला निशान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़हूर का निशान था जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ के नतीजा में प्रकट हुआ। यह निशान इस नीचे दिए गए निशानों में प्रथम नंबर है।

(2) दूसरा निशान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़हूर का निशान है, जो उन दुआओं के नतीजा में ज़ाहिर हुआ जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत के लिए कीं। यह निशान इस किस्म के निशानों में अपनी शान के लिहाज़ से दूसरे नंबर पर है :

(3) तीसरा महान निशान जो दुनिया में दुआ की क़बूलियत के नतीजा में ज़ाहिर हुआ है, वह मुस्लेह मौऊद के ज़हूर का निशान है। यह निशान अपनी अज़मत के लिहाज़ से तीसरे नंबर पर है। वह क्या अज़ीमुश्शान इन्सान है जो तीसरी दुआ के नतीजा में पैदा हुआ। उस का अंदाज़ा इस कलाम-ए-इलाही के शब्दों से हो सकता है जो इस चालिस दिन की दुआ के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर बमुक़ाम होशियारपुर नाज़िल हुआ, जो 20 फरवरी के इश्तिहार में शाय किया गया। ख़ुदा के कलाम में व्यर्थ की बढ़ोतरी नहीं हो सकती। अतः अगर हम मुस्लेह मौऊद की शान का सही अंदाज़ा लगाना चाहते हैं तो हमे इस भविष्यवाणी के क्या शब्द पढ़ने चाहिए। क्या ही शान है उस इन्सान की जिसके औसाफ़-ओ-कमालात और कारनामों का नक़्शा इस भविष्यवाणी में खींचा गया है। अतः तीसरा अज़ीमुश्शान इन्सान जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद दुआओं के नतीजा में दुनिया में ज़ाहिर हुआ वह मुस्लेह मौऊद है, जिस का वर्णन उस भविष्यवाणी के शब्दों में किया गया है । यह बात कि इस भविष्यवाणी के मिस्दाक़ हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हैं, न सिर्फ निशानात और दलायल से साबित होता है बल्कि ख़ुदा तआला का फ़ेअल भी बुलंद आवाज़ से इस बात की गवाही दे रहा है कि इस भविष्यवाणी के मिस्दाक़ हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ही हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत-नुमाई से उन समस्त बातों को जिनका वर्णन उस भविष्यवाणी में है हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के हक़ में ऐसे रंग में पूर कर दिया और पूरा कर रहा है जिसका कोई इंसाफ़ पसंद इन्सान इंकार नहीं कर सकता। इन समस्त बातों को जिनका वर्णन उस भविष्यवाणी में है पूरा करना किसी इन्सान का काम नहीं था। ख़ुदा तआला ही ऐसा कर सकता था। उसने इन बातों को पूरा करके आसमान से इस बात की गवाही दी कि वह आने वाला जिसकी ख़बर इस भविष्यवाणी में दी गई थी यही महमूद (फ़िदाह हों आप प रमेरे माता पिता) हैं अतः सबसे बड़ा सबूत किसी शख़्स की सदाक़त का अल्लाह तआला की कर्म की गवाही होती है। और यह सबूत यहां निहायत ही स्पष्ट रंग में मौजूद है।

एक और अमर जो हज़रत महमूद रज़ियल्लाहु अन्हो के मुस्लेह मौऊद की शहादत दे रहा है यह है कि जैसा सुलूक आपसे पहले ख़ुदा के मौऊदों के साथ हुआ। वही सुलूक आपके साथ हुआ। ख़ुदा की तरफ़ से जो मौऊद दुनिया की इस्लाह के लिए आते रहे हैं, उनके बारे में यह सुन्नतुल्लाह रही है कि उनकी क़ौम के सरकरदा लोग उनकी मुख़ालेफ़त पर खड़े हो गए और उन्होंने उनको नाकाम करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया। हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माना में सबसे बड़ा इन्सान फ़िरऔन था जो आपकी मुख़ालेफ़त में खड़ा हुआ और जिस ने आप को और आपकी क़ौम को तबाह करने की कोशिश की। हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माना में यहूदियों का सबसे बड़ा आदमी जो उनका सरदार काहिन था जिसका नाम कायफ़ा था, जो उनको नाकाम करने के दर पर हो गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में मक्का की वादी का सरदार अबुजहल था जिसने आपकी मुख़ाले फ़त का बीड़ा उठा लिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में मुस्लमानों के सरकरदा मौलवियों मुहम्मद हुसैन बटालवी और नज़ीर हुसैन देहलवी ने मुख़ालेफ़त का बीड़ा उठाने की वजह से ख़ुदा के इलहाम मैं फ़िरऔन और हामान का लक़ब पाया। इसी तरह ठीक इसी तरह ख़ुदा की क़दीम सुन्नत के मुताबिक़ जब महमूद के खड़े होने का वक़्त आया तो अहमदिया जमाअत के चोटी के आदमी आपके मुक़ाबिल पर ठीक इसी तरह खड़े हो गए, जिस तरह पहले मूस्लेहीन के ज़माना में उनके ज़माना के बड़े आदमी खड़े हो गए थे। इस तरह उन्होंने अपने कर्म से इस बात का ऐलान किया कि जो शख़्स अब खड़ा होने वाला है, वह वही मौऊद है जिस की ख़बर जमात अहमदिया के संस्थापक (अलैहिस्सलाम) ने दी थी।

एक और बात जो हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की हक़ीक़ी शान को ज़ाहिर करता है, वह यह है कि सिलसिला अहमदिया की बुनियाद आपके जन्म के साथ रखी गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ जो लोग हुस्न-ए-ज़न रखते थे और हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तहरीरों और भविष्यवाणियों के निशानों से प्रभावित थे और ये समझते थे कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को इस्लाह ख़लकुल्लाह के लिए खड़ा किया है, आप से बार-बार निवेदन करते थे कि आपको अपनी बैअत में दाख़िल कर लें, लेकिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम उनको हमेशा यह उत्तर देते थे, अभी तक मुझे बैअत लेने का हुक्म नहीं हुआ। जब तक ख़ुदा तआला की तरफ़ से मुझे बैअत लेने का हुक्म नहीं होता मैं किसी से बैअत नहीं ले सकता। लेकिन जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो पैदा हुए तो उस वक़्त आपको इल्हाम के द्वारा इलाही सिलसिला बैअत शुरू करने का हुक्म हुआ। और यह वह्यी नाज़िल हुई اِصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا इसलिए आपने इस इश्तिहार में हज़रत ख़लीफ़तुल -मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की विलादत की ख़बर प्रकाशित की और इस में लोगों को बैअत की दावत देकर सिलसिला आलीया अहमदिया की बुनियाद डाली। जब तक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी पैदा नहीं हुए, ख़ुदा तआला ने सिलसिला बैअत को मुल्तवी रखा। इसलिए आपकी पैदाइश के साथ ही हुक्म नाज़िल कर के सिलसिला अहमदिया की बुनियाद डाली। इस तरह आपकी पैदाइश के साथ सिलसिला अहमदिया का आग़ाज़ हुआ। इस में इस बात का इशारा था कि इस मौलूद मसऊद को सिलसिला अहमदिया के साथ गहरा संबंध है, क्योंकि दोनों का आरंभ एक साथ हुआ। ता मालूम हो कि सिलसिला आलीया अहमदिया को आपके वजूद के साथ ऐसी वाबस्तगी है कि दोनों एक दूसरे से अलैहदा नहीं समझे जा सकते। आख़िर में मैं इस बात का इज़हार कर देना ज़रूरी समझता हूँ कि जिस तरह हम ग़ैर अहमदियों से यह कहते हैं कि तुम्हारे लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़बूल करना इस लिए ज़रूरी है कि आपके द्वारा ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं और आपका वजूद आपकी सदाक़त का निशान है, जिसके द्वारा हम मुख़ालेफ़ीन-ए-इस्लाम पर समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण कर सकते हैं। इसी तरह हम ग़ैर मुबाईन लोगों की ख़िदमत में अर्ज़ करते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत फ़ज़ल-ए-उम्र के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक महानभविष्यवाणी को पूरा किया है और आपकी सदाक़त का एक महान निशान ज़ाहिर किया है। इसलिए आप साहिबान का जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त पर ईमान रखने का दावा करते हो फ़र्ज़ है कि इस निशान की सदाक़त पर ईमान लाओ और दुनिया को बताओ कि देखो किस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जलीलुल-क़दर भविष्यवाणी को एजाज़ी रंग में पूरा करके आपकी सच्चाई का एक शानदार प्रमाण दिया है। इसके आगे हर एक ख़ुदातरस और अल्लाह का भय रखने वाले के साथ गौर करने वाले की गर्दन झुक जाती है। लेकिन अगर आप लोग ज़िद और तास्सुब की वजह से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस चमकते हुए निशानों का इंकार करेंगे तो आप तो ख़ुदा तआला के नज़दीक इसी तरह ज़ेर इल्ज़ाम होंगे जिस तरह ग़ैर अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इंकार करके जिनके द्वारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि-ओ-आला वसल्लम की भविष्यवाणी पूरी हुई और जिनका वजूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त पर एक जलीलुल् क़दर शहादत है, ख़ुदा तआला के नज़दीक आरोप के योग्य हैं।

(उद्धारित अल् फ़ज़ल 20 फ़रवरी 1944 ई.)

★ ★ ★

क़ब्रों पर फूल चढ़ाना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का एक इरशाद और इस इरशाद की हिक्मत

(हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हो)

कुछ दिन हुए नज़ारत इस्लाह इरशाद रब्वाह की तरफ़ से अल्फ़ज़ल तिथि 12 अगस्त में हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो का एक फ़त्वा क़ब्रों पर फूल डालने के विषय में प्रकाशित हुआ था। यह फ़तवा अपनी हालत में बहुत ख़ूब है परंतु यह फ़त्वा केवल एक ख़ास पहलू को मद्द-ए-नज़र रख कर दिया गया था। क्योंकि फ़तवा पूछने वाले ने केवल इस उद्देश्य से फ़तवा पूछा था कि क्या मय्यत की रूह को राहत पहुंचाने की ग़रज़ से क़ब्र पर फूल डालना जायज़ है जिसे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो ने बिद्दत क़रार देकर नाजायज़ और शरीयत विरुद्ध है। लेकिन इस फ़त्वे के बाद भी विषय का यह पहलू व्याख्या के योग्य रहता है कि रूह को ख़ुशी पहुंचाने की ग़रज़ से न सही लेकिन क्या वैसे ही ज़ीनत इत्यादि के ख़्याल से क़ब्रों पर फूल नहीं रखे जा सकते हैं? अतः उसके विषय में मुझे हज़रत ख़लीफ़ सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का इरशाद याद आया है जिस में इस विषय के इस पहलू पर भी रोशनी पड़ती है इस की तफ़सील यह है।

जब 1938 ई. में (शायद यह 38 ई. का साल ही था) लंदन से अज़ीज़ सईद अहमद मरहूम पुत्र मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहिब एम.ए का ताबूत आया और वे बच्चों वाले मक़बरा में दफ़न किया जाने लगा तो उस वक़्त हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो भी जनाज़ा के साथ क़ब्रिस्तान तक तशरीफ़ ले गए थे। जब क़ब्र तैयार हो गई तो उस समय उपस्थित लोगों में से किसी ने ज़ीनत और इकराम के ख़्याल से क़ब्र पर कुछ फूल बिखेरने चाहे। लेकिन हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे रोक दिया और फ़रमाया ग़ालिबन इसी किस्म के शब्द थे कि "यह जायज़ नहीं इस तरह बिद्दत का रस्ता खुलता जाता है।"

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के ऊपर वाले फ़तवे के साथ हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का यह फ़त्वा मिलकर एक मुकम्मल फ़त्वा बन जाता है। जिसमें इस मसला के सारे पहलू आ जाते हैं। और हक़ीक़त भी यही है कि जबकि किसी क़ब्र पर फूल डालना बज़ाहिर एक मासूम सी बात नज़र आती है बल्कि इस में बज़ाहिर मय्यत का इकराम भी पाया जाता है लेकिन ग़ौर करने वाला इन्सान समझ सकता है कि इस में दो किस्म की ख़राबियों के पैदा होने का भारी खतरा है।

(1) प्रथम यह कि इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता शिर्क का रस्ता खुलता है और शुरू में आम इकराम की नीयत से इबतेदा हो कर अंततः क़ब्रों के ग़ैरमामूली अजलाल-ओ-एहतेराम बल्कि क़ब्र परस्ती तक नौबत पहुंच जाती है। इसलिए उस ज़माने में लाखों मुस्लमान क़ब्रों को सजदा करके अपनी आक़िबत तबाह करते हैं हालाँकि जिन बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर सजदा किया जाता है वह कदापि उस तरीक़ के सहायक नहीं थे और जानते थे कि इस का अंजाम अच्छा नहीं। हमारे आका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नशे वाली चीज़ों के मुआमला में क्या हकीमाना इरशाद फ़रमाया है कि : مَا اَسْکَرَ کَثِیْرُہٗ فَقَلِیْلُہٗ حَرَامٌ अर्थात जो चीज़ बड़ी मात्रा में नशा पैदा करे उस की थोड़ी मात्रा भी हराम है।

इस लतीफ़ इरशाद में यही हिक्मत है कि चीज़ों की इब्तिदा बज़ाहिर छोटी और मामूली होती है और बात बिल्कुल मासूम नज़र आती है लेकिन चूँकि उनका माल और अंजाम हालक करने वाला होता है और इन्सान ज़ईफ़ुल-बुनयान फ़ित्रतन एक छोटी सी बात की इब्तिदा कर के क़दम आगे ही आगे बढ़ाने का रुझान रखता है इस लिए शरीयत ने कमाल हिक्मत से जड़ पर हाथ रखकर उस के बज़ाहिर मासूम हिस्सा को भी मना फ़र्मा दिया है ताकि लोग हर किस्म की अमकानी ठोकर से बच जाएं। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अंतिम समय में फ़रमाया कि "देखना मेरे बाद मेरी क़ब्र को सज्दा-गाह न बना लेना।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जानते थे कि आपके सहाबा कदापि ऐसा नहीं करेंगे परंतु आप दूर के ख़तरात को देख रहे थे।

दूसरा नफ़सियाती नुक़्ता इस इरशाद में यह है कि अगर मरने वाला ख़ुदा के फ़ज़ल से नेक और जन्नती है तो उसकी क़ब्र पर फूल चढ़ाना इसलिए कोई हक़ीक़त नहीं रखता क्योंकि जो रूह जन्नत में पहुंच गई और जन्नत की अदीमुल्मिसाल नेअमतों में दाख़िल हो गई या कम से कम उस के रस्ता पर पड़ गई उसके लिए यह अर्ज़ी फूल क्या हक़ीक़त रखते हैं? और उसे उन फूलों से क्या ख़ुशी पहुंच सकती है! बल्कि वे तो जन्नत के फूलों के सामने उन फूलों को अपने लिए अपमान का कारण समझती होगी। दूसरी तरफ़ अगर ख़ुदा-न-ख़ासता मरने वाला दोज़ख़ी है तो उसे फूल ज़र्रा भर भी फ़ायदा नहीं दे सकते बल्कि उसकी रूह (अगर इल्म हो) ख़्याल करती होगी कि मेरे अज़ीज़ और मेरे वारिस मेरी हंसी उड़ा रहे हैं ताकि मैं तो दोज़ख़ की आग में ही जल रही हूँ और वे मुझ पर फूल फेंक रहे हैं!!! अतः किसी जिहत से भी देखा जाए क़ब्रों पर फूल डालना या चढ़ाना एक बिद्दत है, जिसका कोई फ़ायदा नहीं बल्कि वह पूर्णतः नुक़्सानदेह है क्योंकि एक तरफ़ तो वह मरने वालों के लिए अज़ीयत का मूजिब है और दूसरी तरफ़ वह शिर्क का रस्ता भी खौलती है। यही वजह है कि आरंभ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में और अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के ज़माना में किसी मौमिन ने कभी इस किस्म की बात नहीं की।

बे-शक इस्लाम में क़ब्र के सम्मान करने का हुक्म है और हिदायत दी गई है कि उन पर बैठने या उन पर पांव रखने से इजतेनाब करो और उन्हें जहां तक संभव हो साफ़ और सुथरा और .. ख़ुशनुमा बनाया जा सकता है परंतु यह केवल वाजिबी इकराम की हद तक है ताकि मरने वालों की तख़्फ़ीफ़ और तज़लील न हो और उनके रिश्तेदारों और अज़ीज़ों की भावनाओ को भी ठेस न लगे। इस से ज़्यादा कुछ नहीं और इस से आगे बढ़ना बिद्दत में दाख़िल है जिसमें मरने वालों की कोई इज़्ज़त नहीं बल्कि जैसा कि मैंने ऊपर तशरीह की है इस में हक़ीक़तन इनकी दिल-आज़ारी है और ऐसी बिद्दतों का अंजाम कभी भी अच्छा नहीं होता। क़ब्रों की ज़ियारत का सिर्फ़ यह उद्देश्य होना चाहिए ताकि मरने वाले की मग़फ़िरत और बुलंद ई दर्जात के लिए दुआ की जाए। नेक उद्देश्य की कामयाबी के लिए अपने आसमानी आक़ा के सामने हाथ फैलाए जाएं। उस की ऑल-ओ-औलाद की हिफ़ाज़त और तरक़्क़ी के लिए ख़ुदा के हुज़ूर दुआ की जाए। और अपनी मौत को याद करके अपने अच्छे अंजाम के वास्ते लंबी दुआ की जाए।

हाँ क़ब्रों के ज़ियारत का एक उद्देश्य सयासी भी हुआ करती है। और वह यह कि मुख़्तलिफ़ कौमें अपने सस्थापकों और ख़ास ख़ास लीडरों की क़ब्रों को ऐसे रंग में तामीर करती हैं ताकि दूसरी क़ौमों के लोग वहां जा कर अपनी अक़ीदत और एहतेराम के फूल चढ़ाएं। और ख़्याल किया जाता है कि यह तरीक़ क़ौमों के बाहमी ताल्लुक़ात को बेहतर बनाने में मदद देता है। लेकिन ज़ाहिर है कि इस किस्म की ज़ियारत का असल उद्देश्य दुआ नहीं होता (बल्कि ज़ायरीन बेशतर लोग तो ऐसे होते हैं जो दुआ के क़ायल ही नहीं होते) और सिर्फ़ क़ौमी और सयासी रंग में एहतेराम और बाहम क़द्रशनासी का इज़्हार उद्देश्य होता है। ऐसी सूरत में दुनिया का रिवाज है कि जब बड़े लोग किसी ग़ैर मुल्क में जाते हैं तो उस देश के संस्थापक या किसी और विशेष लीडर की क़ब्रों पर जा कर फूलों की चादर चढ़ाते हैं। अतः यह एक सयासी तरीक़ है जिसे इस मज़हबी फ़तवे के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं। अल्लाह उचित ज्ञान रखने वाला है।

(अल् फ़ज़ल 28 अगस्त 1958 ई.)

★ ★ ★

अदालत की न्यायिक जांच में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु का बयान

नीचे सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का वह बयान है जो 13, 14, 15 जनवरी 1954 को पाकिस्तान की जांच अदालत में गवाही के रूप में दर्ज किया गया था। हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह कथन बहुत महत्वपूर्ण और सही इस्लामी मामलों पर प्रकाश डालता है और साथ ही जमात के बारे में गैर-अहमदियों और इस्लाम के बारे में गैर-मुसलमानों की गलतफहमी को दूर करता है। आशा है पाठक शीघ्र ही इसका लाभ प्राप्त करेंगे। संस्थान

प्रश्न : रसूल कौन होता है?

उत्तर : रसूल उसे कहते हैं जिसे अल्लाह तआला ने किसी विशेष उद्देश्य के लिए इन्सानों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से भेजा हो।

प्रश्न : क्या नबी और रसूल में कोई अंतर है?

उत्तर : विशेषताओं की दृष्टि से दोनों में विशेष अंतर नहीं। वही शख़्स इस लिहाज़ से कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ से पैग़ाम लाता है, रसूल कहलाएगा लेकिन उन लोगों के लिहाज़ से जिनकी ओर वह ख़ुदाई संदेश लाता है वह नबी कहलाएगा। इस तरह वही एक शख़्स रसूल भी होगा और नबी भी।

प्रश्न : आप के नज़दीक आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अब तक कितने रसूल या-नबी गुज़रे हैं?

उत्तर : ग़ालिबन इस बारे में कोई बात ठौस रूप में नहीं कही जा सकती। अहादीस में उनकी संख्या एक लाख बीस हज़ार वर्णन हुई है।

प्रश्न : क्या आदम, नूह, इब्राहीम अलैहिस्सलाम, मूसा और ईसा रसूल थे?

उत्तर : आदम के बारे में मतभेद पाया जाता है। उनको कुछ लोग केवल नबी यक़ीन करते हैं और रसूल नहीं समझते। परंतु मेरे नज़दीक ये सब रसूल भी थे और नबी भी।

प्रश्न : वली किस को कहते हैं?

उत्तर : वह जो अल्लाह तआला को महबूब होता है।

प्रश्न : और मुहद्दिस कौन होता है?

उत्तर : वह जिस से अल्लाह बात करता है।

प्रश्न : और मुजद्दिद किस को कहते हैं?

उत्तर : जो इस्लाह और तजदीद करता है। मुहद्दिस ही का दूसरा नाम मुजद्दिद है।

प्रश्न : क्या वली, मुहद्दिस या मुजद्दिद को वह्यी हो सकती है?

उत्तर : जी हाँ।

प्रश्न : उन पर वह्यी किस तरह नाज़िल होती है?

उत्तर: वह्यी के अर्थ अल्लाह तआला का कलाम है जो वह्यी पाने वाले पर मुख़्तलिफ़ तरीक़ से नाज़िल हो सकता है। वह्यी के नाज़िल होने का एक तरीक़ा यह है कि जिस पर वह्यी नाज़िल होती है इसके सामने एक फ़रिश्ता ज़ाहिर होता है। दूसरा तरीक़ यह है कि जिस शख़्स पर वह्यी नाज़िल होती है वह कुछ शब्द सुनता है लेकिन कलाम करने वाले को नहीं देखता। वह्यी का तीसरा तरीक़ मिन वाराआ हिजाब है (पर्दे के पीछे से) अर्थात स्वप्न के माध्यम से।

प्रश्न : क्या फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्राईल किसी वली, मुहद्दिसया मुजद्दिद पर वह्यी ला सकते हैं?

उत्तर : जी हाँ, बल्कि ऊपर वर्णित लोगों के इलावा दीगर लोगों पर भी।

प्रश्न : एक वली, मुहद्दिस या मुजद्दिद पर नाज़िल होने वाली वह्यी का क्या विषय हो सकता है?

उत्तर : जिस पर वह्यी नाज़िल होती हो उसके लिए अल्लाह तआला की मुहब्बत का इज़हार या आगे आने वाले वाक़ियात की ख़बर या किसी पहली नाज़िल शुदा किताब के मतन की वज़ाहत।

प्रश्न : क्या हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर केवल जिब्राईल के ज़रीया ही वह्यी नाज़िल होती थी?

उत्तर : यह दुरुस्त नहीं है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी हज़रत जिब्राईल ही लाते थे। हाँ यह दुरुस्त है कि वह्यी ख़ाह एक नबी या वली या मुहद्दिसया मुजद्दिद पर नाज़िल हो वह हज़रत जिब्राईल की निगरानी में नाज़िल होती है।

प्रश्न : वह्यी और इल्हाम में क्या फ़र्क़ है?

उतर : कोई फ़र्क़ नहीं।

प्रश्न : क्या मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब पर हज़रत जिब्राईल वह्यी लाते थे?

उतर : मैं पहले अर्ज़ कर चुका हूँ कि हर वह्यी हज़रत जिब्राईल की निगरानी में नाज़िल होती है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब के इल्हाम से मालूम होता है कि हज़रत जिब्राईल एक दफ़ा उन पर नज़र आने वाली सूरत में ज़ाहिर हुए थे।

प्रश्न : क्या मिर्ज़ा साहिब इस्तेलाही (Dogmatic) अर्थों में नबी थे?

उत्तर : मैं नबी की कोई इस्तेलाही (Dogmatic) तारीफ़ नहीं जानता। मैं उस शख़्स को नबी समझता हूँ जिसको अल्लाह तआला ने नबी कहा हो।

प्रश्न : क्या अल्लाह तआला ने मिर्ज़ा साहिब को नबी कहा है? उत्तर : जी हाँ।

प्रश्न : मिर्ज़ा साहिब ने पहली मर्तबा कब कहा कि वह नबी हैं? मेहरबानी फ़र्मा के उसकी तारीख़ बताएं। और इस बारे में उनकी किसी तहरीर का हवाला दीजिए?

उत्तर : जहां तक मुझे याद है उन्होंने 1891 ई. में नबी होने का दावा किया।

प्रश्न : क्या एक नबी के ज़हूर से एक नई उम्मत पैदा होती है?

उत्तर : जी नहीं।

प्रश्न : क्या उसके आने से एक नई जमात पैदा होती है? उत्तर : जी हाँ।

प्रश्न : क्या एक नए नबी पर ईमान लाना, दूसरे लोगों के विषय में उसके मानने वालों के व्यवहार पर असर अंदाज़ नहीं होता?

उत्तर : अगर तो आने वाला नबी साहिब-ए-शरीयत है तो इस सवाल का उत्तर अस्बात में है लेकिन अगर वह कोई नई शरीयत नहीं लाता तो वह दूसरों के मुताल्लिक़ उसके मानने वालों के रवैय्या का इन्हिसार उस सुलूक पर होगा जो दूसरे लोग उनके साथ करते हैं।

प्रश्न क्या दूसरे अर्थों के लिहाज़ से अहमदी एक जुदागाना क्लास नहीं हैं?

उत्तर : हम कोई नई उम्मत नहीं हैं बल्कि मुस्लमानों का ही एक फ़िर्क़ा हैं।

प्रश्न : क्या एक अहमदी की अव्वलीन वफ़ादारी अपनी ममलेकत के साथ होती है या कि अपनी जमात के अमीर के साथ?

उत्तर : यह बात हमारे अक़ीदा का हिस्सा है कि हम जिस मुल्क में रहते हियाँ, उसकी हुकूमत की इताअत करें।

प्रश्न : क्या 1891 ई. से पहले मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने बार-बार नहीं कहा था कि वह नबी नहीं हैं और यह कि उनकी वह्यी वह्यी नबुव्वत नहीं बल्कि वह्यी विलायत है।

उत्तर : उन्होंने 1900 ई. में लिखा था कि उस वक़्त तक उनका यह ख़्याल था कि एक शख़्स सिर्फ़ इस सूरत में ही नबी हो सकता है कि वह कोई नई शरीयत लाए लेकिन अल्लाह तआला ने वह्यी के माध्यम से उन्हें बतलाया कि नबी होने के लिए शरियत का लाना ज़रूरी शर्त नहीं है और यह कि एक शख़्स नई शरियत लाने के बग़ैर भी नबी हो सकता है।

प्रश्न : क्या मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मासूम थे?

उत्तर : अग़र तो लफ़्ज़ मासूम के माने यह हैं कि नबी कभी भी कोई ग़लती नहीं कर सकता तो इन अर्थों के लिहाज़ से कोई फ़र्द बशर भी मासूम नहीं। यहाँ तक कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इन अर्थों के लिहाज़से मासूम नहीं थे। जब मासूम का शब्द नबी के मुताल्लिक़ बोला जाता है तो उसका यह अर्थ होता है कि वह इस शरीयत के किसी हुक्म की जिसका वह पाबंद हो ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में इस का अर्थ यह है कि वह किसी क़िस्म के गुनाह का ख़ाह वह कबीर हो या सग़ीर मुर्तक़िब नहीं हो सकता बल्कि वह मकरूहात का मुर्तक़िब नहीं हो सकता। कई नबी ऐसे गुज़रे हैं जो कोई नई शरीयत नहीं लाए थे। वे उमूर जो शरीयत से ताल्लुक़ न रखते हूँ उनके बारे में नबी अपने इजतेहाद में ग़लती कर सकता है। उदाहरणतः दो फ़रीक़ मुक़द्दमा के दरमयान झगड़े के बारे में उस से ग़लत फ़ैसला का सादर होना नामुमकिन नहीं है।

प्रश्न :आप इस सवाल का उत्तर किस रंग में दे सकते हैं कि जबकि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब किस मफ़हूम के मुताबिक़ मासूम थे?

उत्तर : वह जो अर्थों में मासूम थे कि वे कोई सगीरा या कबीरा गुनाह नहीं कर सकते

थे।
प्रश्न : क्या आप यह मानते हैं कि दूसरे इन्सान की तरह मिर्ज़ा साहिब भी रोज़ हिसाब अपने आमाल के लिए उत्तर दाने वाले होंगे?
उत्तर : अनुमान यही है कि उन्हें अपने आमाल का हिसाब नहीं देना पड़ेगा। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा है कि आपकी उम्मत में कसीरुल तादाद ऐसे लोग हैं जो नबी नहीं हैं परंतु वह यौमुल् हिसाब को हिसाब से मुस्तसना होंगे।
प्रश्न : मृत्यु के बाद अंबिया पर किया गुज़रती है? क्या वे दूसरे इन्सानों की तरह यौमुल् हिसाब तक क़ब्रों में रहते हैं या कि सीधे फ़िर्दोस या आराफ़ में चले जाते हैं?
उत्तर : मेरे नज़दीक यह सही नहीं है कि अंबिया मौत के बाद सीधे फ़िर्दोस या आराफ़ में चले जाते हैं लेकिन यह दरुस्त है कि वे अल्लाह के क़रीब-तर एक ख़ास मुक़ाम पर पहुँचा दिए जाते हैं चूँकि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब नबी थे इस लिए अल्लाह तआला ने उनसे भी आम अहमदियों की तरह नहीं बल्कि ख़ास सुलूक किया होगा।
प्रश्न : क्या आप यह मानते हैं कि जब आदमी का देहांत हो जाता है तो मुनकिर व नकीर क़ब्र में उसके पास आते हैं?
उत्तर : मुनकिर व नकीर दो फ़रिश्ते हैं लेकिन मेरा यह अक़ीदा नहीं कि क़ब्र में मुर्दों से सवालात करने के लिए जस्मानी सूरत में ज़ाहिर होंगे।
प्रश्न : मुनकिर व नकीर क़ब्र में क्यों आते हैं?
उत्तर : मरने वाले को उसके गुज़श्ता आमाल की ख़बर देने के लिए।
प्रश्न : क्या आपके ख़्याल में मुनकिर व नकीर मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की क़ब्र में भी आए थे?
उत्तर : मेरे पास इस अमर के मालूम करने का कोई माध्यम नहीं है।
प्रश्न : क्या वह नूर जो अल्लाह तालाने आदम को माफ़ करने के बाद उस में दाख़िल किया था मिर्ज़ा साहिब को भी विरसा में मिला है?
उत्तर : मुझे किसी ऐसी थियूरी का इलम नहीं। क़ुरआन या किसी सही हदीस में किसी ऐसे वाक़िया का वर्णन नहीं।
प्रश्न : क्या क़ुरआन-ए-करीम में मसीह या मह्दी के मुताल्लिक़ कोई स्पष्ट भविष्यवाणी मौजूद है?
उत्तर : इनका वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में नाम लेकर मौजूद नहीं।
प्रश्न : क्या अहादीस मसीह और मह्दी के ज़हूर पर मुत्तफ़िक़ हैं?
उत्तर : एसी कोई हदीस मौजूद नहीं जिस में यह कहा गया हो कि कोई मसीह ज़ाहिर नहीं होगा। जहां तक मह्दी का ताल्लुक़ है कुछ हदीसों से ज़ाहिर होता है कि वह और मसीह एक ही हैं।
प्रश्न : क्या समस्त मुस्लमान मुत्तफ़िक़ा तौर पर इन अहादीस को मानते हैं?
उतर : जी नहीं।
प्रश्न : क्या इन अहादीस से यह ज़ाहिर नहीं होता कि मसीह और मह्दी दो अलैहदा शख़्स होंगे?
उत्तर : हां, बाअज़ अहादीस से ऐसा ज़ाहिर होता है।
प्रश्न : अहादीस के मुताबिक़ जिन में मसीह और मह्दी के ज़हूर की भविष्यवाणी की गई है दज्जाल के क़तल और याजूज व माजूज की तबाही के कितना अरसा बाद इसराफ़ील अपना सूर फूंकेगा?
उत्तर : मैं इन अहादीस को कोई एहमीयत नहीं देता।
प्रश्न : क्या आप इन अहादीस को मानते हैं जिन में दज्जाल और याजूज व माजूज का वर्णन है?
उत्तर : इस सवाल का जवाब देने के लिए मुझे उन अहादीस की पड़ताल करनी होगी। दज्जाल याजूज माजूज का वर्णन क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूद है।
प्रश्न : क्या मसीह या मह्दी को नबी का रुत्बा हासिल होगा?
उत्तर : जी हाँ।
प्रश्न : क्या वह दुनयवी बादशाह होंगे।
उत्तर : मेरे नज़दीक नहीं।
प्रश्न : क्या इस मफ़हूम की कोई हदीस है कि मसीह जिहाद या जिज़्या के मुताल्लिक़ क़ानून स्थगित कर देगा?
उत्तर : एक़ हदीस जिज़्या के संबंध में है और दूसरी जिहाद के मुताल्लिक़। हम जिज़्याके मुताल्लिक़ हदीस को तर्जीह देते हैं और दूसरी को उसकी वज़ाहत समझते हैं। हम नहीं समझते कि जो शब्द यज़ओ हदीस में इस्तिमाल हुए हैं उनके माने मंसूख़ करने के हैं हम समझते हैंकि लफ़्ज़ के अर्थ इल्तवा के हैं।
प्रश्न : क्या मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने मसीह और मह्दी होने का दावा किया?
उत्तर : जी हाँ।
प्रश्न : क्या मसीह या मह्दी के ज़हूर पर इस पर ईमान लाना मुस्लमानों के अक़ीदा का ज़रूरी अंग है?
उत्तर : जी हाँ। अगर कोई शख़्ज़ यह समझ जाता है कि यह दावा दरुस्त है तो उसे मानना उस पर फ़र्ज़ हो जाता है।
प्रश्न : क्या दीन-ए- इस्लाम एक सयासी मज़हबी निज़ाम है?
उत्तर : यह एक मज़हबी निज़ाम है। परंतु इस में कुछ सयासी अहकाम भी हैं जो इस मज़हबी निज़ाम का हिस्सा हैं और जिनका मानना इतना ही ज़रूरी है जितना दूसरे अहकाम का।
प्रश्न : इस निज़ाम में कुफ़्फ़ार की क्या हैसियत है?
उत्तर : कुफ़्फ़ार को वही हैसियत हासिल होगी जो मुस्लमान को।
प्रश्न : काफ़िर किसे कहते हैं?
उत्तर : काफ़िर और मोमिन और मुस्लिम निसबती अल् फ़ाज़ हैं और एक दूसरे के साथ जुड़े हैं। उनका कोई जुदागाना निर्धारित मफ़हूम नहीं। क़ुरआन-ए-करीम में काफ़िर का शब्द अल्लाह तआला के ताल्लुक़ में भी प्रयोग हुआ है और तागूत के ताल्लुक़ में भी। इसी तरह मौमिन का लफ़्ज़ तागूत के ताल्लुक़ में भी प्रयोग हुआ है।
प्रश्न : क्या इस्लामी निज़ाम में कुफ़्फ़ार ने ग़ैर मुस्लिमों को यह हक़ हासिल है कि वह क़ानूनसाज़ी और क़ानून के नफ़ाज़ में हिस्सा लें और क्या वह आलाइंतेज़ामी ज़िम्मेदारी के ओहदों पर फ़ायज़ हो सकते हैं?
उत्तर : मेरे नज़दीक क़ुरआन ने जिस हुकूमत को ख़ालिस इस्लामी हुकूमत कहा है उसका क़ियाम मौजूदा हालात में नामुमकिन है । इस्लामी हुकूमत की इस तारीफ़ के मुताबिक़ यह ज़रूरी है कि दुनिया के समस्त मुस्लमान एक सयासी वहदत में जुड़े हों परंतु वर्तमान हालात में यह सूरत बिल्कुल नाक़ाबिल-ए-अमल है।
प्रश्न : क्या कभी इस्लामी हुकूमत क़ायम रही भी है?
उत्तर : जी हाँ। ख़ुलफ़ा ए राशेदीन की इस्लामी जमहूरियत के ज़माना में।
प्रश्न : इस जमहूरिया में कुफ़्फ़ार की क्या हैसियत थी? क्या वह क़ानूनसाज़ी और निफ़ाज़-ए-क़ानून में हिस्सा ले सकते थे और क्या वह इंतेज़ामिया की आला ज़िम्मेदारियों के ओहदों पर मुतमक्किन हो सकते थे?
उत्तर : यह सवाल उस वक़्त पैदा ही नहीं हुआ था क्योंकि इस्लामी जमहूरिया के दौर में मुस्लमानों और कुफ़्फ़ार में मुसलसल जंग-ए-जारी रही और जो कुफ़्फ़ार मफ़्तूह हो जाते थे इस्लामी देशों में उन्हें वही हुक़ूक़ हासिल हो जाते थे जो मुस्लमानों को हासिल होते थे। इन दिनों आजकल जैसी मुंतख़ब शूदा असैंबलियां मौजूद नहीं थीं।
प्रश्न : क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त में अदलिया अलैहदा होती थी?
उत्तर : उन दिनों सबसे बड़ी अदलिया ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे।
प्रश्न : क्या इस्लामी तर्ज़ की हुकूमत में एक काफ़िर को हक़ हासिल है कि वह खुले तौर पर अपने मज़हब की तब्लीग़ करे?
उत्तर : जी हाँ।
प्रश्न : इस्लामी हुकूमत में अगर कोई मुस्लमान मज़ाहिब के तक़ाबुली अध्ययन के बाद दियानतदारी के साथ इस्लाम को तर्क करके कोई दूसरा मज़हब इख़्तेयार कर लेता है उदाहरणतः ईसाई या नास्तिक हो जाता है तो क्या वह उस ममलेकत की रियाया के हुक़ूक़ से वंचित हो जाता है?
उत्तर : मेरे नज़दीक तो ऐसा नहीं लेकिन इस्लाम में दूसरे ऐसे फ़िरक़े पाए जाते हैं जो ऐसे शख़्स को मौत की सज़ा देने का अक़ीदा रखते हैं।
प्रश्न : अगर कोई शख़्स मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के दआवी पर वाजिबी ग़ौर करने के बाद दियानतदारी से इस नतीजा पर पहुंचता है कि आपका दावा ग़लत था तो क्या फिर भी वह मुस्लमान रहेगा?
उत्तर : जी हाँ। आम इस्तिलाह में वह फिर भी मुस्लमान समझा जाएगा।
प्रश्न : क्या आपके नज़दीक अल्लाह तआला उन लोगों को सज़ा देगा जो ग़लत मज़हबी ख़्यालात या अक़ायद रखते हों लेकिन दियानतदारी से ऐसा करते हों?
उत्तर : मेरे नज़दीक जज़ा सज़ा का उसूल दियानतदारी और नेक नीयती पर मबनी है न कि अक़ीदा की सदाक़त पर।

(उद्धृत अल्फ़ज़्ल 21 फ़रवरी 1954 ई.)

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

"नज़ारत तालीम" के अंतर्गत शिक्षण संस्थानों में पुरुष शिक्षकों की आवश्यकता है

तालीमुल्-इस्लाम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में फ़िज़िकल एजुकेशन और कंप्यूटर टीचर के कुछ पद भरे जाने हैं। इच्छुक उम्मीदवार जिन के पास सेवा की भावना है और अपेक्षित शैक्षणिक योग्यता है, वे नज़ारत दीवान द्वारा प्रकाशित जानकारी फॉर्म भर कर अपना आवेदन जमा करवा सकते हैं। रिक्तियां विवरण एवं शर्तें इस प्रकार हैं।

Computer Teacher :

(1)Qualification : BCA/B.Sc(I.T/C.S/internet Science), B.Tech (I.T/C.S)

(2) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी/हिन्दी/पंजाबी कम्पोज़िंग जानता हो। (3) प्रासंगिक विषय में स्नातक (B.C.A/ B.Sc,B.Tech) 55% के साथ, और किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान में 3 वर्षों का अनुभव, स्नातकोत्तर को प्राथमिकता दी जाएगी।

Physical Education Teacher

(1) B.A with Physical Education as an Elective subject / 3 year Graduation Course in Physical Education and B.P.Ed (2) 4 years Integrated Course of Bachelor of Physical Education from a recognised University

(3) संबंधित विषय में 55% अंक और किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान में 3 वर्षों का अनुभव। पोस्ट ग्रेजुएट को प्राथमिकता दी जाएगी। (4) उम्मीदवार की आयु 20 वर्ष से कम नहीं और 40 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। असाधारण मामलों में आयु सीमा में छूट पर विचार किया जा सकता है। (5) केवल उन्हीं उम्मीदवारों की सलेक्शन पर ध्यान दिया जाएगा जो मरकज़ी कमेटी बराए भर्ती--कारकुनान की ओर से लिए जाने वाले मौखिक और लिखित साक्षात्कार में सफल होंगे और नूर अस्पताल की मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ होंगे। (6) चयन के मामले में, इच्छुक को क़ादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वंय करनी होगी। (7) साक्षात्कार के लिए क़ादियान को बुलाने के मामले में, परिवहन व्यय उम्मीदवार स्वयं उठाएगा। (8) साक्षात्कार की तारीख बाद में अधिसूचित की जाएगी। (9) मुद्रित सूचना फार्म दफ़्तर दीवान या निम्नलिखित पते / ईमेल द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। (10) आवेदन शैक्षणिक योग्यता और अनुभव की प्रामाणिकताएं (Self Attested) की हुई प्रतिलिपि यह घोषणा होने के दो महीनो के अंदर-अंदर नज़ारत दीवान पहुंच जानी चाहिए। (11) जीवन निर्वाह भत्ता एवं अन्य जानकारी के लिए कार्यालय समय में निम्नलिखित ई-मेल एवं फोन नंबरों पर संपर्क किया जा सकता है।

ड्राईवर पद की नियुक्ति के लिए सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की ओर से घोषणा

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी कम से कम आठवी पास हो। (3) उम्मीदवार के पास कम से कम दस वर्षों का वैध ड्राइविंग लाइसेंस और दस वर्षों का ड्राइविंग अनुभव होना चाहिए। ट्रेंड ड्राइवरों को प्राथमिकता दी जाएगी। (4) अभ्यर्थी चालक को द्वितीय श्रेणी के बराबर भत्ता एवं अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। (5) अभ्यर्थी को नूर हस्पताल से मेडिकल जांच कुरआन होगी । वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे। (7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) क़ादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा, ड्राइविंग टेस्ट और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516

मोबाइल : 09682627592, 09682587713,

दफ़्तर01872-501130 E-Mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

अंक 6, 08 फ़रवरी 2024 में प्रकाशित हुए ख़ुत्बे का शेष भाग

.. ज़बानें सीखने की ख़ुदादाद सलाहीयत थी और प्रतिभा हासिल थी। उर्दू पंजाबी तो मादरी भाषाएं थीं इसके अतिरिक्त तुर्की भाषा में भी आपने पी.एच.डी.की और ग़ैरमामूली महारत हासिल की। फिर इसी तरह इंग्लिश, अरबी, जर्मन और फ़ारसी भी बोल लेते थे। बल्कि कुछ जगह उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह की मजालिस में अरबी जानने वाला जब कोई नहीं था तो अरबी में अनुवाद भी किया। सरायकी भी बोल लेते थे। ख़ुत्बा के शुरू में ख़ुत्बा के फ़ौरन बाद अनुवाद किया करते थे और तुर्की के जो अहल-ए-ज़बान थे वे भी आपकी तुर्क भाषा और vocabulary की बड़ी तारीफ़ करते थे। तक़रीर-ओ-तहरीर का मलिका भी आपको बहुत अच्छा था। बहरहाल मरहूम बहुत सी ख़ूबियों के मालिक थे। हुक़ूक़ुल्लाह के साथ-साथ हुक़ूक़ुल-ईबाद भी कमाल हद तक बजा लाते थे। रिश्तेदार हों या ग़ैर रितेदार हूँ सबसे एक समान मुहब्बत करने वाले। बहुत से लोगों ने मुझे ख़त लिखे हैं। हमदरद और बे-तकल्लुफ़ वजूद थे। मुलाक़ात के बाद यादों के अनमिट नुक़ूश छोड़ जाते थे। अल्लाह पर पूर्ण विश्वास रखने वाले इन्सान थे। गरीबों, मसकीनो और काबिल-ए-इमदाद लोगों की ख़ामोशी से मदद करते थे। ख़िलाफ़त से बहुत प्यार और वालेहाना इशक़ रखते थे। सच्ची ख़्वाबें देखने वाले साहब-ए-रोया थे। अल्लाह का वर्णन बहुत ज़्यादा करने वाले थे। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनके बच्चों को, उनकी पत्नी को सबको सब्र और हौसला अता फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ आता फ़रमाए।

दूसरा वर्णन जो मैंने करना हैं जिनके जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

तीन जनाज़ा ग़ायब हैं जो मैं बाद में पढ़ाऊंगा। इन में पहला वर्णन मुहम्मद इब्राहीम भाम्बड़ी साहिब का है

यह पिछले दिनों एक सौ छः 106 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। काग़ज़ात में कई जगह से उनकी उम्र 106 साबित होती है कई जगह 109 - 106 वर्ष तो कम से कम उनकी उम्र बहरहाल थी। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे और ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ूज़ उनके पिता चौधरी अब्दुलकरीम साहिब के ज़रीया हुआ जिन्हों ने 19-1918 ई. में बैअत की सआदत हासिल की।

इब्राहीम भाम्बड़ी साहिब अपने पिता की बैअत का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि ख़ानदान में अहमदियत अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मेरे वालिद साहिब के ज़रीया आई। मेरे वालिद साहिब पहले अहल-ए-हदीस फ़िर्क़ा से जुड़े थे। 1918 ई. में उनकी नज़र काफ़ी कमज़ोर हो गई। मोतिया की बीमारी हो गई। ईलाज की ख़ातिर क़ादियान में नूर हस्पताल में आ गए। चूँकि मेरे वालिद मशहूर थे। जब लोगों को पता लगा कि चौधरी अब्दुलकरीम साहिब हस्पताल में दाख़िल हैं तो तीमार-दारी करने वाले लोग भी आने लगे। मास्टर आबदुर्रहमान साहिब महर सिंह और और दूसरे बुज़ुर्ग भी आते रहे और चौधरी साहिब की, उनकी ख़ातिर तवाज़ो भी करते रहे। और उन बुज़ुर्गों ने उन लोगों को तब्लीग़ भी शुरू कर दी। तो भाम्बड़ी साहिब लिखते हैं कि वालिद साहिब के ज़हन में अच्छी तरह यह मसला हल हो गया कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम फ़ौत हो गए हैं और दिल में बैठ गया कि ईसा अलैहिस्सलाम ज़िंदा नहीं हैं बल्कि वफ़ात याफ़ताह हैं। जब उनके दल ने यह यक़ीन कर लिया कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बिल्कुल बरहक़ हैं, सच्च हैं क्योंकि जब ईसा अलैहिस्सलाम फ़ौत हो गए तो फिर मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ज़माने की ज़रूरत थी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने का यही ज़माना था। अगर अब नहीं आना तो फिर कब आना है? उन्होंने क़ादियान में अपनी बीमारी के दौरान ही बैअत करली। जब वापस अपने गांव भाम्बड़ी आए और लोगों को मालूम हुआ कि उन्होंने अहमदियत क़बूल कर ली है तो लोगों ने आ के उनसे बड़ा अफ़सोस किया। उन्होंने कहा कि मियां अब्दुलकरीम साहिब अगर हमें मालूम होता कि आपने क़ादियान जा कर मिरज़ाई हो जाना है तो ख़ाह आप अंधे क्यों न हो जाते हम आपको क़ादियान न जाने देते। तो उनके पिता साहिब उसका उत्तर देते थे कि मेरी शरीरी दृष्टि के साथ रुहानी दृष्टि भी तेज़ हो गई है और कहते थे कि रुहानी दृष्टि जस्मानी दृष्टि से ज़्यादा ज़रूरी है। अल्लाह तआला का मैं शुक्र अदा नहीं

कर सकता कि अल्लाह तआला ने मुझे राह-ए-रास्त पर चलाया है और मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चे हैं। बहरहाल गांव के लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इतना द्वेष था, मौलवियों ने इतना ज़हर दिमाग़ों में पैदा किया हुआ था कि कहा करते थे कि अगर आप दावा करें मह्दी होने का तो हम आपको मह्दी मान लेंगे लेकिन मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद को नहीं मानेंगे। इस पर उनके वालिद साहिब कहा करते थे कि यही देख लो यही सदाक़त की निशानी है कि मैंने उनको मान लिया और बरहक़ समझ के माना इसलिए तुम लोग भी मान लो।

बहरहाल उनके वालिद साहिब ने भाम्बड़ी साहिब को और भाम्बड़ी साहिब के छोटे भाई को 1926 ई. में मदर्रसा अहमदिया क़ादियान में दाख़िल करवा दिया और पाँच मील का सफ़र रोज़ाना तै करके यह स्कूल पढ़ने के लिए आते थे। उनके वालिद साहिब 1931 ई. में फ़ौत हो गए तो उनके भाईयों ने कोशिश की और वालिदा को कहा कि इन दोनों भाईयों को (इब्राहीम भाम्बड़ी साहिब को और उनके छोटे भाई को) वहां क़ादियान न भेजा करें बहुत दूर जाना पड़ता है। क़रीब का स्कूल है यहां दाख़िल करवा देते हैं लेकिन वालिदा ने यही कहा कि मैं यह नहीं कर सकती। उनके वालिद साहिब ने जो मदर्रसा अहमदिया में दाख़िल करवाया है तो अब ये मदर्रसा अहमदिया में ही पढ़ेंगे। और इस तरह कहते हैं हम वहां क़ादियान जाते रहे। फिर क़ादियान मदर्रसा से सातवीं जमात पास कर के जामिआ अहमदिया में तालीम हासिल की। इस वक़्त सातवीं के बाद जामिआ में दाख़िल हुआ जाता था। फिर 1941 ई. में प्राईवेट तौर पर मैट्रिक का इमतेहान पास किया। 1939 ई. में मौलवी फ़ाज़िल का इमतेहान पास किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़सीदा पूरा उनको याद था। बहुत सारी नज़्में कलाम-ए-महमूद की, दुर्रे समीन की याद थीं। इक़्तेबासात बहुत सारे उनको याद थे और बड़े जल्दी ये हवाले दे दिया करते थे।

1939 ई. में पंजाब यूनीवर्सिटी से मौलवी फ़ाज़िल का इमतेहान पास करने के बाद उन्होंने ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी। जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया। दफ़्तरी काम सीखें। 1 जनवरी 1944 ई. में मदर्रसा अहमदिया में दीनियात और अरबी टीचर के तौर पर चयन हुआ। 1941 ई. से 1947 ई. तक जमाती ख़िदमात सरअंजाम दें 1941से 44 ई. तीन साल हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के पर्सनल सैक्रेटरी के तौर पर काम किया। फिर नज़ारत बैतुल माल में भी आपने काम किया क्योंकि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दफ़्तरी काम सीखने की तलक़ीन फ़रमाई थी। फिर 1947 ई. में तालीमुल् इस्लाम हाई स्कूल क़ादियान में बतौर उस्ताद चयन हुआ और पार्टीशन के बाद तालीमुल् इस्लाम हाई स्कूल रब्वाह में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। 1974 ई. तक ये ख़िदमात सरअंजाम देते रहे। 1974 ई. में यह स्कूल से रिटायर्ड हुए और फिर 1975 ई. से 1994 ई. वक़्फ़-ए-जदीद में बतौर इन्सपैक्टर वक़्फ़-ए-जदीद नाज़िम इरशाद का काम किया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद के साथ भी काम करते थे और उनके इरशाद पर मुख़्तलिफ़ जगहों के दौरे करते थे और मुआमलात निपटाते थे। मोअल्लेमीन को पढ़ाने का भी उन्होंने फ़रीज़ा अंजाम दिया। पच्चास साल से अधिक समय उनको सदर मुहल्ला दारुल नसर की ख़िदमत की भी तौफ़ीक़ मिली। इमामुस सलात थे तो तरावीह भी पढ़ाया करते थे। क़ुरआन-ए-करीम भी उनको काफ़ी भाग हिफ़्ज़ था।

उनकी एक बेटी कहती हैं कि रिश्तेदारों से आपका व्यवहार उदाहरण के योग्य था। जितने रिश्तेदार भी रब्वाह से बाहर मुक़ीम थे उनके बच्चों ने हमारे घर में रह कर तालीम हासिल की। आपकी तवील और बाबरकत फ़आल ज़िंदगी का राज़ सुबह सवेरे फ़ज्र पर उठना, अल्लाह का वर्णन कसरत से करना, पैदल चलना और साईकल पर स्कूल और दफ़्तर आना था। इंतेहाई सादा ख़ुराक लेते थे और हमेशा साबिर रहते थे। ख़ुलफ़ाए कराम से बे-इंतिहा और सच्ची मुहब्बत रखते थे। कहती हैं हम सब बच्चे बाहर थे। जब उनको कहते कि आप बाहर आ जाएं तो यह कहा करते थे कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पर मैंने रोज़ाना दुआ के लिए जाना होता है तो मैं अब बाहर नहीं आ सकता। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से भी उनको एक ख़ास मुहब्बत और लगाओ था। जब भी कोई आपके पास दुआ के लिए आता तो सबसे पहले कहते कि ख़लीफ़-ए-वक़्त को ख़त लिखो फिर दुआ करूँगा। फिर हाथ उठा कर उसके लिए दुआ भी किया करते थे और सोने से पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़सीदा या ऐन फ़ैज़िल लाहे वल् इरफ़ानी वाला पूरा क़सीदा, सब अशआर पूरे सोने से पहले पढ़ा करते थे।

फिर यह लिखती हैं कि मेरे अब्बा जान एक ख़ाब का अक्सर वर्णन किया करते थे जो उन के वालिद अर्थात उनके दादा ने, बेटी के दादा ने देखी थी कि इब्राहीम खजूर के दरख़्त के ऊपर चढ़ रहा है और वह डर रहे हैं कि मैं कहीं नीचे न गिर जाऊं लेकिन देखते ही देखते खजूर के दरख़्त के आख़िरी हिस्सा तक पहुंच जाता हूँ तो आप अर्थात मेरे वालिद साहिब इस ख़ाब की ताबीर अपनी लंबी आयु और इलम की लेते थे।

शेख़ मुबारक अहमद साहिब नाज़िर दीवान पाकिस्तान लिखते हैं कि मैं उनका शागिर्द भी रहा। फिर पाँच साल उनके साथ टीचर के तौर पे स्कूल में पढ़ाया भी। बोर्डिंग में भाम्बड़ी साहिब ट्यूटर के तौर पर काम करते थे। बड़ा लंबा अरसा उन्होंने काम किया है। बोर्डिंग के लड़कों के साथ अहमदी और ग़ैर अहमदी सब बच्चों के साथ प्यार और मुहब्बत और शफ़क़त का व्यवहार रवा रखते थे। हर लड़के की तबीयत और मिज़ाज के मुताबिक़ तर्बीयत का अलग-अलग तरीक़ा इख़्तेयार करते। लड़के भी आपसे बहुत जल्द प्रेम करने लग जाते और बाप ही की तरह इज़्ज़त और व्यवहार रखते थे। अक्सर वक़्त बोर्डिंग में गुज़ारते। नमाज़ की इमामत करवाते। सब लड़कों की नमाज़ में ख़ास निगरानी करते और बड़े प्यार और मुहब्बत करने वाले, शफ़क़त करने वाले थे।

मैं भी उनका शागिर्द रहा हूँ। और सख़्ती भी उन्होंने की मुझ पर बल्कि मैं जब नाज़िर आला था तो उनको उनकी सख़्ती याद किराया करता था तो हंस दिया करते थे लेकिन साथ हमदर्दी होती थी। इस्लाह की ग़रज़ होती थी।

सदारत के फ़रायज़ बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से अंजाम दिए और यह कहा करते थे कि मुझे इन सब घरों क पता है जिनमें कोई मर्द नहीं होता जहां औरतें अकेली रहती हैं। मर्द बाहर सफ़र पर गए होते हैं तो मैं बाज़ार जाते हुए इन घरों से संपर्क कर के आता हूँ ताकि शहर में कोई काम हो तो बता दें। और फिर एक थैला होता था, क़लम होती थी, काग़ज़ होता था इस पर लिख लेते थे कि क्या चीज़ें ला के दीनी हैं। फिर हर घर में उनका सौदा पहुंचा भी दिया करते थे। डाकखाना में ख़त पोस्ट कर देते अगर लिखने वाले होते। और अगर वहां से ख़त आए होते तो वे डाकखाना से ले आते और उनको घरों में पहुंचा देते। फिर अगर कोई कहता ख़त पढ़के सुना दें, कोई अनपढ़ होता तो उस को पढ़के सुना भी दिया करते थे। ज़बरदस्त अमीन थे कभी किसी की कोई बात किसी दूसरे से नहीं करते थे। सदर मुहल्ला होने की वजह से उनके पास कुछ मुआमलात बीवियां ले के आती थीं, खाविंदों की कमज़ोरियाँ वर्णन करती थीं तो आप खाविंदों को बग़ैर एहसास दिलाए अच्छा अवसर देख के नसीहत कर दिया करते थे और मुआमला सुलझा दिया करते थे। अल-ग़र्ज़ मुहल्ले के अफ़राद मर्द और औरतें और बच्चे उनको बाप की तरह मेहरबान पाते थे।

यह है असल तरीक़ा ओहदेदारों का कि किस तरह उनको लोगों से मिल-जुल के रहना चाहिए और उनकी इस्लाह की कोशिश करनी चाहिए।

और मुरब्बियान को भी नसीहत किया करते थे कि कुछ नज़्में भी याद करो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का शेअरी कलाम भी पढ़ो। इस में भी नसीहतें होती हैं और ख़ुद उन्होंने बताया कि मैं रोज़ाना क़सीदे पढ़ता हूँ और फिर सोता हूँ। अतः यह मुरब्बियान के लिए भी नसीहत है।

उनकी ज़िंदगी में उनकी एक बेटी को गांव से रब्वाह आते हुए शहीद कर दिया गया। बड़े सब्र और सुकून से उन्होंने इस सदमा को बर्दाश्त किया। फिर एक दूसरी बेटी लंदन में फ़ौत हो गईं। उस वक़्त ये बीमार भी थे जनाज़ा रब्वाह लाया गया। उस वक़्त भी बड़े हौसले से इस सदमा को बर्दाश्त किया बल्कि दूसरों को भी सब्र की तलक़ीन करते थे। बहरहाल उन्होंने हर अंदाज़ से एक कामयाब ज़िंदगी गुज़ारी और लंबी ज़िंदगी गुज़ारी और अक्सर कहा करते थे कि दूसरा जहान इस जहान से बहुत ख़ूबसूरत है। अल्लाह तआला

उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफीक दे।

मैंने अगला जनाज़ा जिसका पढ़ाना है वह हैं यूसुफ़ जारे साहिब घाना के रहने वाले हैं। उनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

अमीर मिशनरी इंचार्ज घाना लिखते हैं। मरहूम मूसी थे। मुख़्लिस अहमदी दोस्त थे। मुख़्तलिफ़ ओहदों पर फ़ायज़ रहे और भरपूर जमाती ख़िदमात की तौफ़ीक़ पाई। वफ़ात के वक़्त दो अहमदिया सीनियर हाई स्कूलों के चेयरमैन बोर्ड के तौर पर भी ख़िदमत सरअंजाम दे रहे थे। तालीम के विभाग से जुड़े थे। रिटायरमैंट से क़बल पोर्टसन और फिर कमासी के अहमदिया सीनीयर स्कूलों के हैड मास्टर के तौर पर ख़िदमत अंजाम देते रहे। यूसुफ़ साहिब ने बतौर सदर मजलिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया घाना भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह के 1988 ई. के दौरे के दौरान आप बतौर सदर मजलिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया ख़िदमत सरअंजाम दे रहे थे और सैक्योरिटी के सिल्सिला में बहुत ख़िदमत की। मरहूम तालीम के शोबा के साथ मुंसलिक थे और अहमदी नौजवानों की तालीम के बारे में हमेशा व्यस्त रहते थे। उनके एक पोते उस वक़्त मुरब्बी सिल्सिला हैं और ख़िदमात सरअंजाम दे रहे हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए।

अगला वर्णन अल्हाज उस्मान बिन आदम साहिब घान का है। यह भी इक्यासी वर्ष की उम्र में पिछले दिनों वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बारे में अमीर मिशनरी इंचार्ज लिखते हैं। वसीयत के निज़ाम से मुंसलिक थे। निहायत मुख़्लिस अहमदी थे। नमाज़ों के पाबंद चंदों की अदायगी में बाक़ायदा, जमाअती कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने वाले, ख़िलाफ़त के सच्चे वफ़ादार और यही जज़्बा उन्होंने अपनी औलाद में पैदा करने की कोशिश की। अपने बच्चों की दीनी और दुनियावी तालीम पर ख़ूब तवज्जा दिया करते थे। क़ुरआन-ए-करीम के फान्टी ज़बान के अनुवाद में भी उनका बड़ा किरदार है। उनकी बेगम का कहना है कि मरहूम इंतेहाई तहम्मुल मिज़ाज और मुहब्बत करनेवाले इन्सान थे। 2012 ई. में अल्लाह के फ़ज़ल से हज की सआदत पाई। जमाअत के बहुत से अफ़राद को उन्होंने क़ुरआन पढ़ाया। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 24 में प्रकाशित भविष्यवाणी के मूल शब्दों का अनुवाद

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीहे मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम "मुस्लेह मौऊद" (अर्थात् दूसरे ख़लीफ़ा एवं सपुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब) के बारे में अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी (महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी) का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर है जल्ला शानोहू व अ़ज्ज़ इस्मुहू - जिसकी शान प्रतापी है और उसका नाम इज्ज़त वाला है। मुझको अपने इल्हाम (वाणी) से संबोधित करके फ़र्माया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनाओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र (होशियारपुर और लुधियाना) को तेरे लिए मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान दिया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की चाबी तुझे मिलती है। हे मुज़फ़्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वह जो क़बरों में दबे पड़े हैं बाहर आएं और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाए। अत: लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाए। अत: तुझे ख़ुशख़बरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुक़द्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़्मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़्स अर्थात् (मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात् एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जाएगा। वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके अर्थ समझ में नहीं आए) दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दौशम्बह (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक श्रेष्ठ सुपुत्र)।

مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ۔ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَالْعَلَاءِ كَاَنَّ اللهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ

मज़्हरुल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् हक़्क़े वल् अलाऐ कअन्नल्लाह नज़्ज़ल मिनस्समाइ

अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर। जिसको ख़ुदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी आत्मा डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (ग़ुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत(प्रसिद्ध) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़्सी नुक़्ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा।

व काना अम्रम् मक़्ज़िय्या

और यह काम पूरा होकर रहने वाला है।

(विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886, पृ. 3)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 15-22 february 2023 Issue No. 7-8

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

मुसलेह मौऊद के विषय में भविष्यवाणी

हज़रत मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

ख़ुदा-ए-रहीम व क़रीम(وَاِعْلَامِهٖ عَزَّوَجَلَّ)व ऐलामेही अज़्ज़ा-व-जल (بِاِلْهَامِ اللّٰهِ تعالیٰ) ब-इल्हामेही तआला मुझ को अपने इल्हाम से(جَلَّ شَانُهٗ وَعَزَّ اِسْمُهٗ)बुज़ुर्ग व बरतर ने जो हर चीज़ पर कादिर है जल्ला शानोहू व अज्ज़ा इसमोहु सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा अतः मैंने तेरी ज़रूरियात को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से बापाया ए कुबलियत जगह दी और तेरे सफ़र को जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है, तेरे लिए मुबारक कर दिया। सो कुदरत और रहमत और कुरबत का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़्ल और एहसान का निशान तुझे अता होता है और फ़तह और ज़फ़्फ़र की कलीद तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ़्फ़र तुझ पर सलाम ख़ुदा ने यह कहा ता वे जो जिन्दगी के खवाहां हैं मौत के पंजा से निजात पावें और जो कबरों में दबे पड़े हैं बाहर आवें और ता दीन-ए-इसलाम का शरफ़ और कलामुल्लाह का मरतबा लोगों पर ज़ाहिर हो और ता हक अपनी तमाम बरकता के साथ आ जाए और बातिल अपनी तमाम नहूँसतों के साथ भाग जाए।

और ता लोग समझे कि मैं कादिर हूँ जो चाहता हूँ करता हूँ और ता वे यकीन लाएँ कि मैं तेरे साथ हूँ और ता उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर इमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के दीन और उसकी किताब और उसके पाक रसूल मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इंकार और तकज़ीब की निगाह से देखते हैं एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह ज़ाहिर हो जाएं ।

सो तुझे बशारत हो कि एक वजीह और पाक लड़का तुझे दिया जाऐगा एक ज़क्की गुलाम (लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरी ही तुखम से तेरी ही ज़ुर्रियत व नसल होगा। खूबसूरत पाक लड़का तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन-मवाईल और बशीर भी है उसको मुक़द्दस रूह दी गई है और वह रिजस से पाक है वह नूरुल्लाह है। मुबारक वह जो आसमान से आता है उसके साथ फज़्ल है जो उसके आने के साथ आऐगा वह साहिबे शकूह और अज़्मत और दोलत होगा।

वह दुनिया में आऐगा और अपने मसीही नफ्स और रूहुल हक की बरकत से बहुतों को बिमारियों से साफ करेगा वह कलामतुल्लाह है क्योंकि ख़ुदा की रहमत व ग़य्यूरी ने उसे अपने कलेमा तमजीद से भेजा है। वह सखत ज़हीनो फ़हीम होगा और दिल का हलीम और उलूमे-ए-ज़ाहिरी वा बातनी से पुर किया जऐगा। और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके मायने समझ में नहीं आए) दो शंम्बा है मुबारक दो शंम्बा फ़रज़न्द दिलबन्द गिरामी अरज़ुमंद (مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ۔ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَالْعَلَاءِ/ كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ) मज़हरुल अव्वलि वल आखिरि मज़हरुल हक़्क़ वल अलाए का अन्नल्लाहा नज़ा-ला मिनस्समाए। जिसका नज़ूल बहुत मुबारक और जलाले इलाही के ज़हूर का मोजिब होगा। नूर आता है नूर जिसको ख़ुदा ने अपनी रज़ामन्दी के इतर से मम्सूह किया। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और असीरों की रुस्तगारी का मोजिब होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा। और क़ौमें उससे बरकत पाएंगी तब अपने नफ्सी-नुक़ता आसमान की तरफ उठाया जाऐगा। "वा काना अमरन मकज़िय्या" (وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا)

(मजमुआ इश्तेहारात भाग प्रथम पृष्ठ 100 विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886)

★ ★ ★

भविष्यवाणी के मूल शब्द हिन्दी लिपि में ऊपर दिए गए हैं इस काअनुवाद पृष्ठ 23 पर देखें

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad